वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1993-94

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची

संकल्पना 3
न्यास का निर्माण 4
संगठन 4
कार्यकलाप 6

कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 12
कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 19
कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 21
कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन 23

कला कोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 26
कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 27
कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 32
कार्यक्रम घ : कलाविश्वकोश और कलाओं का इतिहास 33

जनपद सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 36
कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ 36
कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 37
कार्यक्रम घ : बाल जगत 41

कला दर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 48
कार्यक्रम ख : संगोष्ठियाँ और प्रदर्शनियाँ 48
कार्यक्रम ग : स्मारक व्याख्यान 50
कार्यक्रम घ : वार्ताएँ एवं व्याख्यान 51

सूत्रधार

क : कार्मिक 51
ख आपूर्ति एवं सेवाएं 51
ग : शाखा कार्यालय 51
घ . वित्त एवं लेखे 51
ङ : आवास 52
च शोधवृत्ति योजना 52
छ राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन 53
ज : अंतर्राष्ट्रीय संवाद 54

भवन परियोजना 57

अनुबन्ध

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य 58
2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य 60
3 अधिकारियों की सूची 61
4 विभिन्न अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची 63
5 वर्ष 1993 94 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं 64
6 वर्ष 1993 94 के दौरान हुई प्रदर्शनियां 65
7. मार्च, 1994 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची 66
8 फिल्म/वीडियो प्रस्तुतियों की सूची 83
9. अप्रैल, 1993 से 31 मार्च, 1994 तक हुई घटनाओं की तालिका 86
10. विभिन्न सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गये अधिकारियों का ब्यौरा 91
11. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की आंचलिक सांस्कृतिक परिसंघ द्वारा वर्ष 1993-94 के दौरान भाग लिए गए सम्मेलनों/संगोष्ठियों की सूची 92

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति मे स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप मे की गई है जिसमे सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति मे, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्माण्ड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय मे यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप मे उनके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) मे समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा मे सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहाँ कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप मे देखा गया है जिसमे शामिल है - लिखित तथा मौखिक रूप मे उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र कला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसे दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों मे संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली मे उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ मे केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य मे केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप मे कार्य करना,
2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रन्थों, ग्रन्थावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ मे लेना ,
3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना ,
4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परम्पराएं तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र मे तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध करना ,
5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सम्बंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अवसर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति जिसमे परम्परागत कला कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उपस्थित हो जाता है ,

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना ;
7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना ;
8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना ;
9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान करने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के बीच अन्यो-न्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ० 16 7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् रूप से गठित व पंजीकृत किया गया था।

प्रारम्भ में एक 7-सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था। बाद में भारत सरकार की अधिसूचनाओं के द्वारा न्यासी मंडल में नए सदस्य जोड़े गए।

वर्ष 1993-94 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासियों की सूची अनुबंध-1 पर दी गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति भारत सरकार द्वारा गठित की गई थी उसके सदस्यों की सूची अनुबन्ध-2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कला निधि में (क) मानविकी, विषय तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सबल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और क्षेत्र अध्ययन की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कला केन्द्र प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरम्भ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा तुलनात्मक तकनीकी शब्दों का संग्रह और अनिवार्यतः शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत पाठों की शृंखला (कलामूलशास्त्र),

(ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कलासमालोचन) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित है।

इन्दिरा गांधी जनपद सम्पदा प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिये प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा, (घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

सूत्रधार अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कला निधि तथा कला कोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (भाष्य) के स्तर पर करेंगे। जनपद सम्पदा और कला दर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्य तथा जीवन शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल 1993 से मार्च 1994 तक

कार्यकलाप

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए, वर्ष 1993-94 सर्वतोमुखी प्रगति तथा विकास का वर्ष रहा। अपनी कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री पी०वी० नरसिंहराव के सर्वोपरि मार्गदर्शन में केन्द्र ने अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में बहुत तेजी से प्रगति की, जिसके लिए वह कलाओं के एक प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में सेवाएं प्रदान करता रहा : कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में अध्ययन तथा अनुसंधान, शब्दावली निर्माण, रिपोर्टों, ग्रन्थों, संगोष्ठी पत्रों आदि के प्रकाशन के समेकित कार्यक्रम सम्पन्न करता रहा, और मंचीय प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं (स्थापत्य तथा साहित्य से लेकर संगीत, मूर्तिकला चित्रकला, लोक-परम्परा, छायांकन/फोटोग्राफी, फिल्म, कुम्हारी/मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, पुतलिकला, बुनाई तथा कशीदाकारी तक के विषयों पर) तथा व्याख्यान मालाओं के जरिए सर्जनात्मक तथा समालोचनात्मक संवाद के लिए मंच की व्यवस्था करता रहा।

एक अग्रणी संसाधन केन्द्र के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने व्याख्यानों, प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों के माध्यम से जन-साधारण तथा विद्वद्वर्गीय स्तरों पर ज्ञान के प्रसार में योगदान दिया। केन्द्र ने भारत में तथा विदेशों में भी अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों से सम्पर्क स्थापित किए और संयुक्त अनुसंधान, पारस्परिक समर्थन तथा रचनात्मक सहयोग के अनेक कार्यक्रम प्रवृत्त किए। उसने पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में, स्लाइडों तथा फोटोग्राफों के अपने संग्रह को बढ़ाने का तथा कुछ कला वस्तुओं तथा विभिन्न विषयों पर पुस्तकों को एकत्र करने का काम चालू रखा। केन्द्र का पुस्तकालय विख्यात संग्रहकर्ताओं के उदार योगदान से ही नहीं बल्कि अनेक देशों से प्राप्त उपहार आदि से भी समृद्ध हुआ। केन्द्र ने एक बड़ा अभिलेखागारीय संग्रह भी स्थापित किया है जिसका उद्देश्य विविध कलारूपों से संबंधित मौलिक तथा अनुलिपिक सामग्री का महत्वपूर्ण भण्डार स्थापित करना है। प्रतिष्ठापूर्ण संग्रह प्राप्त करने के अलावा, केन्द्र ने भारत की बहुमूल्य कला परम्पराओं के मौलिक प्रलेखन के द्वारा अपने अभिलेखागारीय संसाधनों में भी वृद्धि की है।

दक्षिण-पूर्व एशियाई, पूर्व एशियाई तथा स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन कार्यक्रमों के अन्तर्गत, एकक अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्रों में कार्यरत रहे और उन्होंने सुसंगत संदर्भ सामग्रियों के संग्रह कार्य में भी योगदान दिया।

भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू० एन० डी० पी०) के बीच हुए एक समझौते के फलस्वरूप, सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए एक राष्ट्रीय सुविधा स्थापित करने की परियोजना बनाई गई है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा विभिन्न माध्यमों में बिखरे हुए सांस्कृतिक संसाधनों के खण्डों को जोड़कर पुनर्निर्माण के लिए भारत में यह अपनी तरह का पहला प्रयास होगा। इस योजना के अन्तर्गत, जीरोक्स कारपोरेशन, पालो आल्टो अनुसंधान केन्द्र, कैलिफोर्निया की सहायता से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में "गीतगोविन्द" नामक एक महत्वाकांक्षी परियोजना प्रारम्भ की है, जिसका उद्देश्य ग्रन्थों तथा उनके मुख्य विषयों का बहु आयामी अध्ययन प्रारम्भ करना और उनकी कला, कर्मकाण्ड, संगीत तथा नृत्य से संबंधित विषयवस्तु को प्रस्तुत करना है। इस इलेक्ट्रॉनिक जिल्द में एक समालोचनात्मक तथा रचनात्मक संवाद को समावेश होगा जिससे भाषाशास्त्र, दर्शन, मान्यताओं तथा कलाओं के विभिन्न विषयों के बीच की खाई पाटी जा सकेगी। इस योजना के फलस्वरूप विकसित "गीतगोविन्द" संदर्भ से बाहर भी कलाओं तथा विज्ञानों में उपयोग की दृष्टि से मूल्यवान होगा।

शब्दकोशों के संबंध में अनुसंधान तथा प्रकाशन, ग्रन्थों तथा विशेष रूप से डॉ० ए० के० कुमारस्वामी जैसे विख्यात कला इतिहासकारों की समालोचनात्मक कृतियों के अनुवाद तथा सम्पादन के संबंध में लम्बे चलने वाले कार्यक्रम वर्ष के दौरान चलते रहे। कलासंबंधी विषयक कृतियों के प्रकाशन के लिए विख्यात विद्वानों तथा

पारम्परिक पण्डितों के साथ संवाद तथा कार्यशालाएं बराबर चलती रहीं जिनका उद्देश्य यह निश्चित करना था कि मूल पाठ/ग्रंथ के लिए कैसी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाए और सुसंगत संदर्भ इकट्ठे करने के अलावा, कैसा विधि-तंत्र तथा ग्रंथाकार (फॉरमैट) अपनाया जाए। इसके फलस्वरूप विद्वानों के परामर्श से लगभग 250 मूलभूत संकल्पनाओं की सूची तैयार की गई। पंचमहाभूतों के मूल विषय पर तीसरे खण्ड का कार्य प्रगति पर है; कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्तर्गत, निम्नलिखित दो पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं :

1. *कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश*
2. *बृहद्देशी* खण्ड-2

दो अन्य ग्रन्थों अर्थात् (1) स्वायंभुवसूत्रसंग्रह (2) काण्वशतपथब्राह्मणम् खण्ड-1 के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। आलोच्य अवधि के दौरान सचित्र पोस्टकार्डों के निम्नलिखित तीन सेट प्रकाशित किए गए

1. राजा लाला दीनदयाल
2. भीमबेटका की शैलकला
3. भारत की सुरम्य यात्रा

संगोष्ठियां

आलोच्य वर्ष के दौरान, केन्द्र द्वारा चार उल्लेखनीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां और तीन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गईं: केन्द्र ने 19-23 अप्रैल, 1993 को "सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध" विषय पर एक संगोष्ठी को आतिथ्य प्रदान किया, 3-5 जून, 1993 को "कलाओं में सर्वसामान्य क्या है" विषय पर, 23-26 अगस्त, 1993 को "मन का भविष्य : भविष्य का मन" विषय पर, 12 अक्तूबर, 1993 को मद्रास में "बृहदीश्वर" विषय पर, 4-7 जनवरी, 1994 को "ब्रज की संतत संस्कृति" विषय पर; 21-25 फरवरी, 1994 को "गुथर दीत्ज-सॉन्थीमर स्मारक परिचर्चा" और 29 नवम्बर से 7 दिसम्बर, 1993 तक "शैल कला" पर संगोष्ठी आयोजित की गई।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां

1. सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध

सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध विषय पर यूनेस्को के तत्वावधान में विशेषज्ञों की एक बैठक हुई। भारत तथा विदेशों के चौबीस प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया, बैठक में चर्चा का विषय था "विज्ञान का संबंध चेतना और पहचान, विकास की विचारधारा, विकास प्रक्रिया का निर्धारण, विकास के अन्तर्जात प्रतिमान (मॉडल)" यूनेस्को के प्रतिनिधि डॉ० फ्रांसिस चाइल्ड ने उद्घाटन सत्र में "विश्व सांस्कृतिक विकास दशक" की योजना पर प्रकाश डाला। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू० एन० डी० पी०) के निवासी समन्वयकर्ता डॉ० एलिंग दिसाऊ ने समापन सत्र में अभिभाषण दिया। बैठक में भावी कार्य योजना के संबंध में अनेक सिफारिशें की गईं।

2. मन का भविष्य : भविष्य का मन

यह परिचर्चा भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच द्विपक्षीय कार्यक्रम के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् और भारत-संयुक्त राज्य उप-आयोग द्वारा संयुक्त रूप से "सूचना 2000+1" परियोजना के अन्तर्गत आयोजित की गई। तान्त्रिक विज्ञान, जीव-भौतिकी, कृत्रिम बुद्धि, मनोविज्ञान, दर्शन तथा कलाओं के क्षेत्रों के विख्यात विशेषज्ञों ने मस्तिष्क, मन एवं चेतना के पारस्परिक संबंध, स्मृति की समस्याएं, मस्तिष्क तथा कृत्रिम बुद्धि, मन की प्रकृति, ज्ञान तथा स्वसंज्ञान के पक्ष ऐसे विषयों पर चर्चा की।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपनी किस्म का एक मात्र निराला संस्थान समझा जाता है जो ज्ञान-विज्ञान की विशिष्ट शाखाओं के बीच खड़ी दीवारों को तोड़ने और भौतिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों और मानवीय विषयों तथा अध्यात्म/तत्वमीमांसा के बीच संचार सेतु बनाने के लिए प्रयत्नशील है। यह संगोष्ठी विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका तथा भारत के उत्कृष्ट कोटि के उन विद्वानों ने गंभीर विचार-विमर्श में भाग लिया था जो चिन्तन, मनन तथा निदिध्यासन द्वारा ज्ञान के ओर-छोर का पता लगा रहे हैं। ऐसे विचार-विमर्श का, निस्संदेह, मानव-जाति पर दूरगामी प्रभाव होगा।

3. प्रागैतिहासिक शैल कला

शैल कला पर एक भूमंडलीय विशेषज्ञ सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित किया गया, इसमें अनेक देशों में शैल-कला विशेषज्ञों ने भाग लिया, जिनमें अर्जेन्टीना के डॉ० कार्लोस जे० ग्रेडिन, फ्रांस के डॉ० जीन क्लौड गार्डिन तथा प्रागैतिहासज्ञ श्री पॉल बाहन सम्मिलित थे। यह भारत में अपनी किस्म का प्रथम सम्मेलन था जिसमें एक साथ प्रागैतिहासज्ञों, पुरातत्वज्ञों, कला - इतिहासज्ञों तथा मानव वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसका आधारभूत अभिभाषण श्री बी० के० थापर ने दिया।

इस सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए शोध-पत्र एक पुस्तक के आकार में प्रकाशित किए जाएंगे। यूनेस्को ने अपनी आर्थिक सहायता से सम्मेलन को सुसाध्य बनाया।

4. ब्रज की सतत सृजना

ब्रज की सतत सर्जना विषय पर श्री चैतन्य प्रेम संस्थान द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से वृन्दावन में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भारत तथा विदेशों के 33 विद्वानों ने भाग लिया जिन्होंने ब्रज के सम्पूर्ण विषय प्रपंच पर उसे इन चार भागों में बांटकर विचार-विमर्श किया : "ब्रज का मूलाधार: शास्त्रीय सर्जना; ब्रज जयपुर तथा मणिपुर के वैष्णव अखाड़ों में ; अयोध्या की कल्पना, अयोध्या तथा राम का ब्रज"। संगोष्ठी में यह निर्णय किया गया कि ब्रज के सम्पूर्ण सांगोपांग परिदृश्य का आकलन करने के लिए कुछ और बैठकें तथा विचार-विमर्श आवश्यक हैं। सर्वप्रथम, स्वच्छता तथा प्राकृतिक परिस्थितियों पर बल देते हुए ब्रज का पर्यावरण सुधारा जाना चाहिए। ब्रज संस्कृति पर कार्यरत संस्थाओं तथा व्यक्तियों की सूची बनाई जाए और साथ ही ब्रज विषयक डेटा बैंक तथा विश्वकोश तैयार किया जाए।

राष्ट्रीय संगोष्ठियां

1. कलाओं में सर्वसामान्य क्या है?

संगोष्ठी ने कलाओं से संबंधित आधारभूत बिन्दुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और कला में रचनाधर्मिता, आत्माभिव्यक्ति, कार्य, प्रदर्शन तथा प्रतिक्रिया से लेकर कला की विभिन्न शैलियों के बीच परस्पर संबंध तक के विभिन्न विषयों पर व्यापक रूप से विचार किया। संगोष्ठी में 35 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख रूप से डॉ० राजा रामन्ना, डॉ० मुल्कराज आनन्द, श्री सी० डी० नरसिम्हैया, सुश्री० पद्मा स्वामिनाथन, डॉ० एस० सी० मलिक, श्री आर० के० लक्ष्मण जैसे विभिन्न कला विधाओं में संलग्न व्यावसायिक एवं सैद्धान्तिक कलाविद थे। संगोष्ठी बीच-बीच में संगीत सामूहिक धुनों तथा नृत्य तथा संगीत के कार्यक्रमों से जीवन्त एवं रोचक बनी रही। यह मैसूर में हुई और इसका प्रायोजन संयुक्त रूप से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा मैसूर की "ध्वन्यालोक" संस्था ने किया।

2. बृहदीश्वर विषयक संगोष्ठी

"बृहदीश्वर" विषय पर एक संगोष्ठी मद्रास में हुई। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और डॉ० एस० गोपाल ने इसकी अध्यक्षता की।

समिति में लगभग 25 विद्वानों ने भाग लिया जो ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, उनमें पुरातत्वज्ञ, पुरालेखशास्त्री, कला इतिहासज्ञ, जातीय संगीतज्ञ तथा नाटक सम्मिलित थे। डॉ० कपिला वात्स्यायन, डॉ० चम्पक लक्ष्मी, डॉ० आर० शिलन्दे, डॉ० नागस्वामी, डॉ० के० पी० रमेश तथा श्री एस० पी० इलनगोवन (फ्रेंच सरकार के) जैसे प्रख्यात विद्वानों ने इसमें भाग लिया।

यह समिति विश्व धरोहर मंदिर के, इन्दौर गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा किए जा रहे उस व्यापक अध्ययन का एक भाग थी, जिसका उद्देश्य मंदिर से सम्बद्ध धर्म, दर्शन, इतिहास, तात्त्विक पद्धतियां, स्थापत्य, पुरालेख, कला तथा साहित्य, नृत्य एवं संगीत सहित उन सभी के जीवन्त परम्परा से उसे सम्बद्ध करना है।

3. मुथर डैल सॉन्टीमर स्मारक परिषद्

इन्दौर गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मुथर डैल सॉन्टीमर अन्तर्राष्ट्रीय एसोसिएशन तथा जर्मनी के हीडलबर्ग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया संस्थान के सहयोग से डॉ० डी० सॉन्टीमर (1934-1992) की याद में एक परिषद् (सिम्पोजियम, आदि) की।

पहले कुछ वर्ष हुए - [illegible] और अन्य विद्वानों ने सॉन्टीमर स्मृति-व्याख्यान कार्यक्रम के धनी थे जिनका मत भारतीय परम्परा में महाकाव्य [illegible] था। उनमें भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा का लोक धर्म तथा संस्कृति के प्रति एक अनुभव के साथ [illegible] करने की अद्भुत क्षमता थी।

इस अवसर पर का मुख्य योगदान यह रहा कि उसने डॉ० सॉन्टीमर द्वारा बनाये गये पांच अध्ययनों और उनकी प्रस्तावना का प्रकाशन [illegible] किया गया। इस अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में भाग लेने वाले प्रमुख विद्वानों ने विशेष रूप से उल्लेखनीय थे: प्रो० [illegible] हीडलबर्ग विश्वविद्यालय के जोशेफ एशिया संस्थान के [illegible] लौशर [illegible], पुणे की सॉन्टीमर अन्तर्राष्ट्रीय एसोसिएशन के श्री जोसेफ पीटर, डॉ० एम० कुलके, डॉ० डी० एम० मैकलीश, डॉ० एस० सी० मोजेज, प्रो० [illegible] तथा [illegible] कुलके एवं डॉ० कपिला वात्स्यायन।

प्रदर्शनियां

इन्दौर गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्पर्कों पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से दृश्य-श्रव्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अनेक दिवसों तथा पखवाड़ों के विशेषज्ञ कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 1993-94 में निम्न प्रदर्शनियां लगाई गईं: (1) "बुंदेलखण्ड की कृषि में शिल्प", (2) "[illegible] के माध्यम से भारत [illegible] प्रोजेक्ट करते हुए देखते हैं", (3) "[illegible] की धरोहर", (4) "[illegible] से अन्य [illegible] पुरोहितों पर एक प्रदर्शनी", (5) "[illegible] भारत तथा मूरोप की कला में प्रतीक [illegible]", (6) "[illegible] छाया पुतलियों की प्रदर्शनी"। इन प्रदर्शनियों का संक्षेप नीचे दिया गया है:

1. "बुंदेलखण्ड प्रदर्शनी" नई दिल्ली के कला भवन सभागार में आयोजित की गई। इसमें सभी अवस्थाओं तथा पारम्परिक स्कूलों से बनाये हुए चित्र तथा कलाकृतियां प्रदर्शित किए गए।
2. "जेनरी कार्टियर ब्रेसन्स द्वारा लिए गए छायाचित्रों की प्रदर्शनी" छायाचित्रों के माध्यम से 6 से 31 जुलाई, 1993 तक राष्ट्रीय प्रदर्शनी कला केन्द्र (नवरत्न टेंट, अन्य परामर्शी आदि) कक्ष में लगाई गई। दर्शकों तथा स्थानीय प्रेस ने इस प्रदर्शनी की खूब प्रशंसा की।
3. इन्दौर गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राजा रवि वर्मा के बारे में प्रदर्शनियों की एक श्रृंखला लगाने की योजना बनाई थी। राजा रवि वर्मा एक महान् [illegible] थे, जिनमें [illegible] की अद्भुत क्षमता थी। वे एक महान् [illegible] भी थे। [illegible] उनके समय में जो कुछ भी [illegible] प्रदर्शनियों में [illegible] [illegible] ऐसी

पहली प्रदर्शनी का उद्घाटन 5 अक्तूबर, 1993 को श्री एच० वाई० शारदा प्रसाद द्वारा किया गया। प्रदर्शनी का शीर्षक था : "राजा दीन दयाल की धरोहर : छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी"। इसे तीन अनुभागों में लगाया गया था जिनमें भिन्न-भिन्न प्रदेशों, उनके निवासियों तथा उनके लोकाचार के बारे में प्रमुख बातें बताई गई थीं। बीच का अनुभाग स्वयं छायाकार को अर्पित था। बाद में यह प्रदर्शनी मध्य प्रदेश सरकार के आमंत्रण पर भोपाल में भी लगाई गई।

4. "अवनि से अनन्त तक" प्रदर्शनी मद्रास में 12 से 20 अक्तूबर, 1993 तक लगाई गई। यह 11 वीं शताब्दी के विशाल चोल मंदिर बृहदीश्वर संबंधी बहु-विषयक परियोजना का परिणाम थी। इस प्रदर्शनी में चोल कला तथा स्थापत्य की उत्कृष्टतम उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। इस प्रदर्शनी का सर्वत्र स्वागत हुआ और बृहदीश्वर मंदिर के स्थापत्य कलात्मक मानचित्रों तथा प्रतिमाओं एवं चित्रकारियों के बारे में किए गए प्रलेखन कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की एक-स्वर से प्रशंसा की गई।

5. "मृग : भारत तथा यूरोप की कला में प्रारंभिक चित्रण" विषयक प्रदर्शनी इतालवी विद्वान प्रोफेसर एंजेलो फोसाती के सहयोग से 7 दिसम्बर, 1993 से 8 जनवरी, 1994 तक लगाई गई। प्रो० एंजेलो ने यूरोप की प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युग की कला में मृग के प्रारंभिक चित्रों को प्रदर्शित किया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने *डीयर इन रॉक आर्ट आफ इंडिया एण्ड यूरोप* नामक पुस्तक का भी विमोचन किया। प्रो० एंजेलो फोसाती और डॉ० यशोधर मठपाल इस पुस्तक के संयुक्त रचयिता हैं।

6. छाया पुतलिकला की विश्वव्यापी परम्परा की एक झलक दिखाने के लिए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने पेरिस के मुसी ब्लॉक के सहयोग से 2 फरवरी, 1994 को केन्द्र के माटीघर में "छाया पुतुल" नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें दक्षिण-पूर्व एशियाई तथा अन्य देशों, अर्थात् इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, कम्बोडिया, चीन, ग्रीस तथा तुर्की की छाया पुतलियां प्रदर्शित की गईं। इन पुतलियों के अलावा, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल तथा उड़ीसा की भारतीय छाया पुतलियां भी दिखाई गईं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इस कला को संचार का सशक्त माध्यम मानते हुए इसके समग्र रूप को जानने के लिए प्रयत्नशील है और इस पारम्परिक कला शैली को पुनरुज्जीवित करके इसे जीवन्त रूप में आगे आने वाली पीढ़ियों को सौंपने के प्रयत्न में संलग्न है।

पुतलिकला पर कार्यशालाएं

बाल भवन सोसाइटी के सहयोग से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने मई, 1993 में बच्चों द्वारा बनाई गई पुतलियों पर एक कार्यशाला आयोजित की। बच्चों द्वारा बनाई गई इन पुतलियों का कार्यशाला के अन्तिम दिन आयोजित एक कार्यक्रम में उपयोग किया गया, जिसके लिए आलेख (स्क्रिप्ट) भी बच्चों ने ही तैयार किया था।

पुतलियों के खेल

गांधी जयन्ती के अवसर पर, श्री वाली पुदुमजी और उनकी मण्डली द्वारा नई दिल्ली में पुतलियों के खेल के पांच कार्यक्रम आयोजित किए गए- 2 अक्तूबर, 1993 को तीस जनवरी मार्ग पर गांधी स्मृति तथा गांधी दर्शन समिति में, 5 अक्तूबर को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में, 6 व 9 अक्तूबर को मदर्स इंटरनेशनल स्कूल में और 7 अक्तूबर को मॉडर्न स्कूल में। 2500 से भी अधिक बच्चों ने इन कार्यक्रमों को देखा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में 23 मार्च, 1994 को एक विलक्षण कार्यक्रम हुआ। यह था- संस्कृत तथा ब्रज भाषा साहित्य में उपलब्ध प्रसिद्ध "भ्रमरगीत" प्रसंग पर आधारित, कत्थक शैली में एक नृत्य गायन का प्रस्तुतीकरण। इस कार्यक्रम का निर्माण तथा निर्देशन दारुणाली की आगन्तुक संगीत सलाहकार डॉ० प्रेमलता शर्मा ने किया था।

व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने विभिन्न विषयों पर अनेक व्याख्यान आयोजित किए जिनमें उन विख्यात भारतीय विद्वानों की यादगार में आयोजित स्मारक भाषण भी शामिल है, जिन्होंने साहित्य, कला, मानवविज्ञान तथा भाषाविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित स्मारक भाषण आयोजित किए गए :

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी एक विलक्षण प्रतिभा के धनी, बहुपठित मनीषी होने के साथ-साथ एक चलते-फिरते विश्वकोश थे। वे संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं हिन्दी जैसी अनेक भाषाओं के प्रकांड पण्डित थे, और उन्होंने उनके साहित्य में गहराई से अवगाहन किया था। डॉ० द्विवेदी को ज्योतिष के प्रति अनुराग, प्राचीन भाषा—संस्कृत के प्रति प्यार और भारतीय धर्म तथा सांस्कृतिक परम्परा के मर्म के प्रति जिज्ञासा विरासत में मिली थी।

इस स्मारक भाषण का शीर्षक था - "एक बूटा तीन और भारतीय संस्कृति"। यह व्याख्यान 19 अगस्त, 1993 को भारत में पोलैण्ड के राजदूत महामहिम प्रो० नारिया किस्टोफर बायर्स्की द्वारा दिया गया जो संस्कृत के विद्वान होने के साथ-साथ विख्यात भारत विद्याविद है। वक्ता ने कुछ विशिष्ट संस्थाओं के साथ जुड़े भारतीय संस्कृति के विलक्षण पक्षों पर प्रकाश डाला।

2. प्रो० एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान

डॉ० बोस एक स्वतन्त्रता सेनानी, गांधी जी की विचारधारा के अनुयायी, कला इतिहासकार और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उत्कृष्ट मानव विज्ञानी थे जिनका योगदान मानवविज्ञान के अलावा अन्य बहुत से विषयों एवं विधाओं में रहा है।

यह भाषण 28 व 29 अक्तूबर, 1993 को विश्व भारती के भूतपूर्व उप-कुलपति डॉ० सुरजीत चन्द्र सिन्हा द्वारा दिया गया। "भारतीय सभ्यता, संरचना तथा परिवर्तन" विषय पर बोलते हुए विख्यात मानवविज्ञानी तथा अनेक ग्रंथों तथा शोधपत्रों के रचयिता डॉ० सिन्हा ने बताया कि भारतीय सभ्यता की जीवनी शक्ति के स्रोत तथा स्वरूप और आधुनिक युग में उसके रूपान्तरण की विभिन्न अवस्थाओं की खोज में शायद सतत रहने वाले प्रो० निर्मल कुमार बोस ने अपने विस्तृत अनुभव से प्राप्त ज्ञान के भंडार को कितनी उदारतापूर्वक अपने मित्रों तथा शिष्यों की कई पीढ़ियों को अपनी सशक्त लेखनी तथा मौखिक अभिव्यक्ति की असाधारण क्षमता द्वारा अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से प्रदान किया है।

3. डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारक व्याख्यान

भारतीय भाषा विज्ञान के इतिहास में प्रो० सुनीति कुमार चटर्जी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे प्राच्य तथा पाश्चात्य ज्ञान में पारगत थे। भाषा विज्ञान, यूरोपीय भाषाओं, मानव वैज्ञानिक तथा मानवजाति वैज्ञानिक विषयों, भाषा संबंधी समस्याओं तथा योजनाओं, स्वरविज्ञान तथा स्वनिकी, आकृति विज्ञान तथा व्याकरण और अन्य अनेक तत्संबंधी विषयों में उनके द्वारा किये गये शोध-कार्य अध्येताओं तथा विद्वानों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

यह भाषण केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद के उप-कुलपति प्रो० एल० के० पमां द्वारा 8 तथा 9 मार्च, 1994 को दो भागों में दिया गया व्याख्यान का विषय था "सुनीति कुमार चटर्जी का भाषा तथा भाषाविज्ञान के विषय में मत" और "भारत में बहुभाषावाद के विषय में एक सांस्कृतिक भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि"।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति ने वर्ष 1993-94 की वार्षिक योजना का अनुमोदन किया और फिर अनुमोदित कार्यक्रमों के परिवेश में विस्तृत लक्ष्य निर्धारित किए गए। यह संतोष का विषय है कि भिन्न-भिन्न प्रभागों को, कुल मिलाकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली। केन्द्र की कार्यकारिणी समिति तथा न्यास द्वारा अनुमोदित 10 वर्षीय योजना की रूपरेखा के अनुसार केन्द्र के कार्यकलापों का विस्तार किया गया।

प्रत्येक प्रभाग के प्रमुख उपलब्धियों का ब्यौरा नीचे दिया गया है

कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

स्वयं पुस्तकालय ने फरवरी 1994 में अपने अस्तित्व का पचासवां वर्ष पूरा किया. पिछले साल की तरह इस वर्ष भी पुस्तकालय ने कला संबंधी, [illegible] साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, भाषा, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, मॉनोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों आदि के संग्रह का काम जारी रखा. जैसा कि पिछले रिपोर्ट में कहा गया था पुस्तकालय में विश्वकोश, ग्रन्थसूचियों, प्रारंभिक ग्रंथों, मूलभूत पुस्तकों और सुनियोजित पत्रों, [illegible] विदेशी [illegible] ग्रन्थों, कृषि कृतियों, [illegible] हैंडबुक्स, [illegible] ऐन्ड [illegible] कैलेंडरों और [illegible] प्रकार [illegible] विषयों के [illegible] सामग्री संगृहीत है.

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्थापना पुस्तकालय की 79 अनुक्रम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश संग्रह. पुस्तकालय ने संग्रहालय, कलाकारों और [illegible] की गतिविधियों के प्रमुख संकलनों की माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश प्रतियां प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास किया है. साथ ही उसने भारत के मुख्य पुस्तकालयों से उनसे [illegible] की माइक्रोफिल्मों तथा [illegible] का आदान-प्रदान कार्यक्रम शुरू में किया है. इसका [illegible] प्रयोग [illegible] में [illegible] किया गया है.

पुस्तकालय प्रायः पूरा का पूरा [illegible] में [illegible] पुस्तकों में [illegible] भारतीय संस्कृति [illegible] विषयक प्रकाशनों तथा पुस्तकों का आदान-प्रदान करता है.

यहां भारतीय तथा विदेशी [illegible] में [illegible] कला पत्रिकाओं और [illegible] पत्रिकाओं के [illegible] और [illegible] की [illegible] [illegible] संगृहीत है.

पुस्तकालय में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के माध्यम से [illegible] [illegible] है.

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने मुद्रित पुस्तकों के 3,247 नये [illegible] जोड़े. इनमें से 398 पुस्तकें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उर्दू की किताबों का मैकलॉड, अब्दुल खालिक नवाबी प्रेस, कलकत्ता, एशियाटिक सोसाइटी

आर्ट ऑफ कोट डिजाइन, सम्पादक [illegible] पॉल [illegible] : वारचेअर म्यूजियम.

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

वर्ष के दौरान, वेलकम डिपार्टमेन्ट इतिहास संस्थान, लंदन तथा सभी विज्ञान अकादमी के प्राच्य अध्ययन संस्थान, सेंट पीटर्सबर्ग (रूस) से माइक्रोफिल्मों की कुल मिलाकर 158 कुण्डलियां (रोल्स) प्राप्त हुई

साथ ही बिब्लियोथिक नेशनेल कुल्तुरेलेस (एस० पी० पी० एम०), बर्लिन, [illegible] विज्ञान वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इन्सेडोक), [illegible] विक्टोरिया तथा एल्बर्ट म्यूजियम, लंदन और इंटर डॉक्यूमेंटेशन क० (आई० डी० सी०), लीडन, नीदरलैंड से कुल मिलाकर 14,319 माइक्रोफ्रेमें प्राप्त हुई

मणिपुर राज्य अकादमी से सम्बंधित अभिलेख संस्था से माइक्रोफिल्मों की 55 कुण्डलियां भी प्राप्त हुई।

फ्रीयर गैलरी [illegible] और नेशनल ऑफ नेटिव इंडियन [illegible] अमेरिका से 8,662 स्लाइडें प्राप्त हुई

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश परियोजनाएं

[illegible] के [illegible] केन्द्रों में [illegible] पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम [illegible] की [illegible] अनुसंधान [illegible], जम्मू की परियोजना [illegible] 1992 में प्रारम्भ की गई थी। यह [illegible] 1993-94 में माइक्रोफिल्मों की 871 कुण्डलियां (लगभग 5,66,150 फ्रेम) तैयार की गईं।

इसके अतिरिक्त [illegible] केन्द्र में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम [illegible] लिया गया और वर्ष के अन्त तक [illegible] केन्द्रों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

परियोजनाएं	कुल पाण्डुलिपियां उपलब्ध	प्रारंभ करने की तारीख	तैयार की गई कुण्डलियों की संख्या	कुल पाण्डुलिपियां पत्रे बनाए गए
[illegible]	800	13.3.93	263	[illegible] 707 फ्रेम 1,65,773
श्री के [illegible] अनुसंधान संस्थान, [illegible]	103 + [illegible]	4.6.93	110	[illegible] 103 + [illegible] फ्रेम 71,500
मणिपुर [illegible] अकादेमी, [illegible]	[illegible]	7.8.93	28	[illegible] 110 फ्रेम 11,280
मणिपुर राज्य [illegible]	[illegible]	[illegible]	9	[illegible] 52 फ्रेम 8,597
[illegible] कलेक्शन, मणिपुर	516	24.8.93	28	[illegible] 516 फ्रेम 28,500

वर्ष 1993-94 के लिए माइक्रोफिल्म उत्पादन की प्रगति रिपोर्ट

क्रम सं०	परियोजनाएं	कुल पाण्डुलिपियां उपलब्ध	प्रारम्भ करने की तारीख	तैयार की गई कुल कुंडलियां	कुल पांडुलिपियां/ पन्ने उक्त तारीख तक बनाए गए
1.	सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी	1,20,000	7.9.89	764	पाडु- 15,611 पृ०- 4,90,257
2.	गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास	45,000	10.9.89	232	पांडु- 6,396 पृ०- 1,51,907
3.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	18,000	19.9.89	175	पांडु- 1,604 पृ०- 1,29,192
4.	प्राच्य अनुसंधान संस्थान एवं पाडुलिपि पुस्तकालय, त्रिवेन्द्रम	54,000	21.3.90	73	पांडु- 614 पृ०- 52,155
5.	वैदिक संशोधन मंडल, पुणे	14,099	22.6.90	149	पांडु- 1,816 पृ०- 1,04,873
6.	श्री रामवर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, त्रिपुनीथुर	3,847	11.8.90	43	पाडु- 386 पृ०- 1,52,950
7.	तंजावुर महाराजा सरफोजी, सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर	54,000	16.8.90	178	पाडु- 2,063 पृ०– 1,13,787
8.	श्री रणवीर संस्कृत अनुसंधान संस्थान, जम्मू	34,000	2.11.92	497	पाडु- 2844 पृ०- 2,55,557
9.	खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना	800	13.3.93	263	पाडु-789 पृ०- 1,65,775
10.	मणिपुर राज्य अभिलेखागार, इम्फाल	110	7.8.93	13	पाडु- 110 पृ०- 11,235
11.	मणिपुर राज्य संग्रहालय, इम्फाल	52	18.8.93	9	पाडु- 52 पृ०- 6,597

12.	पीपल्स म्यूजियम, काकचिंग, मणिपुर	516	24.8.93	28	पांडु- 516 प०- 28,500
13.	श्री चैतन्य अनुसंधान सस्थान, कलकत्ता	103 + पुस्तके	4.6.93	110	पांडु- 103 + (पुस्तके) प०- 71,500
14.	थिनचन्द्र सिंह स्मारक, इम्फाल, मणिपुर	273	13.2.94	13	पाडु- 273 प०- 3,690
15.	मुतुआ संग्रहालय इम्फाल, मणिपुर	15	16.2.94	15	पाडु- 15 प०- 245
16.	पं० एन० के० सिंह संग्रह, इम्फाल, मणिपुर	557	1.12.92-94		पांडु०- 557 प०- 43,000

जिन केन्द्रो मे माइक्रोफिल्म तैयार करने का काम चल रहा है उन्हे उनके साथ हुए करार की शर्तों के अनुसार उनकी सामग्री की अनुलिपियो (रिप्रोग्राफीज) की एक प्रति देनी होती है। तदनुसार इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने विभिन्न पुस्ताकालयो के लिए माइक्रोफिल्मो की प्रतियां तैयार करने का काम शुरू कर दिया है और उसने निम्नलिखित पुस्ताकालयो को प्रतियां दे दी है .

क्रम सं०	परियोजनाएं	कुल कुण्डलियों में से	प्रतिलिपि तैयार की गई कुंडलियां
1.	सरस्वती भवन, लाइब्रेरी, वाराणसी	1,950	160
2.	भण्डारकर प्राच्य शोध सस्थान, पुणे	1,194	50
3.	वैदिक सशोधन मडल, पुणे	727	45
4.	मणिपुर राज्य कला अकादमी, इम्फाल	55	55
5.	श्री रणवीर संस्कृत अनुसधान सस्थान, जाम्मू	488	49

माइक्रोफिल्म कुण्डलियों की हर दृष्टि से भली-भांति जांच की जाती है और कुण्डलियों में सम्मिलित पाण्डुलिपियों के सूचक सुव्यवस्थित रूप से रखे जाते हैं। दुर्लभ पुस्तकों की माइक्रोफिल्में बनाने का काम केन्द्र के माइक्रोफिल्म निर्माण दल द्वारा किया जाता है। पुस्तकालय में एक अनुलिपि एकक (रेप्रोग्राफी यूनिट) है जिसमें नवीनतम तकनीकों में प्रशिक्षित कार्मिक मौजूद हैं।

श्रव्य-दृश्य सामग्री

सदर्भ पुस्तकालय ने चुनी हुई एवं बहुमूल्य श्रव्य-दृश्य सामग्री का अच्छा संग्रह कर लिया है जिसमें विशेष रूप से कला वस्तुओं, चित्रपटरियों, रेखाचित्रों, और फोटोग्राफों की स्लाइडें वीडियो कैसेट तथा बड़े (एल० पी०) रिकार्डों आदि पर विशेष बल दिया गया है। वर्ष के दौरान, पुस्तकालय ने विश्व भर से सम्बंधित श्रोताओं की सामग्री को प्राप्त कर अपने यहां रखा है।

ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन के ओरियंटल तथा इंडिया आफिस से प्राप्त 8,459 अनिमेशनात्मक स्लाइडों को विज्ञानों तथा अनुसंधानकर्ताओं के उपयोग के लिए प्रतिलिपित तथा की गई है।

हस्तलिखित कैटलॉग कार्डों और सूचकों का तालिका बनाने के काम में ली जाने वाली नई तकनीक विशेष रूप से प्राप्त की गई स्लाइडों को खोजने में सुविधा हो जैसे -

1. वेस्टर बीटी लाइब्रेरी, ड्यूबलिन।
2. ऐशमोलियन म्यूजियम, ऑक्सफोर्ड
3. ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन
4. प्राच्य और इंडिया आफिस संग्रह, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन
5. विक्टोरिया तथा एलर्ट म्यूजियम, लंदन।

इन संग्रहालयों के अलावा, अन्य स्रोतों की 3,270 से अधिक स्लाइडें प्राप्ति संग्रहालय में दान की गई।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भिन्न भिन्न देशों में चुनी हुई संस्थाओं के साथ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाने की दिशा में सतत प्रयास किए जाते हैं। तदनुसार वर्ष के दौरान, जापान में अंतर्राष्ट्रीय जिनाइल ईसान, इटली, तुर्की तथा वियतनाम की विभिन्न संस्थाओं से पुस्तकों के केटलॉग, अनुलिपियों की सूचियां, संग्रहालय स्मारिकाएं (गाइडें) उनके प्रकाशनों की सूचियां प्राप्त की हैं। अपने और सामग्री प्राप्त करने के लिए इन सूचियों आदि को केन्द्र के पुस्तकालय में सुरक्षित रख गया है। बदले में केन्द्र ने भी इन संस्थाओं को अपने फोल्डर, डिस्प्लेकार्ड, सचित्र पोस्टकार्ड आदि के अलावा अपने प्रकाशनों की सूची भेजी है।

इसके अतिरिक्त, पुराना तथा वेनेजुएला के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम स्थायी करने पर हस्ताक्षर किए गए हैं। सामग्री, अनुलिपियों आदि के आदान-प्रदान के लिए अन्य देशों अर्थात् अल्बानिया, फ्रांस, कजाकिस्तान, किर्गीजस्तान, मालदीव, रूस, लाओ, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है।

तकनीकी एवं कम्प्यूटर कार्य

वर्ष के दौरान, 3,224 खण्ड या प्रति संख्या वर्गीकृत, तालिकाबद्ध तथा सूचीपत्र तैयार कर लिए। इनपुट टैप बनाने का काम पूरा किया गया और उसे कम्प्यूटर प्रणाली में सम्मिलित किया गया।

जिल्दबंदी

पुस्तकालय ने इस वर्ष 3,993 खंडों की जिल्दबंदी करवाई। अब जिल्दबंदी खण्डों की संख्या कुल मिलाकर 24,668 हो गई है।

ग्रंथ सूची

निम्नलिखित परियोजनाओं के संबंध में ग्रंथ सूचियां संकलित करने का काम चलता रहा.-

ब्रजनाथद्वारा ग्रंथसूची
संथाल साहित्य की खोज
मुक्कुवर ग्रंथ सूची
बृहदीश्वर ग्रंथ सूची
पुरालिका साहित्य की खोज

दो ग्रंथ सूचियां पूरी हो गई और उन्हें विभिन्न संस्थाओं के पास अवलोकनार्थ भेजा गया। ये ग्रंथसूचियां हैं : (1) सुलेख-साहित्य की खोज और (2) प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल : उनकी प्रकाशित कृतियों का ग्रंथसूचीय सर्वेक्षण। विद्वानों से प्राप्त सुझावों तथा टीका टिप्पणियों को दूसरी ग्रंथसूची में शामिल कर लिया गया है और उसके संशोधित संस्करण का 15 फरवरी, 1994 को (वसंत पंचमी के दिन) विमोचन कर दिया गया।

अन्य प्रकाशन

1. सांस्कृतिक धरोहर विषयक विशिष्ट सूचना प्रणाली का नेटवर्क स्थापित करने के विषय पर नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 22-25 अक्तूबर, 1991 को हुई, दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की परामर्श बैठक की रिपोर्ट।
2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा 3 सितम्बर, 1992 को कला पुस्तकालयों के विषय पर आयोजित "इफ्ला" (पुस्तकालय संघों का अंतर्राष्ट्रीय परिसंघ) कार्यशाला की रिपोर्ट।
3. सांस्कृतिक धरोहर विषयक विशिष्ट सूचना प्रणाली का नेटवर्क स्थापित करने के विषय पर, नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 24-28 फरवरी, 1993 को हुई दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की दूसरी परामर्श बैठक की रिपोर्ट।

सुविधाएं तथा सेवाएं

संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए आधारभूत सुविधाएं विकसित की गई हैं :-

1. पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का कुछ समय के लिए अन्तरपुस्तकालयिक आदान-प्रदान।
2. जीरोक्स प्रतियां तैयार करना।
3. माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश की फोटो प्रति तैयार करना और पढ़ना।
4. कम्प्यूटरबद्ध कैटलॉग।

आगन्तुक महानुभाव

आलोच्य वर्ष के दौरान संदर्भ पुस्तकालय में अनेक विशिष्ट व्यक्ति एवं विख्यात विद्वान पधारे। आने वाले महानुभावों को यहां स्थापित कम्प्यूटर प्रणाली तथा विकासकार्य से अवगत कराया गया। उनमें कुछ विशेष रूप से उल्लेखनीय महानुभाव थे, श्री एस० ए० अली, हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सुश्री फातिमा करहा, यूनेस्को के लिए ईरानी राष्ट्रीय आयोग, श्री मेरल ओजबेरा, अंकारा विश्वविद्यालय, टुर्की; श्री अमीनुल्हमन, ढाका विश्वविद्यालय, बंगलादेश, श्री एम०आर० रिखोकरम, इंरान, श्री पी० सी० चन्द्र, वित्त अधिकारी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; श्री ईश्वर बराल, उप-कुलपति, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाण्डू, नेपाल, श्री पी० के० दर, कार्यकारी निदेशक, लोक उद्यमों के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति, स्लोवेनिया; सुश्री जय चन्दीराम, निदेशक, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् (एन० सी० ई० आर० टी०); श्री आर० एन० मल्होत्रा, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान के लिए भारतीय परिषद्, श्री एस० वरदराजन, भूतपूर्व सचिव, भारत सरकार, महामहिम जेहेन्दर, भारत में स्विट्जरलैंड के राजदूत; श्री फिलिप्स डी० जैरेथ, विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका, प्रो० सेठावती, महानिदेशक, संस्कृति विभाग, जकार्ता, सुश्री विजया मेहता, राष्ट्रीय अभिनय प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुंबई, श्री अलिश्वेक सुनैव, उप-संस्कृति मंत्री, कजाकिस्तान गणराज्य, सुश्री लीसा चिगलिट, अंतर्राष्ट्रीय सामान्य कार्यक्रम, बोस्टन, संयुक्त राज्य अमेरिका, श्री एम० अजीम हुसैन, सर जोशुन थॉमसन, इन्टैक (यू०के०) ट्रस्ट, लंदन, श्री एम० के० शेषन दिल्ली, श्री सी० जी० आर० कुरुप, दिल्ली, श्री क्रिस्टियन, जीरोक्स पेलो एलॉट रिसर्च सेंटर, संयुक्त राज्य अमेरिका; डॉ० फ्रेडरिक एम० अशर, अमेरिका का भारतीय अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली।

वृत्तिक गतिविधियों में सहभागिता

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने कार्मिकों को पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, अनुलिपि कला, संरक्षण तथा क्षेत्रगत अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में नवीनतम प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। इसी उद्देश्य से कार्मिकों को विभिन्न संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि में उपस्थित होने और विभिन्न स्तरों की अन्य वृत्तिक/विशेषज्ञ गतिविधियों में भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

डॉ० टी० ए० वी० मूर्ति, पुस्तकालयाध्यक्ष को 1993-97 की अवधि के लिए सदस्य के रूप में इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए "इफ्ला" कला पुस्तकालयों की स्थायी समिति में नामित किया गया। श्री आत्म प्रकाश गवखल, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष को भी वर्ष 1993-97 के लिए इफ्ला की एशिया तथा ओशियाना संबंधी क्षेत्रीय अनुभागीय समिति के लिए चुना गया। उन्हें अगस्त, 1993 में बार्सेलोना (स्पेन) में आयोजित इफ्ला के 59 वें साधारण सम्मेलन में भाग लेने के लिए भी भेजा गया। श्री गवखल को इफ्ला की एशिया तथा ओशियाना संबंधी क्षेत्रीय अनुभागीय समिति के सचिव के रूप में भी चुना गया और वे क्षेत्रीय गतिविधियों के लिए इफ्ला के समन्वय बोर्ड के सदस्य और इफ्ला के तृतीय विश्व देशों में पुस्तकाध्यक्षता की प्रगति के प्रमुख कार्यक्रम (पी० एल० डी०) की सलाहकार समिति के सदस्य भी बनाए गए।

राष्ट्रीय स्तर

केन्द्र के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ० टी० ए० वी० मूर्ति ने अकादमिक [illegible] कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, "इन्फिलनेट" पुस्तकालय स्वायत्त सूचना नेटवर्क, अहमदाबाद, भारतीय प्रबन्धी संरक्षण संस्थान, लखनऊ तथा राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली आदि के निमंत्रण पर कम्प्यूटर/सूचना विज्ञान विषय पर

कतिपय विशेष व्याख्यान दिए। डॉ० मूर्ति ने भारतीय मानक ब्यूरो, नई दिल्ली, सूचना विज्ञान विषय पर कतिपय विशेष व्याख्यान दिए। डॉ० मूर्ति ने भारतीय मानक ब्यूरो, नई दिल्ली, सूचना विज्ञान सोसायटी, हैदराबाद और खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना के ग्रन्थ पुस्तकाध्यक्षता अध्ययन बोर्ड के सक्रिय सदस्य के रूप मे सेवाए प्रदान कीं।

श्री आत्म प्रकाश गक्खड़ भी भारतीय पुस्तकालय संगम (एसोसिएशन) के प्रधान सचिव के रूप मे उनके साथ सक्रिय रहे और उन्होंने बंगलौर मे आयोजित वार्षिक साधारण सम्मेलन मे भाग लिया। वे भारतीय मानक ब्यूरो की प्रलेखन समिति मे भी भारतीय पुस्तकालय संगम (आई० एल० ए०) की ओर से सदस्य है।

वरिष्ठ पुस्तकालय सहायक श्री वेयाज हाश्मी को बंगलौर मे आयोजित भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन मे भाग लेने के लिए भेजा गया।

डेलनेट

दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क, दिल्ली मे स्थित महत्वपूर्ण पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रो मे संसाधनो के पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए कार्यरत है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने डेलनेट के विशेष रूप से परिकल्पित मानविकी तथा कला स्कंध की देखभाल मे और डेटा संग्रहण के प्रारूपो और मानको के विकास के लिए, जिसमे केन्द्र ने विशिष्टता अर्जित कर रखी है, अग्रणी भूमिका अदा की है।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कला निधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागो की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना; सूचना प्रणाली का डिज़ाइन व विकास करना, कम्प्यूटर प्रणाली का रखरखाव करना व उसे चालू रखना और उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षण देना। इस प्रभाग को राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एन० आई० सी०) से भरपूर सहयोग मिलता रहा है। इसके कार्यक्रम आगे इस प्रकार विभाजित है :-

1. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना,
2. डेटाबेस का निर्माण,
3. कला और मानविकी के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी,
4. सांस्कृतिक स्रोतो के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना करना,
5. अनुसंधान तथा विकास परियोजनाए,
6. जनशक्ति प्रशिक्षण,
7. कम्प्यूटर प्रदर्शन ।

हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना

हार्डवेयर

(क) एक पी० सी० ए० टी०/486 प्रणाली "लिबसिस्ट" पुस्तकालय सूचना प्रणाली पैकेज के अनन्य प्रदान के लिए प्राप्त की गई।

(ख) तीन ए० ई० एम० टर्मिनल जो एम० सी० एल० पी० सी०/ए० टी० 386 कम्प्यूटर प्रणाली के साथ लगे थे, वहां से उखाड़ कर पुस्तकालय सामग्री के डेटा इनपुट तथा पुनः उपयोग के लिए, ऊपर (क) मे उल्लिखित ई० टी० एण्ड० टी० पी० सी०/ए० टी० 486 कम्प्यूटर के साथ लगाए गए।

(ग) जनपद सम्पदा प्रभाग की पी० सी०/एक्स० टी० प्रणाली को प्रकाशन के प्रयोग के लिए पी० सी०/ए० टी० 286 मे उन्नत किया गया।

(घ) संथाल परियोजना के लिए प्रयुक्त जेनिथ पी० सी०/ए० टी० 486 मे उन्नत किया गया।

(ङ) दो फर्मों के साथ वार्षिक रखरखाव संबंधी संविदा किए गए, जिनमे से एक आई० बी० एम० कॉम्पैटिबल मशीनो के लिए था और दूसरा ऐपल मैकिंटोश मशीनों के लिए।

(च) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी शाखा कार्यालय में कलाकोश शब्दावली तथा अन्य गतिविधियो से संबंधित डेटा दाखिल करने के दैनिक कार्य के लिए एक और पी० सी०/ए० टी० 486 प्रणाली लगाई गई।

सॉफ्टवेयर

(क) आन्तरिक प्रणाली दल द्वारा निम्नलिखित अनुप्रयोग पैकेज (डेटाबेस) विकसित किए गए

1. भारत मे अमेरिकी विद्वान संबंधी डेटाबेस,
2. पाण्डुलिपि सूचना प्रणाली संबंधी डेटाबेस,
3. नियुक्ति प्रणाली संबंधी डेटाबेस,
4. कागज फाइल करने की प्रणाली संबंधी डेटाबेस,
5. यात्रा सूचना प्रणाली संबंधी डेटाबेस,
6. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा पुस्तकों का प्रकाशन संबंधी सूचना प्रणाली, और
7. डाक प्रणाली ;

(ख) "लमिस" डेटाबेस से कैटलॉग कार्ड छापने के लिए राष्ट्रीय सूचना केन्द्र द्वारा एक कार्यक्रम बनाया गया था। सभी कार्ड छापे जा चुके है।

(ग) पुस्तकालय सूचना प्रणाली "लिसविस" को बाजार से क्रय किया गया और इसी प्रयोजन के लिए प्राप्त किए गए एक कम्प्यूटर मे लगाया गया।

विविध

(क) निम्नलिखित के लिए "पर्ट चार्ट" तैयार किए गए

(i) कैटलॉग,

(ii) माइक्रोफिल्म बनाने की परियोजना,

(iii) स्लाइड परियोजना,

(iv) वीडियो फिल्मे प्राप्त करना और उनका प्रलेखन करना,

(v) यू० एन० डी० पी० (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) के उद्देश्य।

(ख) श्री रमेश बत्रा तथा श्री पीयूष लाल, प्रोग्रामरो ने मुम्बई मे 3-6 नवम्बर, 1993 को आयोजित सी० एस० आई०-93 सम्मेलन मे भाग लिया।

(ग) डॉ० टी० एन० दी० मूर्ति, पुस्तकालयाध्यक्ष ने फरवरी, 1994 मे सी० एस० आई०, दिल्ली चैप्टर द्वारा नई दिल्ली मे आयोजित दो-दिवसीय - "अक्षर" सम्मेलन मे भाग लिया।

(घ) प्रलेख प्रतिलिपण प्रणाली (डॉक्यूमेंट इमेजिंग सिस्टम) के लिए टेंडर [illegible] किए गए।

(ङ) पी० सी० के रखरखाव की प्रक्रिया का सुधार बनाया गया।

(च) फरवरी, 1994 मे आयोजित कार्यशाला मे डेलनेट सहभागियो के समक्ष केन्द्र के प्रोग्रामरों द्वारा 'जिस्ट' कार्ड के उपयोग का प्रदर्शन किया गया, जिसके लिए डॉ० कपिला वात्स्यायन ने अध्यक्षता की थी।

(छ) बहुमाध्यमिक रूप मे ऐपल मैकेंटोश कम्प्यूटर पर विकसित *गीतगोविन्द* विषयक प्रायोगिक परियोजना उप-महानिदेशक यूनेस्को, महानिदेशक, शिक्षा तथा संस्कृति, इंडोनेशिया, आदि विशिष्ट महानुभावो के समक्ष प्रस्तुत की गई।

(ज) स्थायी तकनीकी समूह की पांचवीं बैठक 30 दिसम्बर, 1993 को राष्ट्रीय सूचना केन्द्र मे आयोजित की गई। बैठक मे लिए गए मुख्य निर्णय ये थे -

(i) सूचना के आदान-प्रदान के लिए कम्प्यूटर आधारित व्यवस्था तंत्र (नेटवर्क) की स्थापना,

(ii) कैटकैट डेटाबेस का विकास, और

(iii) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और दूरदर्शन अभिलेखागार के बीच सांस्कृतिक सूचना आदान-प्रदान प्रणाली को सुदृढ़ बनाना।

(झ) विज्ञान भवन एनेक्सी मे एच० पी०-3000 कम्प्यूटर प्रणाली पर 'मैनुस' 'कैटकैट' तथा 'केकेटर्न', के लिए डेटा दाखिल करने/अद्यतन बनाने का काम बराबर चलता रहा।

(ञ) सभी तरह के महत्वपूर्ण डेटाबेस के लिए उपयोगकर्ताओं से अभिलेखागारीय सहायक सामग्री प्राप्त की गई।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कला निधि प्रभाग का एक बड़ा काम है दुर्लभ एवं व्यक्तिगत कला संग्रहों को प्राप्त करना तथा उनकी रक्षा करना। भिन्न-भिन्न विख्यात विद्वानो एवं कलामर्मज्ञों की जीवन भर की साधना एवं प्रयासों को मूर्त रूप मे प्रस्तुत करने वाले इन संग्रहों को प्राप्त करने के बाद इन्हे सुव्यवस्थित रूप मे वर्गीकृत एवं सूचीबद्ध किया जाता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर इनका प्रदर्शन एवं पुन: उपयोग किया जा सके। इस सम्पूर्ण कार्य की देखभाल सांस्कृतिक अभिलेखागार द्वारा की जाती है।

2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अर्जित दुर्लभ कला संग्रहों मे फोटोग्राफ, स्लाइडें, ऑडियो/वीडियो/टेप आदि शामिल है। उपयोगकर्ताओं तथा लाभानुभोगियों के लिए ये *लोकिय, कालु, शिल्प, छाया-पट, नृत्य* और *नाट्य* जैसे विभिन्न शीर्षों के अन्तर्गत वर्गीकृत किए गए है। आलोच्य वर्ष के दौरान, निम्नलिखित उल्लेखनीय संग्रह प्राप्त किए गए:-

छाया-पट

सुनील जनाह संग्रह

भारत के विख्यात फोटो इतिहासकार, सुनील जनाह के पास दुर्लभ छायाचित्रों का बहुत बड़ा संग्रह है। उनके ये फोटोग्राफ भारत के विभिन्न राजनीतिक तथा सामाजिक पक्षों का चित्रण प्रस्तुत करते है। ये स्वातंत्र्य-पूर्व काल से लेकर स्वातंत्र्योत्तर अर्धशती तक के है। कला निधि प्रभाग ने इनमे से 50 चुने हुए बड़े आकार के इंटेल-स्टाम छायाचित्र प्राप्त किए है, जिनमे जनजातीय जीवन तथा मंदिर, स्थापत्य एवं मूर्तिकला और शास्त्रीय एवं लोक नृत्य छायांकित किए गए है।

डेविड उलरिच

डेविड उलरिच से 25 रंगीन एवं इंटेल-स्टाम फोटोग्राफ प्राप्त किए गए। इस संग्रह मे शैलकला तथा प्रकृति, विशेष रूप से जनजातियों के दुर्लभ छायाचित्र है।

वास्तुशिल्प

शम्भुनाथ मित्र संग्रह

श्री शम्भुनाथ मित्र ने पश्चिम बंगाल के मृण्मूर्ति/पक्की मिट्टी वाले मंदिरों के व्यापक रूप से फोटो प्रलेख तैयार करने में कई वर्ष बिताए हैं। उनके पास तत्संबंधी विस्तृत टिप्पणियां, मानचित्र, गजेटियर आदि संगृहीत हैं। कला निधि प्रभाग ने उनका समस्त दुर्लभ संग्रह प्राप्त कर लिया है, इस संग्रह में सात हजार से अधिक श्वेत-श्याम निगेटिव (चित्र), नक्शे, सूचक पत्रे, कैटलॉग कार्ड हैं जो बंगाल के बीरभूमि, बांकुरा तथा बर्दवान जिलों से संबंधित हैं। इस संग्रह को व्यापक एवं पूर्ण बनाने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्री मित्र को शेष दो जिलों अर्थात् हुगली और हावड़ा संबंधी छायाचित्रों का प्रलेखन कार्य पूरा करने के लिए बुलाया है।

3. सांस्कृतिक अभिलेखागार ने विभिन्न मरणोत्तर कलाओं और कलागुरुओं के संबंध में भी प्रलेखन कार्य किया, जिनकी अध्यापन तकनीकें अथवा कलात्मक परम्पराएं निराली हैं। वीडियो अथवा ऑडियो रूपों में गहराई से तैयार किया गया यह प्रलेखन कार्य कला के अध्येताओं तथा कलाकारों के लिए बहुमूल्य अनुसंधान एवं संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग में आता है। वर्ष 1993 के दौरान भी सांस्कृतिक अभिलेखागार के कार्यकलापों में अनुसंधान एवं प्रलेखन परियोजनाओं पर विशेष बल दिया गया। आलोच्य वर्ष में संपन्न किए गए कार्यकलापों में कुछ ये हैं :-

कथकली का प्रलेखन

यह कार्य एक तरह से भविष्य में अनुसंधान तथा संदर्भ के लिए, उन पुरातन परम्पराओं के संकलन एवं संशोधन का प्रयास है जो भारत की एक विशेष नृत्य शैली से संबंधित हैं। कथकली के कुछ विख्यात गुरुओं द्वारा अपनाई गई तकनीकें उन्हीं के द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रमों के साथ प्रस्तुत की गई हैं। यह यू-मैटिक हाई-बैंड फारमेट में नौ घन्टे की रिकार्डिंग है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पर फिल्म

भारत के एक सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता श्री अरुण कौल ने केन्द्र के विभिन्न क्रियाकलापों की फिल्म बनाने का काम पूरा कर दिया है। उन्होंने केन्द्र की प्रगति का भी समालोचनात्मक मूल्यांकन किया है। यह प्रलेखन भी यू-मैटिक हाई-बैंड में ही तैयार किया गया है।

4. आन्तरिक प्रलेखन कार्य

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/प्रदर्शनियों का श्रव्य-दृश्य प्रलेखन किया गया, इनमें "राजा लाला दीनदयाल", "प्रकृति", "शैल-कला" तथा "छाया-पुतुल" विषयक प्रदर्शनियां उल्लेखनीय थीं। नई दिल्ली में आयोजित श्रीमती सरोजिनी दूधाल की *रामायण* तथा *महाभारत* की कुण्डलित चित्रकारियों की प्रदर्शनी के वीडियो प्रलेखन का कार्य भी किया गया।

5. प्राप्ति संख्या दर्ज करना तथा सूचीबद्ध करना

आलोच्य वर्ष में जिन पुस्तकों तथा अन्य सामग्रियों में प्राप्ति संख्या दर्ज करने तथा सूचीबद्ध करने का काम हाथ में लिया गया उसमें निम्नलिखित शामिल थीं :

(i) अजन्ता तथा एलोरा गुफाओं की स्लाइडों का विनय बहल संग्रह ,

(ii) डातन नाम्बियार की स्लाइडें ,

(iii) लान्स डेन का फोटो कला अभिलेखागार ,

(iv) डेविड उलरिच का फोटो संग्रहालय ,

(v) डी० आर० डी० वाडिया के श्वेत/श्याम छायाचित्र ,

(vi) भीमबेटका की स्लाइडे (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा तैयार की गई) ;

(vii) डॉ० मठपाल के उत्तराखण्ड पर स्लाइडे ,

(viii) बैडनारिक स्लाइडे ;

(ix) चम्बल घाटी शैल-कला स्लाइडे ;

(x) मुतुआ म्यूजियम स्लाइडे ।

6. प्रदर्शनिया एवं प्रकाशन

अभिलेखागार के पास उपलब्ध राजा दीनदयाल के फोटोग्राफिक संग्रह की एक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर मे लगाई गई। उस महान् फोटोग्राफर के चुने हुए छायाचित्र, स्टूडियो फर्नीचर तथा उपकरण, जो अभिलेखागार ने अपने पास सभाल कर रखे थे, अक्तूबर, 1993 मे प्रदर्शित किए गए।

7 फिल्मो/वीडियो कार्यक्रमो की प्राप्तियां

स्व० प्रो० गुंथर सोन्थीमर तथा श्री हेनिंग स्ट्रेनमूलर द्वारा निर्मित चार फिल्मे सांस्कृतिक अभिलेखागार के लिए गर्वास्पद प्राप्तिया थी। इन फिल्मो के नाम है : (i) "किंग खण्डोबा-सीन्स फ्रॉम दि लाइफ आफ एन इंडियन फॉक गॉड" (राजा खण्डोबा - एक भारतीय लोक देवता के जीवन के दृश्य) ; (ii) "दि जर्नी ऑफ दि हटकर धागसं" (हटकर धागडो की यात्रा) , (iii) "वारि-एन इंडियन पिलग्रिमेज" (वारि- एक भारतीय तीर्थयात्रा) , और (iv) "किंग खण्डोबाज हंटिंग एक्सपेडीशन" (राजा खण्डोबा का आखेट अभियान)। गहरी खोज-बीन और व्यक्तिगत पारस्परिक सम्पर्कों के बाद चुने गए उपयुक्त स्थलो पर शूट की गई ये फिल्मे भारत मे ही नही विदेशो मे भी अत्यधिक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानववैज्ञानिक महत्व की है. यह विशेष रूप से महाराष्ट्र के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पक्षो से सबंधित है। इन फिल्मो को अकादमिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं/संगठनो को वितरित करने का प्रस्ताव भी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विचाराधीन है.

8. अन्य - सांस्कृतिक अभिलेखागार ने निम्नलिखित फिल्मे भी प्राप्त की -

(i) "टुवर्ड्स जॉय एण्ड फ्रीडम" - निर्माता : कु० हेमन्ती बैनर्जी (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता)

(ii) "रिवल्यूज" - निर्माता श्री अरविन्द सिन्हा (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता)

(iii) "वाल्मीकि रामायण" - निर्माता श्री के० एस० स्वामिनाथन

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन

कला निधि प्रभाग इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्रो पर ध्यान केन्द्रित करता है जिनके साथ भारत के घनिष्ठ संबंध रहे है.

क. दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

इस अध्ययन कक्ष का उद्देश्य भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशो के बीच सांस्कृतिक संबंधो के अध्ययन के लिए पुस्तकालय सामग्री का एक बीजभूत संग्रह बनाना है। इस वित्तीय वर्ष मे कक्ष ने निम्नलिखित शीर्षों के अन्तर्गत प्रकाशन प्राप्त करने के लिए जोरदार प्रयास किए -

i. पाठक संग्रह - दक्षिण-पूर्व एशिया से संबंधित, विभिन्न मानवैकी विषयो तथा सामाजिक विज्ञान के 446 प्रकाशन प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न सूचियो तथा पुस्तक समीक्षाओं मे से चुने गए।

ii. दक्षिण-पूर्व एशिया विषयक स्रोत सामग्रियों का सूचक तैयार करना : केन्द्र के सदर्भ पुस्तकालय में दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन विषय पर विस्तृत ग्रंथसूची तैयार करने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान सूचक में 75 शीर्षक जोड़े गए।

iii. महत्वपूर्ण विद्वानों का आगमन

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशिया विश्वविद्यालय के प्रख्यात मानवविज्ञानी प्रो० एस० बुद्धिसतोषो अप्रैल, 1993 में केन्द्र में पधारे मनीषियों तथा विद्वानों ने उनके साथ विचार-विमर्श किया और इण्डोनेशिया विश्वविद्यालय तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बीच अकादमिक सहयोग स्थापित करने और इण्डोनेशिया से शोध सामग्री प्राप्त करने की सभावनाएं खोजने का प्रयास किया।

इन्डोनेशिया विश्वविद्यालय की प्रोफेसर तथा इण्डोनेशिया सरकार के सस्कृति मंत्रालय की महानिदेशक डॉ० एडि सेद्यावती, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अतिथि के रूप में 5 से 11 अक्तूबर, 1993 को यहां पधारीं। केन्द्र के अकादमिक अधिकारियों ने अकादमिक सहयोग तथा शोध सामग्री की प्राप्ति के लिए उनसे परस्पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने "इण्डोनेशियाई सस्कृति में भारतीय प्रभाव" विषय पर 6 अक्तूबर, 1993 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में भाषण दिया। उनकी इस वार्ता की व्यापक रूप से प्रशंसा की गई।

थाईलैंड

बैंकाक (थाईलैण्ड) स्थित थम्मासात विश्वविद्यालय के भारत अध्ययन केन्द्र की निदेशक प्रो० सुश्री सुरम पूलसुपैया दिसम्बर, 1993 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारीं और उन्होंने "रामायण का थाई साहित्य तथा कला पर प्रभाव" विषय पर भाषण दिया। विद्वानों ने इसे बहुत सराहा। केन्द्र के अकादमिक अधिकारियों ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा भारत अध्ययन केन्द्र, बैंकाक (थाईलैंड) के बीच अकादमिक सहयोग स्थापित करने के उद्देश्य से उनके साथ बातचीत की।

विदेश का दौरा

भारत तथा वियतनाम के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (1992-94) के अन्तर्गत, कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी डॉ० बचन कुमार ने हनोई के पुरातत्व संस्थान में डोंगसन संस्कृति के अध्ययन के लिए 9 से 28 अगस्त, 1993 तक हनोई (वियतनाम) का दौरा किया। डोंगसन संस्कृति के अध्ययन के अलावा उन्होंने वियतनाम की मुख्य-मुख्य संस्थाओं को भी देखा, और वियतनाम की संस्थाओं तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बीच अकादमिक सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के उद्देश्य से उन्होंने वहां अपनी वियतनामी इतिहासविदों, विद्वानों आदि से सम्पर्क बनाया।

अपनी वापसी यात्रा के दौरान जब डॉ० कुमार बैंकाक में थे, उन्होंने थाईलैण्ड विश्वविद्यालय तथा वहां की महत्वपूर्ण अकादमिक संस्थाओं का दौरा किया।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पूर्व-एशियाई कक्ष का उद्देश्य चीन, कोरिया, जापान जैसे उन पूर्व-एशियाई देशों की सांस्कृतिक परम्परा एवं धरोहर का अध्ययन करना है जिनके साथ भारत के पुराने संबंध रहे हैं, और उनके विषय में सदर्भ सामग्री इकट्ठी करना है। आलोच्य वर्ष के दौरान यह कक्ष ग्रंथसूचियों के अनुवाद, इस विषय क्षेत्र के भारतीय तथा विदेशी विद्वानों के साथ समन्वय जैसे विभिन्न कार्यकलापों में सक्रिय रूप से संलग्न रहा।

चीनी भाषा के प्रकाशन *दुआन वेनजी और दुनहुआंग कला* के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य समाप्त हो गया है और प्रो० तान चुंग की प्रस्तावना तथा डॉ० कपिला वात्स्यायन के प्राक्कथन के साथ उसकी प्रेस कापी मुद्रणार्थ तैयार है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रकाशित की जाने वाली यह पुस्तक दुनहुआंग अकादमी की अगस्त, 1994 में दुनहुआंग (चीन) में आयोजित किए जाने वाले इस अकादमी के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर भेंट की जाएगी।

विशिष्ट विद्वानों का आगमन

मंगोलिया

साइंटिफिक एण्ड प्रॉडक्शन कंपनी लिमिटेड के डॉ० डंजन अलतसेत्सेग, एम० टी० एम० रोटर की श्रीमती एन० बोरखखिन और उलान बतौर से मैग्डन मठ के आदरणीय खम्बोलामा अक्तूबर, 1993 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पधारे। उन्होंने केन्द्र के अकादमिक अधिकारियों से चर्चा की और संस्थाओं के बीच अकादमिक सहयोग की संभावनाओं का पता लगाया।

ख. स्लाविक तथा मध्य एशियाई अध्ययन

डॉ० अरुण बैनर्जी 2 अगस्त, 1993 को स्लाविक तथा मध्य एशियाई अध्ययन कार्यक्रम में सह-आचार्य (प्रोफेसर) नियुक्त किए गए। वे "यूरेशिया में एकजुटीकरण तथा समुदायीकरण" की व्यापक परियोजना की परिधि में, 19वीं शताब्दी के अन्तिम दौर और 20वीं के प्रारम्भिक वर्षों के रूसी साम्राज्य में एकजुटीयता, मेले तथा सामाजिक समुदाय विषयक परियोजना पर कार्य करते रहे हैं।

"इनियन" कार्यक्रम

केन्द्र ने स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन के परामर्शदाता डॉ० माधवन के० पलत ने रूस का दौरा किया और निम्नलिखित विषय वर्गीकरण के अनुसार "इनियन" से प्राप्त करने के लिए माइक्रोफिशों की सूचियां बनाईं :

(क) विटकाइण्ड बिब्लियोग्राफी से औपनिवेशिक काल का मध्य एशिया, गजेटियर,

(ख) जाइऔचकोवस्की बिब्लियोग्राफी से रूसी साम्राज्य पर, जैसे आधारभूत सदर्भ,

(ग) पोबोरिन्की बिब्लियोग्राफी से रूसी साम्राज्य का कानून तथा न्यायशास्त्र,

(घ) 19वीं शताब्दी में रूसी साम्राज्य में सामाजिक संरचना और जन-आन्दोलनों पर साहित्य ; और

(ङ) रूसी बुद्धिजीवी वर्ग और उनके इतिहास पर साहित्य।

डॉ० माधवन ने निम्नलिखित छह पत्रिकाओं की माइक्रोफिशों को आर्डर के लिए चुना। ये अपने-अपने विषय क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण पत्रिकाएं हैं -

(क) *वोप्रोसी इस्तोरी* ,

(ख) *आर्टकेस्त्वेनैया इस्तोरिया* ,

(ग) *सोसियोलोजिक एसलेदोवानिये* (मानविकी विषयों तथा सामाजिक विज्ञानों में अलग-अलग श्रृंखलाएं) ;

(घ) *इजवेस्तिया अकादेमी* (सामाजिक विज्ञानों की श्रृंखला) ,

(ङ) *रैती अई नैरोदी* ,

(च) एत्नोलिंग्विस्तिकोय *ओबोजरेनी* ।

पुस्तकालय से प्राप्त सूचना के अनुसार, "इनियन" से प्राप्त माइक्रोफिश की कुल संख्या 3,578 है। अगस्त, 1993 से कोई माइक्रोफिश प्राप्त नहीं हुई है। "इनियन" से एक विशेष अनुरोध किया गया कि वे जल्दी से माइक्रोफिश भेजें और अगर इस मामले में उनके सामने कोई कठिनाई आ रही है तो सूचित करें। उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि वे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा "इनियन" को दिए गए माइक्रोफिश संबंधी सभी आर्डरों के बारे में एक ठोस रैकर्ड रखना शुरू करें। तब उनसे "ई-मेल" माध्यम से दिल्ली से सम्पर्क किया जा सकेगा।

भारतीय पाण्डुलिपियां

सेन्ट पीटर्सबर्ग के प्राच्य संस्थान के साथ हमारे समझौते के अनुसार मिरो-नोव के सम्पूर्ण संग्रह की प्रतिलिपि तैयार हो चुकी है। माइक्रोफिल्म के लगभग 20,000 फ्रेम केन्द्र के पुस्तकालय में आ ही चुके हैं।

शिष्टमंडल का आगमन

कजाखस्तान गणराज्य से भारत आए आठ-सदस्यीय शिष्टमंडल के पांच सदस्य 5 नवम्बर, 1993 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारे। उनका नेतृत्व संस्कृति के प्रथम उप-मंत्री श्री ए० टी० सिगेव ने किया। केन्द्र मे उनके आगमन पर उन्हे माटी घर में आयोजित राजा दीनदयाल फोटोग्राफी प्रदर्शनी तथा पुस्तकालय का अवलोकन कराया गया। यह तय हुआ कि केन्द्र कजाखस्तान संबंधी सामग्री कजाखस्तान के वैज्ञानिक सूचना संस्थान से सीधे मंगा सकता है।

रूस के एक मनीषी श्री चेलिशेव सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के बारे मे चर्चा करने के लिए नवम्बर, 1993 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मे आए।

ओल्डनबर्ग की रचनाओं का अनुवाद

प्रो० जी० एम० बोनगार्ड-लेविन को ओल्डनबर्ग की रचनाओं का एक अलग संकलन तैयार करने के लिए कहा गया है क्योंकि इससे पहले किया गया संकलन भारतीय पाठकों के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त नहीं पाया गया। अब इस नए संकलन की प्रतीक्षा है।

कला कोश

कला कोश प्रभाग बौद्धिक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों मे अनुसंधान करता है। यह केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में काम करता है। यह पाठ्य सिद्धान्त तथा व्यवहार पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

इस उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार है और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त है ; (ख) प्राथमिक ग्रंथो की खोज सामग्री का भी पता लगाया है जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अब उस सामग्री को अनुवाद के साथ मूल भाषा मे प्रकाशित किया जा रहा है ; (ग) उन विद्वानो तथा पंडितों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अंतरसांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परम्पराओं को समझने मे अग्रणी रहे है , और (घ) एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियो मे विभाजित किया गया है :-

क.	**कलातत्त्वकोश**	:	आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख.	**कलामूलशास्त्र**	:	उन आधारभूत ग्रंथो की माला जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी कला विशेष से संबंधित है।
ग.	**कलासमालोचन**	:	समीक्षात्मक साहित्य की ग्रंथमाला, और
घ.	**कला विश्वकोश एवं कलाओं का इतिहास**	:	कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश , भारत की मुद्राशास्त्रीय कलाओं पर एक खण्ड।

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

कला कोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। विभिन्न विद्वानो के परामर्श से, डॉ० लक्ष्मण शास्त्री जोशी के सर्वोपरि मार्गदर्शन मे, ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दो की सूची

तैयार की गई जो अनेक शास्त्रों के मूल/प्राथमिक ग्रंथों मे व्यवहृत हुए है और जिनका बीज कलाओं मे दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक सकल्पना का अनुसंधान अनेक शास्त्रों/विषयों के प्राथमिक ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है। जैसा कि सुविदित है, एक पारिभाषिक शब्द का एक मुख्य अर्थ होता है जो काफी व्यापक होता है, लेकिन कालांतर मे उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हैं। ऐसे सकलन, विश्लेषण तथा पुनः एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परम्परा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अंतरशास्त्रीय स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा।

कलातत्त्वकोश का प्रथम खण्ड 1988 मे प्रकाशित किया गया। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दो का विवेचन किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय विद्वत् समाज मे इसका भारी स्वागत हुआ और इसकी व्यापक रूप से समीक्षा की गई।

जैसाकि वर्ष 1991-92 की रिपोर्ट मे कहा गया है, कलातत्त्वकोश का द्वितीय खंड 'दिक्' तथा 'काल' से संबंधित पारिभाषिक शब्दो के बारे में है, और 16 मार्च, 1992 को प्रधानमंत्री द्वारा इस खंड का विमोचन किया गया।

कलातत्त्वकोश का तृतीय खंड 'पंचमहाभूतों' से संबंधित है। उसके कार्य में प्रगति हुई है। तत्संबंधी सामग्री इकट्ठी की गई और लेख लिखने का कार्य विद्वानो को सौंप दिया गया है। सोलह लेखो मे से ग्यारह प्राप्त हो गए हैं और पांच के शीघ्र प्राप्त होने की आशा है। 31 मार्च, 1993 तक प्राप्त हुए लेखो की मार्च, 1993 मे वाराणसी मे हुई विशेषज्ञो की बैठक में समीक्षा की गई थी। नए प्राप्त हुए लेखो की समीक्षा भी 14 मार्च, 1994 को वाराणसी में हुई एक अन्य बैठक मे समीक्षा की जा चुकी है।

'आकृति' विषय से संबंधित चतुर्थ तथा पचम खंड मे समाविष्ट किए जाने वाले पारिभाषिक शब्दों की एक अन्तिम सूची भी मार्च, 1993 की बैठक मे बनाई गई थी। उसके बाद मार्च, 1994 की बैठक मे उस सूची और उन विद्वानो के नामो की सूची को अंतिम रूप दिया जा चुका है जिन्हें भविष्य मे यह काम सौंपा जाएगा।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

कला कोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है - वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक संपादन करके टीका-टिप्पणियों तथा अनुवाद के साथ उन्हे ग्रंथमाला के रूप मे प्रकाशित करना।

मात्रालक्षणम् तथा *दत्तिलम्* नामक दो ग्रंथ 1988-89 मे प्रकाशित किए गए थे। *मात्रालक्षणम्* मे सामवेद से संबंधित वैदिक स्वरो का विवेचन किया गया है और *दत्तिलम्* संगीत विषयक एक अतिप्राचीन ग्रंथ है।

श्रीरत्नमुक्तावली, श्री कविकर्णरसाला के 4 खण्ड और *बृहद्देशी* के प्रथम खण्ड के समालोचनात्मक संस्करण दिनांक 16 मार्च, 1992 को प्रधान मंत्री द्वारा विमोचित किए गए।

आलोच्य वर्ष के दौरान, *कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देश* - क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-9, जो कालिकापुराण मे उपलब्ध प्रतिमा वैज्ञानिक सामग्री का संकलन है, और *बृहद्देशी* का दूसरा खण्ड प्रकाशित किए गए।

निम्नलिखित ग्रंथ प्रकाशन प्रक्रिया की अंतिम अवस्था मे है :

1. *शिल्परत्नकोश* - क० मू० शा० ग्रंथमाला संख्या-16
2. *नर्तननिर्णय खण्ड* (I) - क० मू० शा० ग्रंथमाला संख्या-17
3. *न्यायसूत्रसंग्रह विद्यापाद* - क० मू० शा० ग्रंथमाला संख्या-13

काण्वशतपथब्राह्मणम् का प्रथम खण्ड कैमरा निर्मित की अंतिम अवस्था मे है, इसी ग्रंथ के द्वितीय एवं तृतीय खण्ड तीसरे प्रूफ की अवस्था मे है और चतुर्थ, पचम और षष्ठम खण्ड की टाइपसेटिंग का काम चल रहा है।

तुर्जमे-ए-मान-कुतूहल व रिसाल-ए-राग-दर्पण जो हिन्दुस्तानी संगीत पर एक फारसी ग्रंथ है, इसके फारसी मूल पाठ का सुलेख तैयार किया गया है, और मूलपाठ के नागरी में लिप्यान्तरण को एवं अंग्रेजी अनुवाद को केन्द्र के अपने डी० टी० पी० सिस्टम पर कम्पोज किया गया है।

लाट्यायन-श्रौत-सूत्र की सम्पूर्ण पाण्डुलिपि सम्पादक/अनुवादक से प्राप्त हो चुकी है। इसके मूलपाठ के पुनर्निरीक्षण तथा सम्पादन के लिए एक विद्वान चुन लिया गया है जो शीघ्र ही अपना काम शुरू कर देगा।

नर्तननिर्णय के द्वितीय एवं तृतीय खण्ड की कैमरा निर्मित अवस्था से पहले की कच्ची प्रति की जांच की जा चुकी है और पाठ के अनुवादक/सम्पादक द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है। अब इसकी कैमरा प्रति तैयार की जा रही है।

वद्यदंण्डी-प्रकाशिका और रागलक्षण की प्रेस प्रतियां सम्पादन की अंतिम अवस्था में हैं।

संगीत-मकरन्द के मूलपाठ के लिप्यन्तरण और अनुवाद का प्रारूप तैयार करने का काम पूरा हो चुका है।

संगीत नारायण का काम सौंपा जा चुका है। इसके लिप्यंकन तथा चार पाण्डुलिपियों से मिलान का काम पूरा हो चुका है। आगे और मिलान करने का काम प्रगति पर है।

संगीत समयसार के पाठ तथा अनुवाद का काम पूरा होने वाला है।

सिंह भूपाल रचित *संगीत सुधाकर* की पाण्डुलिपि तैयार करने का काम पूरा हो गया है और पाण्डुलिपि का संशोधन कार्य चल रहा है।

मयमतम् 2 खण्डों को अंतिम प्रूफ संशोधन के बाद मुद्रण के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

साधनमाला के प्रति लेखन तथा छह पाण्डुलिपियों के साथ मिलान का काम पूरा हो चुका है। नेपाली मूल की पांच पाण्डुलिपियों की फोटो प्रतियां हाल ही में शिवपुरी संस्थान, सारनाथ से प्राप्त की गई हैं। मिलान कार्य में इनका उपयोग किया जाएगा।

रसगंगाधर का प्रतिलेखन तथा मिलान कार्य अब पूरा हो गया है। सम्पादक/अनुवादक ने पाठ के पुनर्निर्माण और अनुवाद का प्रारूप तैयार करना शुरू कर दिया है।

सरस्वती कण्ठाभरण के पाठ को कम्प्यूटर में डाला गया है और तीन मुद्रित संस्करणों से पाठांतर दर्ज किए जा रहे हैं।

क्रियाकमलोतिका (अघोरशिवाचार्य पद्धति) के पहले भाग की पाण्डुलिपि सम्पादक/अनुवादक से प्राप्त हो गई थी और मुद्रण का एक नमूना तैयार किया गया है। खण्ड-1 की सम्पूर्ण पाण्डुलिपि के शीघ्र तैयार हो जाने की आशा है।

ईश्वर संहिता की संशोधित पाण्डुलिपि के 10 अध्याय प्राप्त हो चुके हैं। मूलग्रंथ की प्रतिलिपि का सम्पादन कार्य चल रहा है।

त्वष्टीर्ण संहिता और *मरीचि संहिता* का मिलान कार्य प्रगति पर है।

शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता के प्रथम खण्ड का प्रतिलेखन और उसकी तीन पाण्डुलिपियों के साथ उसके मिलान का कार्य समाप्त हो गया है। नेपाली मूल की दो पाण्डुलिपियों की फोटो प्रतियां हाल ही में प्राप्त की गई हैं, उनके साथ मिलान का काम शुरू हो गया है। अनुवाद का प्रारूप तैयार किया जा रहा है।

निम्नलिखित ग्रंथों का काम रोक दिया गया है और वह सम्पादन अथवा प्रकाशन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है:

1. *बाधायन श्रौत सूत्र*
2. *जैमिनीय श्रौत सूत्र*
3. *जैमिनीय गृह्य सूत्र*
4. *बृहद्देशी* तृतीय खण्ड (आठ संगीत ग्रंथ)
5. *रागविबोध* (मध्यकालीन संगीत ग्रंथ)
6. *मतंगपार्श्व* (आठ संगीत ग्रंथ)

7. *अभिलाषितार्थचिन्तामणि* (वास्तुकला, कर्मकाण्ड आदि विषयक ग्रंथ)
8. *प्रतिमालक्षणसार समुच्चय* (वास्तुकला विषयक ग्रंथ)
9. *सौधिकागम* (वास्तुकला विषयक ग्रंथ)
10. *तंत्रसमुच्चय* (वास्तुकला, प्रतिमाविज्ञान तथा कर्मकाण्ड विषयक ग्रंथ)
11. *मथान भैरवतंत्र*
12. *तंत्रसारसंग्रह*

विष्णुधर्मोत्तरपुराण- चित्रसूत्र की पाण्डुलिपि प्राप्त हो चुकी है और उसके संशोधन का कार्य चल रहा है।

कृष्णगीति की अंतिम कैमरा-निर्मित प्रति तैयार की जा रही है।

कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के लिए चुने गए मूल ग्रंथों की सूची नीचे दी जा रही है :-

I. **मूल ग्रंथ (वैदिक साहित्य)**

क्र०सं०	ग्रंथ	सम्पादक
क.	**संहिता साहित्य**	
1.	*जैमिनीय सामवेद संहिता*	डॉ० सी० आर० स्वामिनाथन
ख.	**ब्राह्मण ग्रंथ**	
1.	*गोपथ ब्राह्मण*	डॉ० आर० पटेचाल
2.	*जैमिनीय ब्राह्मण*	प्रो० ई० आर० श्रीकृष्ण शर्मा
3.	*कण्वशतपथब्राह्मण* (प्रथम खण्ड प्रकाशित)	डॉ० सी० आर० स्वामिनाथन
ग.	**सूत्र साहित्य**	
1.	*आपस्तंब श्रौत सूत्र*	प० राधेश्याम शास्त्री
2.	*बौधायन श्रौत सूत्र*	डॉ० टी० एन० धर्माधिकारी तथा प० सी० जी० काशिकर
3.	*हिरण्यकेशी श्रौत सूत्र*	डॉ० जी० डी० नवडे
4.	*जैमिनीय गृह्य सूत्र*	प्रो० आसको पारपोला
5.	*जैमिनीय श्रौत सूत्र*	प्रो० आसको पारपोला
6.	*लाट्यायन श्रौत सूत्र*	डॉ० एम० जी० रानाडे
घ.	**लक्षण ग्रंथ (स्वर विज्ञान, मंत्रोच्चारण आदि)**	
1.	*मात्रालक्षणम्* (प्रकाशित)	डॉ० वेन हैवार्ड
ङ.	**संग्रह ग्रंथ**	
1	*कलचर एन एंथोलॉजी ऑफ टैक्स्ट्स रेलेटिंग टू इंडियन आर्ट्स*	डॉ० पी० एन० मिश्र

II. शिल्प ग्रंथ (कलाएं एवं सौंदर्यशास्त्र)

क. संगीत ग्रंथ (नृत्य, गीत, वाद्य)

1.	*दत्तिलम्* (प्रकाशित)	डॉ० मुकुंद लाठ
2.	*श्रीहस्तमुक्तावली* (प्रकाशित)	डॉ० महेश्वर नियोग
3.	*श्रीमतङ्गमुनिरचितबृहद्देशी* (दो खण्ड प्रकाशित)	डॉ० प्रेमलता शर्मा
4.	*नर्तननिर्णय*	प्रो० आर० सत्यनारायण
5.	*रिसाल-ए-राग दर्पण*	प्रो० शहाब सरमदी
6.	*नृत्यरत्नावली*	गुरु नटराज रामकृष्ण
7.	*चतुर्दण्डीप्रकाशिका*	प्रो० आर० सत्यनारायण
8.	*रागविबोध*	प्रो० रंगनायकी अय्यंगार
9.	*संगीतोपनिषत्सारोद्धार*	डॉ० एलिन माइनर
10.	*हृदय कौतुकम्*	प्रो० आर० सत्यनारायण
11.	*हृदय प्रकाश*	प्रो० आर० सत्यनारायण
12.	*संगीत मकरन्द*	डॉ० विजयलक्ष्मी
13.	*संगीत नारायण*	डॉ० मंदाक्रांता बोस
14.	*संगीत समयसार*	प्रो० आर० सत्यनारायण
15.	*संगीत सुधाकर*	प्रो० आर० सत्यनारायण

ख. नाट्यग्रंथ (नाट्यशास्त्र)

1.	*भरतभाष्य* (नान्यदेव रचित)	डॉ० प्रेमलता शर्मा
2.	*भाव प्रकाशन* (शारदातनय रचित)	प्रो० जे० पी० सिन्हा

ग. वास्तुग्रंथ (स्थापत्यकला)

1.	*अभिलषितार्थ चिन्तामणि* अर्थात् मानसोल्लास (सोमेश्वर देव रचित)	प्रो० लक्ष्मी ताताचार
2.	*अपराजितपृच्छा*	प्रो० एम० ए० ढाकी
3.	*जिन संहिता*	प्रो० एम० ए० ढाकी
4.	*काश्यप शिल्प*	प्रो० बूनो दाजां
5.	*मयमतम्*	प्रो० बूनो दाजां
6.	*प्रतिष्ठा-लक्षण-सारसमुच्चय*	डॉ० बेट्टिना बॉमर
7.	*राजपसनीय*	डॉ० ललिता कुमार
8.	*समरांगण सूत्रधार* (भोजरचित)	डॉ० पी० एन० भट्ट
9.	*सौधिकागम*	डॉ० बेट्टिना बॉमर
10.	*शिल्परत्नकोश*	डॉ० बेट्टिना बॉमर

11. *तंत्रसमुच्चय* — डॉ० के० के० राजा
12. *वास्तुविद्या* (विश्वकर्मा रचित) — डॉ० मुकुंद लाठ तथा डॉ० केजरीवाल

घ. मूर्ति ग्रंथ (प्रतिमा विज्ञान)

1. *कालिकापुराणे मूर्ति विनिर्देश:* — डॉ० विश्वनारायण शास्त्री
2. *साधनमाला* — डॉ० सातकड़ि मुखोपाध्याय

ङ. चित्र (पेंटिंग)

1. *विष्णुधर्मोत्तर पुराण - चित्रसूत्र* — डॉ० पारुल दवे मुखर्जी

च. अलंकार ग्रंथ (साहित्यशास्त्र)

1. *रसगंगाधर* — डॉ० आर० आर० मुखर्जी
2. *सरस्वती कण्ठाभरण* (भोजरचित) — डॉ० सुन्दरी सिद्धार्थ

III. आगम/तंत्र ग्रंथ

1. *अघोरशिवाचार्य पद्धति* — डॉ० एस० एस० जानकी तथा डॉ० रिचार्ड डेविस
2. *ईश्वर संहिता* — प्रो० लक्ष्मी तन्त्राचार
3. *मालिनी विजयोत्तर तंत्र* — कु० शारोन वार्ड
4. *मरीचि संहिता* — प्रो० एस० एन० मूर्ति
5. *मंथान भैरव तंत्र* — प्रो० मार्क डिक्जकोवस्की
6. *निःश्वासतत्व संहिता* — डॉ० बेट्टिना बॉमर
7. *शारदातिलक* — डॉ० ए० बी० खन्ना
8. *सूक्ष्मागम* — डॉ० एन० आर० भट्ट
9. *तंत्रसारसंग्रह* — डॉ० के० टी० पांडुरंगी
10. *स्वायंभुवसूत्रसंग्रह* — डॉ० पी० एस० फिलियोजा

IV. बौद्ध ग्रंथ

1. *शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता* — डॉ० रत्ना वसु

V. चिकित्सा ग्रंथ (आयुर्वेद)

1. *चिकित्सासार संग्रह* — डॉ० विश्वनाथ शर्मा
2. *नेत्र प्रकाशिका* — डॉ० विश्वनाथ शर्मा

VI. क्षेत्रीय ग्रंथ

1. *कविकर्ण रचित पाला* (प्रकाशित) — डॉ० विष्णुपद पाडा
2. *कृष्णगीति* — डॉ० टी० आर० स्वामिनाथन

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन

कलासमालोचन ग्रंथमाला कलाकोश प्रभाग की तीसरी निरन्तर चलने वाला कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 19वी शताब्दी के अंतिम दशको और 20वी शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों के उन पथप्रदर्शक भारत विद्या विशेषज्ञो तथा इतिहासविदो की मार्ग प्रशस्त करने वाली अग्रणी कृतियो का निर्वचन तथा विश्लेषण करना है जिन्होने भारतीय तथा एशियाई कलाओं के संबंध मे एक नए दृष्टिकोण की नींव डाली। जिसकी विशेषता दृष्टि की गहराई और विस्तार है। इस दिशा मे आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कलाकोश प्रभाग ने कुछ चुने हुए लेखको की कतिपय कृतियो के पुनर्मुद्रण/अनुवाद का कार्य प्रारम्भ किया है। चयन का आधार उनका अंतरसांस्कृतिक बोध, बहु-विषयक दृष्टिकोण तथा भाषा की कठिनाई के कारण अथवा मुद्रित न होने के कारण उनकी दुर्लभता है। इस विषय मे जो प्रारंभिक प्रकाशस्तम्भ चुने गए उनमे शामिल है पॉल मूरा, एस० ओल्डनबर्ग, विलियम स्टर्लिंग, आनन्द के० कुमार स्वामी आदि।

इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशन का कार्य 1988 मे कुछ पुस्तको के विमोचन के साथ प्रारम्भ हुआ और अब तक निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित की गई है :-

1. *राम लेजेंड एण्ड राम रिलीफ्स* — लेखक विलियम स्टर्लिंग
2. *दि थाउजंड आर्म्स अवलोकितेश्वर* — सम्पादक डॉ० लोकेश चन्द्र
3. *प्रिंसिपल्स आफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर* — लेखक : एलिस बॉनर
4. *इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिचुअलिटी* — लेखक प्रो० हुसैन नस्र
5. *सिलेक्टेड लेटर्स आफ रोमां रोलां* — सम्पादक क्लारिस डोर एवं मैरी लोरे ब्रोडर
6. *टाइम एण्ड ईटरनल वैल्यू* — लेखक जे० एम० मैकटैगे
7. *इन सर्च आफ ऐस्थेटिक्स फॉर पपेट थियेटर* — लेखक माइकल मैथ्के
8. *एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड लाइफ* — लेखक कार्मेल बर्कसन
9. *अडरस्टैंडिंग कुचिपुडी* — लेखक गुरु सी० आर० आचार्य तथा नर्तिका सरोजाई
10. *रिलीजन एण्ड दि एनवायरनमेंटल क्राइसिस* — लेखक प्रो० सैय्यद हुसैन नस्र
11. *एक्सप्लोरिंग इंडियाज लेकेड आर्टस* — लेखक डॉ० स्टेला क्रेमरिश
12. *हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र, खण्ड प्रथम,* — सम्पादक : डॉ० मुकुन्द द्विवेदी

इनके अतिरिक्त, अन्य खण्ड जो मुद्रणालय भेजे जा चुके है उनमे शामिल है (i) *दि डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर,* कोशकार : प्रो० नवीहादी ; (ii) *कर्नाटक द्रविड ट्रडीशन,* लेखक डॉ० आदम हार्डी (iii) *कॉन्सेप्ट आफ टाइम : एन्शेंट एण्ड मॉडर्न,* सम्पादक डॉ० कपिला वात्स्यायन ; (iv) *लूम एण्ड लूम टेक्नॉलॉजी: ए हिस्टो-बुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव,* लेखक : पेमा दोरजी।

कई अन्य खण्डो के प्रकाशन का कार्य विभिन्न अवस्थाओ मे है जिनमे से कुछ है *कोणार्कपुर,* लेखक पॉल मूरा, अनुवाद : ए० डब्लू० मैकडोनाल्ड *बाजुकाना टेम्पल बाराणसीपुर,* लेखक डी० मिलियोजा, *सिलेक्टेड राइटिंग्स आफ प्रो० सॉन्थीमर,* आदि।

आनन्द के० कुमारस्वामी की कृतियो का संग्रह

इस लम्बे चलने वाले कार्यक्रम के अन्तर्गत आनन्द केंटिश कुमारस्वामी की सभी कृतियो को विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप मे लेखक के प्रामाणिक संशोधनो के साथ लगभग 30 खण्डो मे प्रकाशित किया जाना है।

इस ग्रंथमाला के निम्नलिखित चार खण्ड मार्च, 1993 तक प्रकाशित किए जा चुके थे :

1. *सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनन्द कुमारस्वामी* — सम्पादक एलिन मूर (कनिष्ठ) तथा राम सी० कुमारस्वामी
2. *वॉट इज सिविलाइजेशन ?*

3. *टाइम एण्ड इंटर्निटी*
4. *एसेज ऑन अरली इंडियन आर्किटेक्चर* — सम्पादक : मिकाइल माइस्तर

आलोच्य अवधि के दौरान (1993-94) में, कुमारस्वामी के निम्नलिखित चार खण्ड प्रकाशित किए गए हैं:

1. *त्रिभुवन अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर* — सम्पादक : के० एन० अय्यंगार तथा रम पी० कुमारस्वामी
2. *पक्षन : एलेंज इन दि कास्ट कॉन्सटीट्यूशन* — सम्पादक : पाल श्रोडर
3. *विद्यापति पदावली*
4. *थर्टी सांग्स फ्रॉम दि पंजाब एण्ड काश्मीर* — सम्पादक : प्रेमलता शर्मा

दो अन्य खण्ड, अर्थात् *इन्कार्नेशन आफ नेचर इन आर्ट*, सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन, और *एसेज ऑन आर्किटेक्चरल थ्योरी*, सम्पादक : प्रो० मिकाइल डब्लू माइस्तर, भी प्रेस भेजे जा चुके हैं।

भावी कार्यक्रम

कलासमालोचन के प्रकाशन की ग्रंथमाला के दूसरे चरण में आधुनिक भारतीय भाषाओं के भारतीय साहित्यकारों, जैसे शिवराम कारन्थ, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृतियों को शामिल करने का प्रस्ताव है।

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश व कलाओं का इतिहास

कला विश्वकोश

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कलाओं का एक बहु-खंडीय विश्वकोश तैयार करने का एक बड़ा कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। इसका उद्देश्य पाठकों को सभी कलाओं से पूर्ण रूप से अवगत कराना है। इसमें यह मानकर चला गया है कि सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों को कलाएं मनुष्य के समुदाय के सम्मिलित सर्जनात्मक अनुभव हैं। इस विश्वकोश का उद्देश्य परम्परागत शब्दकोश अर्थों में एक संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध कराना नहीं, अपितु एक ऐसा कोश तैयार करना है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के बीच सम्पर्क, आदान-प्रदान व समन्वय का स्पष्ट चित्रण हो और मानवजाति द्वारा सम्मिलित रूप से अपनाई गई कलात्मक प्रक्रियाओं का आलेखन हो। अब तक इसकी कार्य प्रणाली एवं विधि-तंत्र का प्रश्न है, इसमें कलाओं के प्रति मूलतः भारतीय दृष्टिकोण अपनाकर एक नई उद्भावना प्रस्तुत की जा रही है। इस प्रकार अब तक पाश्चात्य पद्धति लागू रहने के कारण ऐसे ग्रंथों में जो असंतुलन उत्पन्न हो जाता था उसे दूर करने का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है।

इस संबंध में दो अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें इस परियोजना की रूपरेखा विकसित करने के लिए विदेशी तथा भारतीय विशेषज्ञों ने भाग लिया। मार्च, 1992 में आयोजित कार्यशाला में हुए विचार-विमर्श के आधार पर प्रस्तावित कला विश्वकोश की रूपरेखा तैयार की जा चुकी है और उसे टीका-टिप्पणी के लिए भारतीय तथा विदेशी विद्वानों के पास भेजा गया है, तत्पश्चात् प्रत्येक खण्ड की विषयवस्तु को अंतिम रूप दिया जाएगा।

कलाओं का इतिहास

भारत की मुद्रा टंकण कलाएं : भारत की मुद्रा टंकण कलाओं से संबंधित परियोजना विभिन्न युगों के सिक्कों में कलात्मक तत्वों के विकास को जानने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1. भारत तथा विदेशों में स्थित विभिन्न संग्रहालयों में संरक्षित, कलात्मक मूल्य के सिक्कों/मुद्राओं का दस्तावेजीकरण एवं प्रलेखन,

2. ऐसे सिक्को के बारे मे जानकारी तथा उनके चित्रों का संग्रहण;
3. सिक्को का कला के एक स्वतंत्र माध्यम के रूप मे स्वीकार करने की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए मुद्राशास्त्रीय तथ्यो का मूल्यांकन;
4. सिक्को तथा प्रतिमाओं के बीच पारस्परिक संबंधो की जाच करना,
5. मुद्रा शैली पर मुद्रण तकनीक के प्रभाव का निर्धारण करना; और
6. सिक्को द्वारा अभिव्यक्त की गई प्रतिमा संबंधी विशेषताओं का प्रलेखन करना।

इस परियोजना मे चार कालों का समावेश होगा, अर्थात् (1) प्राचीन काल : गुप्तकाल के अन्त तक : ईसवी सन् 600 तक; (2) पूर्व मध्यकाल : ईसवी सन् 600 से 1200 तक; (3) उत्तर मध्यकाल : ईसवी सन् 1200 से 1800 तक; और (4) आधुनिक काल। परियोजना की विस्तृत रूपरेखा कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व के कारमिकाइल प्रो० डॉ० बी० एन० मुखर्जी द्वारा तैयार की गई थी। प्रो० मुखर्जी भारत मे मुद्राशास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र में कार्य कर रहे है।

अब तक कुल मिलाकर 90,000 सिक्को का प्रलेखन कार्य पूरा हो चुका है और 1800 सिक्को को कला नमूनों के रूप में चुना गया है। आलोच्य अवधि मे, ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन), ऐशमोलियन (ऑक्सफोर्ड) और भारत कलाभवन (वाराणसी) मे उपलब्ध सिक्को का प्रलेखन कार्य हो चुका है। अब प्रलेखो का सम्पादन चल रहा है। इसी बीच परियोजना की अकादमिक रिपोर्ट के पांच अध्याय तैयार किए जा चुके हैं और उनका सम्पादन कार्य हो रहा है। अन्य संग्रहो में भी प्रलेखन कार्य प्रगति पर है।

व्याख्यान

वर्ष के दौरान, छः सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किए गए। ये भारत-एशियाई साहित्य, आगम, नृत्य और बौद्धधर्म विषयो पर लब्धप्रतिष्ठ विद्वानो द्वारा दिए गए।

इनमें से प्रथम, डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारक भाषण दिनांक 8 व 9 मार्च, 1994 को हैदराबाद स्थित केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान के उप-कुलपति प्रो० एस० के० वर्मा द्वारा दिया गया। इसके दो विषय थे: (1) सुनीति कुमार चटर्जी का भाषा तथा भाषा विज्ञान के विषय मे मत और (2) भारत मे बहुभाषावाद के विषय मे एक सामाजिक भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा प्रभाग कला कोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप मे कार्य करता है। इसका ध्यान पात्र और संदर्भ के बजाए भारत और एशिया की जनजातीय एवं ग्रामीण संस्कृतियो की समृद्ध और विविध रूप-रंगो मे उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियो पर केन्द्रित रहता है। विकीर्ण एवं मुख्य सांस्कृतिक आन्दोलनों मे प्रत्यक्ष एवं गौण रूप से परिवर्तित होते हुए, निरन्तरता और परिवर्तनशीलता की गत्यात्मकता ने जड़ीभूत एवं सापेक्षिक रूप से अधिक कठोरता से संहिताबद्ध परम्पराओं को जिन्हे शास्त्रीय कहा जाता है, पुनर्नवीकरण के लिए प्रोत्साहन दिया है। कलात्मक अभिव्यक्ति जीवन चक्र तथा जीवन संचालन का अभिन्न अंग है। यह अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप मे छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक रूपो और प्रकारो के मेलो और उत्सवो के माध्यम से सामूहिक तौर पर बारहो महीने होती रही है। आज भी ये मेले महोत्सव अपनी सजीवता और चहल-पहल के लिए तो खूब जाने-माने जाते है, पर अब तक उनको विश्व के समग्र रूप की सजीव निरन्तरता को अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता की बजाए अलग-अलग टुकड़ो मे ही देखा गया है।

जनपद सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान तथा अन्य कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। उन्हें पाठ्य परम्पराओं की अतिरिक्त या उपधारा नहीं समझा जा रहा है। हालांकि मौखिक परम्पराओं पर जोर दिया जा रहा है, पर लिखित परम्पराओं और सिद्धान्त पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा रही है। एक बार फिर सिद्धान्त पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, पाठ्य तथा मौखिक, शाब्दिक, दृश्य तथा गत्यात्मक सभी को एक लाक्षणिक पूर्ण के रूप में देखा जा रहा है, न कि समेकित किए जाने वाले अलग-अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रसार करने के मामले में *जन, लोक, देश, लौकिक, मौखिक* जैसे शब्दों को महत्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है :-

(क) **मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह :** इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाती हैं।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां :** दो दीर्घाओं की स्थापना : (1) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की प्रागैतिहासिक शैलकला प्रदर्शित की जाएगी और (2) आदि श्रव्य, जिसमें संगीत तथा संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में, दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों (आंख एवं कान) से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन :** ये कार्यक्रम आगे (1) लोक परम्परा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अंतर्गत विशेष स्थानों या मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **बाल जगत :** इन अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को ग्रामीण संस्कृतियों की समृद्ध परंपरा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

(ङ) **प्रयोगिक रंगशाला एवं स्टूडियो:** इसका उद्देश्य एक ऐसा स्थल उपलब्ध कराना है जहां मिलकर सामूहिक कार्यकलाप तथा नए-नए प्रयोग किए जा सकें। यहीं पर कार्यालय के आंतरिक प्रलेखन कार्य के लिए स्टूडियो की व्यवस्था है।

(च) **संरक्षण प्रयोगशालाएं :** इन प्रयोगशालाओं का कार्य कलाकृतियों तथा कला शिल्पों का संरक्षण करना है।

वर्ष 1993-94 में जनपद सम्पदा प्रभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

आलोच्य वर्ष के दौरान, जनपद सम्पदा प्रभाग में अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए। जैसे तीन बड़े अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, तीन महत्वपूर्ण प्रदर्शनियां लगाई गईं, गांधी जी के जीवन पर आधारित पुतलिका प्रदर्शन प्रस्तुत किए गए। चित्रकारियां, कशीदाकारी के नमूने एवं मुखौटे प्राप्त किए गए। भारत-फ्रांसीसी शैल-कला परियोजना प्रारम्भ की गई। एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान हुए तथा जनपद सम्पदा प्रभाग का स्थापना दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सामग्री

श्रीमती लोकमा दूथत द्वारा लगभग 1200 मीटर लम्बे कपड़े पर की गई सिमटने वाली (फड) चित्रकारियां और गांधी जी के जीवन पर भी ऐसी ही 25 मीटर लम्बी चित्रकारियां प्राप्त की गईं और फोटो पद्धति से उनका प्रलेखन किया गया।

अनुसंधान विधि प्राप्तियां

रावारी कशीदाकारी

रावारी जनजाति की स्त्रियों द्वारा की गई कशीदाकारी तथा मनकाकारी की सामग्री, अर्थात् कपड़े, जूतों का साज-सामान, दस्तावेज के लजावटी पर्दे, थैले आदि के 64 नमूने प्राप्त किये गए और उनके फोटो प्रलेखन तथा सूचक तैयार करने का काम पूरा किया गया। इस सामग्री के आधार पर एक प्रबन्ध (लम्बा निबंध) तैयार किया जा रहा है। यह छोटी परियोजना श्रीमती शारदा नायक की सौंपी गयी है।

मुखौटे

वर्ष 1994-95 में आयोजित की जाने वाली मुखौटा प्रदर्शनी की प्रारम्भिक तैयारी के रूप में, दक्षिण-पूर्व एशिया के साहित्य में मुखौटों की खोज का काम हाथ में लिया गया। प्रत्येक देश के बारे में चार्ट तैयार किए गए हैं जिनमें मुखौटों का प्रयोग करने वाले लोगों के निवास-स्थान, मुखौटों के कर्मकाण्डीय उपयोग तथा निर्माण के बारे में जानकारी दी गई है। साथ ही, इण्डोनेशिया से मुखौटों के 24 नमूने प्राप्त किये गये।

जावा, इण्डोनेशिया से प्राप्त मुखौटों का उपयोग करते हुए, ब्राउन विश्वविद्यालय (प्रॉविडेन्स, संयुक्त राज्य अमेरिका) के प्रोफेसर डॉ० लीन ग्रिग्स का भाषण कराया गया। उनके भाषण का विषय था : बाली की मुखौटा नाट्य- कला : मुखौटे, पात्र तथा कथानक परिकल्पना तथा परिकल्पनी भाव-रूप में मुखौटों के प्रयोग के बारे में सामान्य बातों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बाली के निवासियों के जीवन-संसार में मुखौटों के प्रयोग के बारे में बताया।

कलकत्ता के लोक गीत

कलकत्ता के लोक गीतों के विषय में एक प्रायोगिक अध्ययन की प्रगति दल द्वारा पूरा किया गया। पचास गीतों के ऑडियो टेप तथा उनके सम्बन्ध में एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है।

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेकविध प्रस्तुतियां तथा गोष्ठियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। दो स्थायी प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी जो विशेष विषयों तथा क्षेत्रों संबंधी अन्य कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम करेंगी। इन प्रदर्शनियों के नाम हैं :

1. आदि दृश्य और 2. आदि अंश।

आदि दृश्य दीर्घा में भारत की प्रागैतिहासिक शैल कला (रॉक आर्ट), तथा विश्व के अन्य भागों से प्राप्त प्रतिनिधिक नमूने प्रदर्शित किए जाएंगे। यहां यह बात बताया जाएगा कि शैल कला को एकमात्र 'कर्मकाण्ड' या 'जादूटोने' का ही सूचक नहीं समझा जाना चाहिए। यहां उन अनुकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा जो सर्वप्रथम, चित्रकारी या रेखांकन के मूल संदर्भ को सही करके प्रस्तुत करेंगी। दूसरे, उन अनुकृतियों को बिना सोचे समझे शिकारी जीवन, प्रारंभिक खेती तथा व्यवस्थित कृषि की विकास अवस्थाओं की ओर पीछे ढकेलते हुए उनका काल सही-सही बताने का प्रयत्न किया जाएगा। यहां इस कला को स्पष्ट रूप या सुबोध रूप में बताने की बजाए उसके तात्पर्यिक गुप्त संकेतों को जानने के लिए स्पष्ट किया जाएगा। पुरातात्त्विक स्थलों तथा कार्यक्रम आदि के संदर्भ में उस कला के असली अर्थ को समझने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही प्रागैतिहासिक कला और समकालीन जनजातीय कलाओं के पारस्परिक संबंध को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसी प्रकार आदिश्रव्य दीर्घा का कार्य भी भारत में संगीत के कालक्रमिक विकास को दिखाने के लिए प्राचीन वाद्य यंत्रों के संग्रह के प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह एक 'नाद आकाश' (साउंडस्पेस) के माध्यम से मौखिक संगीत और वाद्यों को अधिक महत्व देगी और जीवन के संचालन में नाद और संगीत के महत्व को दर्शाएगी। इस प्रकार संगीत को दिक् और काल के संदर्भ में संजीव करने का प्रयास किया जाएगा।

इन सामग्रियों को आगे चलकर इन दीर्घाओं में प्रदर्शित करने के उद्देश्य से, इनके संबंध में पर्याप्त मात्रा में शोधकार्य करने की आवश्यकता है। इस प्रकार स्थायी संग्रह भी शनै: शनै: अपना आकार लेते जा रहे हैं।

भारत - फ्रांसीसी शैल-कला परियोजना

भारत-फ्रांसीसी शैल कला परियोजना ने अपना प्रथम चरण 8 दिसम्बर, 1993 को झीरी (भोपाल) में प्रारम्भ किया। प्रो० लोब्लाचे के नेतृत्व में एक दल ने एक लेजर थिओडोलाइट तथा अत्यन्त कुशल कैमरे का प्रयोग करते हुए वहां की सामान्य स्थलाकृति, ग्राफ्स, स्मोक नदी तथा प्रतिमाओं से संबंधित तथ्य इकट्ठे करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का भारतीय दल जलरंगों अनुकृतियां तैयार करने और परीक्षणात्मक खुदाई के काम में संलग्न रहा। यद्यपि फ्रांसीसी दल की रिपोर्ट आने में अभी कुछ समय लगेगा लेकिन खुदाई के प्रारंभिक निष्कर्षों से यह पता चल गया है कि झीरी शैलकला की दृष्टि से भारत में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल है। यहां लघु पाषाण खंडों, अस्थियों, जानवरों की जली हुई हड्डियां और लाल रंग के जो लक्ष्य मिले हैं वे काफी आशाजनक हैं। झीरी में सबसे पुरानी बस्ती और वहां से प्राप्त प्राचीनतम चित्रकारियों का काल संभवत: आज से लगभग 30,000 वर्ष पहले रहा होगा। किन्तु काल का अंतिम रूप से निर्धारण तो फ्रांसीसी दल द्वारा किए जाने वाले रूपों के विश्लेषण से ही होगा। वहां ताबे के बने हुए अलंकृत सिक्के भी मिले हैं जो ईसा-पूर्व तीसरी या चौथी शताब्दी के हो सकते हैं। वहां मिली इन चीजों से पता चलता है कि आगे चलकर प्रारंभिक तथा परवर्ती ऐतिहासिक काल में लोग इन शैल कुटीरों में रहे थे और उनमें उन्होंने चित्रकारियां बनाई थीं।

आदि श्रव्य : नाद दीर्घा

नाद की संकल्पना तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से आदि श्रव्य दीर्घा की योजना के अनुसार, एक दीर्घा स्थापित करने के प्रयास जारी रहे। इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करने के लिए प्रारंभिक कदम के रूप में, साहित्य में खोज का कार्य हाथ में लिया गया और समुदाय तथा अंचल के अनुसार संगीत के वाद्य यंत्रों का संग्रह बनाने के लिए डेटाबेस तैयार किया गया। इस कार्य को प्रारंभ कर दिया गया है।

सन् 1994 में नाद पर एक संगोष्ठी आयोजित करने की योजना बनाई गई है। इस प्रस्तावित संगोष्ठी के लिए विभिन्न देशों के विद्वानों/विशेषज्ञों से सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है। इस संगोष्ठी से नाद दीर्घा की संकल्पना को अंतिम रूप देने में सहायता मिलेगी।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन

लोक परम्परा

अब तक जनजातीय और लोक संस्कृति पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्र की दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक, इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों में जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की समग्रता का नहीं। अन्यथा समग्र प्रयास एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और परंपरागत संस्कृतियों की लाश करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन एकल आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमित स्थान में एक बहुआयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पर्वों तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्माण्ड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला

अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार से संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक है और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय ग्रामीण तथा शहरी परम्पराओं, मौखिक या लिखित के पारम्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारम्भ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय चिकित्सा/आयुर्विज्ञान, हिमालय तथा समुद्र विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्परा की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

(1) डॉ० डी० आर० पुरोहित के द्वारा "गढ़वाल के धार्मिक लोक रंगमंच : पाण्डव लीला, खेलवाड़ी और बागड़वाई" पर लोक रंगमंच का अध्ययन पूरा कर लिया गया, उनकी रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है।

(2) "पंचमहाभूतों के विषय में विश्वकर्मा शिल्पी के विचार" विषय पर डॉ० जॉन ब्रॉवर की रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है।

(3) "हिमाचल प्रदेश के गद्दी समुदाय में दिक् और काल की संकल्पना", विषयक आंतरिक परियोजना पर डॉ० मौलि कौशल द्वारा क्षेत्र कार्य का प्रथम चरण पूरा कर लिया गया है।

(4) "पूर्वी लद्दाख के घुमन्तर समुदायों में बुनाई परम्परा" पर कु० मोनिश अहमद द्वारा क्षेत्र कार्य पूरा किया जा चुका है।

क्षेत्र सम्पदा

कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह की शक्तियां काम करती रही हैं। और उन्होंने केंद्र स्थान का काम किया है और स्थान की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्होंने गतिशीलता और पारस्परिक क्रिया व प्रभाव को प्रेरित किया है। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद यहां का भौतिक या भावनात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल निर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसंपूर्ण नहीं, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी 'इकाइयों' के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक तथा सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जिनके नाम हैं : ब्रजनाथद्वारा और बृहदीश्वर।

1. ब्रजनाथद्वारा परियोजना

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के श्री श्रीवत्स गोस्वामी के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सात मॉड्यूल हैं (1) बहुभाषी ग्रंथसूची, (2) भौगोलिक प्राचल (पैरामीटर) तथा अर्थ, (3) स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्ष, ऐतिहासिक विश्लेषण सहित, (4) मंदिर एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में, (5) मौखिक परम्पराओं का प्रलेखन, (6) ब्रज में मंदिर संरचना का आर्थिक-सामाजिक स्वरूप, और (7) कला, संगीत, नृत्य तथा नाट्य प्रणाली।

इन योजनाओं में से निम्नलिखित चार में हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है -

ग्रंथसूची

सीमित प्रसार के लिए प्रथम खण्ड तैयार करने के उद्देश्य से 3000 प्रविष्टियों वाली एक सूचिपरक बहुभाषी ग्रंथसूची के सम्पादन तथा परस्पर सदर्भ निर्देश का कार्य सम्पन्न किया गया।

भूमिका

इस उप-मॉड्यूल मे, बंगला लिपि मे उपलब्ध तीन मूल संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी तथा अंग्रेजी मे अनुवाद करने का काम हाथ में लिया गया था। ये ग्रंथ हैं : *नाट्यचंद्रिका, भक्तिरसामृतसिन्धु* और *उज्ज्वलनीलमणि* इन में से *भक्तिरसामृतसिन्धु* का टीका के साथ अनुवाद कार्य डॉ० प्रेमलता शर्मा ने पूरा कर दिया है। यह खण्ड प्रकाशन के लिए तैयार है। इसी ग्रंथ के अंग्रेजी अनुवाद को डेविड हेबरमैन द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है। जैसा कि वृन्दावन के श्रीचैतन्य प्रेम संस्थान ने बताया है, *उज्ज्वलनीलमणि* के अनुवाद का पहला प्रारूप नील डेमोनिको द्वारा तैयार किया जा चुका है।

रूपवाणी

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के पास ऑडियो तथा वीडियो प्रलेखन (कैसेट) का एक काफी बड़ा संग्रह है। पिछली रिपोर्ट मे इन कैसेटों के विषय मे उल्लेख किया गया था। इस संस्थान द्वारा नित्य-पूजा उत्सव, कीर्तन के ऑडियो तथा वीडियो प्रलेखन का कार्य बराबर किया जाता है। यह निश्चय किया गया कि श्री चैतन्य प्रेम संस्थान राधाकृष्ण मंदिर मे आयोजित उत्सवो के दो घंटो की वीडियो रेकार्डिंग के सम्पादित कैसेट तथा यू-मैटिक फॉरमैट मे वृन्दावन के एक मंदिर की वर्ष भर की गतिविधियो की रेकार्डिंग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को देगा और इसी प्रकार रासलीला, होली, कीर्तन तथा समाज कार्यक्रमो के ऑडियो टेप इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संग्रह के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे।

स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्ष, ऐतिहासिक विश्लेषण सहित

इस मॉड्यूल के अन्तर्गत हुई प्रगति की समीक्षा की गई। गोविन्द देव, हरिदेव तथा जुगलकिशोर के तीन मंदिरों के चित्र/नक्शे बनाने का काम पूरा हो गया है। मदनमोहन मंदिर के लिए स्केच ले लिये गए है। इन स्थापत्य कलात्मक चित्रों/नक्शो का उपयोग करते हुए गोविन्द देव मंदिर और अन्य मंदिरो पर एक प्रबंध (ग्रंथ) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मे तैयार किया जाएगा। इसी प्रकार डॉ० आर० नाथ द्वारा 16वीं तथा 17वीं शताब्दी के मंदिरो के शैलीगत अध्ययन से उत्पन्न हुई सामग्री के आधार पर स्थापत्य कला संबंधी पारिभाषिक शब्दो का एक कोश तैयार किया जा रहा है।

मंदिर : एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के सहयोग से किए गए साझी कला के अध्ययन के फलस्वरूप श्री अरीम कृष्ण दत्त द्वारा *इवनिंग क्लैसमेट : ए टेम्पल ट्रैडिशन ऑफ साझी इन वृन्दावन* शीर्षक से एक प्रबंध लेख तैयार किया जा चुका है। यह स्टर्लिंग पब्लिशर्स के साथ मिलकर प्रकाशित किया जा रहा है। पुस्तक का शीघ्र ही विमोचन किए जाने की आशा है।

मौखिक परम्परा

इस मॉड्यूल के अंतर्गत डॉ० रक्षा द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा की गई। उन्होने क्षेत्रकार्य पूरा कर लिया है। प्रश्नावली के माध्यम से इकट्ठे किए गए तथ्यो के आधार पर एक प्रबन्ध तैयार किया जाएगा। जून, 1994 तक इस प्रबंध के प्रस्तुत किए जाने का लक्ष्य रखा गया है।

जीवन्त परम्परा

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लान मे 23 मार्च, 1994 को "भ्रमरगीत" (नृत्यनाटिका) की प्रस्तुति की गई। "भ्रमरगीत" का प्रसंग *श्रीमद्भागवत* मे आता है जहां कृष्ण के ज्ञान विचक्षण दूत उद्धव और कृष्ण कन्हैया की प्रेमदीवानी गोपियो के बीच संवाद प्रस्तुत किया गया है। "भ्रमरगीत" मोक्ष प्राप्ति के दो भिन्न-2 मार्गों का विवेचन है जिसमें उद्धव ज्ञान मार्ग का बखान करते है तो गोपियां अपने भक्तिमार्ग पर अडी है। सूरदास, नन्ददास, आदि जैसे

कवियों ने हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत के प्रसंग को अपनाया है। "भ्रमरगीत" पर आधारित संगीतनृत्य प्रस्तुति के निर्देशन एवं संगीत रचना का कार्य श्रेष्ठ संगीतज्ञ तथा संस्कृत विदुषी डॉ० प्रेमलता शर्मा द्वारा किया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की डॉ० रजना श्रीवास्तव ने कत्थक शैली में नृत्य प्रस्तुत किया. प्रेस ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। डॉ० प्रेमलता शर्मा ने भाव गाम्भीर्य एवं स्वरमाधुर्य की परंपरा सूरदास के साथ यह कार्यक्रम तैयार व प्रस्तुत किया।

2. बृहदीश्वर परियोजना

ग्यारहवीं शताब्दी के चोल मंदिर का लम्बे समय तक चलने वाला यह अध्ययन कार्य 1989 में प्रारम्भ किया गया था.

इस परियोजना के समन्वयकर्ता डॉ० आर० नागस्वामी हैं और इसमें निम्नलिखित मॉड्यूल शामिल हैं (1) मौखिक स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची, (2) पुरालेखों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री (3) पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन, (4) मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं भित्तिचित्रों का अध्ययन, (5) आगमों और जीवन्त अस्तित्व के संदर्भ में वास्तु तथा शिल्प पक्षों का अध्ययन (जिससे जीवंत अस्तित्व का मॉड्यूल बन सके) (6) भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक/अतिभौतिक स्तर से संबंधित अध्ययन, अर्थात्, पूजा तथा पर्वों की विभिन्न अवस्थाओं का प्रलेखन, (7) संगीत तथा नृत्य की परम्परा का सम्पूर्ण सर्वेक्षण, और (8) 18 वीं तथा 19वीं शताब्दियों के दौरान तंजावुर तथा बृहदीश्वर मंदिर का सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिस्थितिक इतिहास।

वर्ष 1993-94 के दौरान हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :-

बहु-भाषी ग्रंथसूची

परस्पर संदर्भ-निर्देश के लिए 1000 संदर्भों की सांख्यिकीय ग्रंथसूची की जांच की गई

एक उप-मॉड्यूल के रूप में, सरस्वती महल पुस्तकालय की सचित्र पाण्डुलिपियों का फोटो-प्रलेखन कार्य श्री वी० के० रामामूर्ति द्वारा किया गया। ऐसी लगभग 28 पाण्डुलिपियां ली गई अर्थात् तंजावुर पेंटिंग्स, हिन्दू पौराणिक चित्र, दक्षिण भारतीय संगीत नायक, तंजावुर सैनिक परंपरा, चित्र रामायण, अष्टलक्ष्मी, प्रदोष चन्द्रोदय, नायक-नायिका भाव की सचित्र पाण्डुलिपियां, मराठी की पाण्डुलिपियां, ऋग्वेद पाण्डुलिपियां, शकुन शास्त्र, भावरत्न रामायण। इस उप-मॉड्यूल से 800 स्लाइडें तैयार की गई। अनुभाग द्वारा स्टोर प्राप्त करने के लिए कुछ लघु चित्रों का भी छायांकन किया गया।

पुरालेखों संबंधी सामग्री

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण मैसूर द्वारा भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार पुरालेख सामग्री के अध्ययन में प्रगति इस प्रकार हुई 61 उत्कीर्ण लेखों के लिए ग्रंथ पाठ और 80 उत्कीर्ण लेखों का लिप्यंतरण तैयार किया गया। मराठी तथा तमिल के 40 नए उत्कीर्ण लेखों की प्रतिलिपियां तैयार की गई। पुरालेखों की मुद्रणित (छपा) प्रतिलिपियों को मद्रास में आयोजित प्रदर्शनी 'अवनि से अनन्त' में प्रदर्शित किया गया।

स्थापत्यकलात्मक रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन

स्थापत्यकलात्मक रेखाचित्रों पर इकोले फ्रांसेज़ डि एक्सट्रीम ओरिएंट (ई० एफ० ई० ओ०) पांडीचेरी के प्रो० पियर पिशर तथा श्री अनूप दवे द्वारा तैयार किया गया आलेख (पुस्तक) पांडीचेरी में छप रहा है। जैसा कि पिछली रिपोर्ट में कहा गया है बृहदीश्वर मंदिर में सर्वत्र और अन्य देव स्थानों में मंदिर भवन में उपलब्ध सभी प्रतिमाओं का फोटो-प्रलेखन कार्य कु० एलहरनौल्ट द्वारा पूरा किया जा चुका है। मूर्तियों/चित्रकारियों की स्थिति का छायांकन किया गया है और उन्हें भूमि के नक्शे पर दिखाया गया है। मुख्य देवालय तक ले जाने वाली सीढ़ियों के प्रकारों पर अंकित दृश्य उठानों पर दिखाए गए हैं।

पाठ सहित छायाचित्र मंदिर संबंधी आलेख के अनुपूरक खण्ड के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

भित्तिचित्र

श्री विनय बहल ने चोल तथा नायक काल की जो पारदर्शियां (ट्रांसपेरेंसीज़) तैयार की थी उनमे से दस स्लाइडे चुनी गई और प्रदर्शनी मे रखे जाने के लिए उनसे बडे चित्र तैयार किए गए। इसके अतिरिक्त, डॉ० आर० नागस्वामी ने संगोष्ठी मे इन चित्रकारियों पर भाषण दिया।

मंदिर : एक जीवन्त अस्तित्व के रूप में

पिछली रिपोर्ट मे, एक फिल्म बनाने के लिए *पड़गोपन* संग्रह मे से फिल्मे चुनने के बारे मे बताया गया था। तदनुसार एक सम्पादित फिल्म तैयार की गई। "मंदिर महोत्सव मे कांची परमाचार्यल" नामक फिल्म मद्रास मे बृहदीश्वर विषयक संगोष्ठी के अवसर पर दिखाई गई। यह फिल्म बहुत पसंद की गई और दर्शकों की मांग पर एक बार फिर मद्रास मे ही दिखाई गई।

संगीत और नृत्य की परम्परा का प्रलेखन

तेवरन गायन पर एक कार्यशाला "सम्प्रदाय" नामक संस्था के सहयोग से मद्रास मे आयोजित की गई। इसका उद्देश्य विभिन्न मंदिरो के ओडुवारो तथा अधिनामो द्वारा गाए गए तेवरन का प्रलेखन करना था। तमिलनाडु के सभी भागो से आए चौतीस ओडुवारो ने इसमे भाग लिया। भिन्न-2 मंदिरो मे गाए जाने वाले तेवरन के रेकार्ड तैयार किए गए और प्रत्येक ओडुवार का साक्षात्कार लिया गया। इस कार्यशाला की सविस्तर रिपोर्ट तैयार की गई और 45 टेप तथा 33 स्पूल भी तैयार किए गए। एक आलेख भी तैयार किया जा रहा है।

श्री किट्टप्पा पिल्लै ने देवदासियो की नृत्य परम्पराओं पर एक शोध-पत्र पढ़ा। श्री पिल्लै एक ऐसे गुरू है जिन्होने अनेक नर्तकी तथा नृत्यांगनाओं को प्रशिक्षित किया है। उन्होने बृहदीश्वर विषयक संगोष्ठी मे अपने शिष्यो/शिष्याओं के साथ नृत्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम घ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुतलियो, पहेलियो तथा खेलो जैसे विभिन्न कार्यकलापो के माध्यम से बच्चो को जनजातीय तथा ग्रामीण कला की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है जो इस समय स्कूल पाठ्यक्रम मे शामिल नही है।

पुत्तलिका-कला

साहित्य की खोज और ग्रंथ सूची

छाया पुतलिका साहित्य की 600 बहुमूल्य प्रतिलिपियो की एक छोटी पुस्तिका सीमित वितरण के लिए छपाई गई।

थिएटर संबंधी कार्यशाला

बाल भवन के सहयोग से एक कार्यशाला 18 और 29 मई, 1993 तक बाल भवन परिसर मे आयोजित की गई, बच्चे ने इस शिविर मे भाग लिया। इसमे बच्चे को डंडे व दस्ताने वाली पुतलिया तैयार करना सिखाया गया और अन्तिम दिन उन्होने "प्रदूषण" विषय पर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका आलेख उन्होने ही तैयार किया था। इस कार्यक्रम को बाल भवन तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियो तथा बाल भवन के शिविर मे शामिल होने वाले बच्चो ने देखा। कार्यशाला के दौरान, गंदी बस्तियो तथा जनिक स्कूलो के बच्चे द्वारा लिए गए फोटोग्राफो की एक लघु प्रदर्शनी "दृष्टि" बाल भवन सभागार को दीर्घा मे श्री रवि चोपडा की सहायता से लगाई गई।

पुत्तलिका थिएटर के प्रदर्शन

इशारा पपेट थिएटर के श्री ददी पुदुमजी द्वारा 2, 5, 6, 7 और 9 अक्तूबर, 1993 को "सत्य की प्रतिमाएं" नामक पुत्तलियों का खेल प्रस्तुत किया गया। इस खेल में लयबद्ध संगीत के साथ श्री ददी पुदुमजी ने स्वांग, पुतलियों, मुखौटों का इस्तेमाल किया था। इन कार्यक्रमों को बहुत सराहा गया। समाचारपत्रों/पत्रकों से कुछ उद्धरण नीचे दिए जा रहे हैं:-

"*सत्य की प्रतिमाएं* कार्यक्रम ने एक ऐसे विषय में सुखद ताजगी भर दी जो वर्षों की साधना तथा श्रद्धा से उत्पन्न की थी। हालांकि भारतीय पुतलि परंपराओं के विशुद्धिवादी संरक्षकों को नाराज करने के लिए इस प्रयोग में काफी कुछ था, पर इस कार्यक्रम ने निस्संदेह यह निरूपित कर दिया कि इस माध्यम में भी विषय को संवेदनशीलता तथा कालीनता के साथ प्रस्तुत करने की जबर्दस्त क्षमता है।"

- दि पायनियर

12 अक्तूबर, 1993

"*सत्य की प्रतिमाएं* एक जीवन का अत्यन्त समकालीन वृत्तांत है जो हमारे लिए एक इतिहास होने के साथ-साथ पुराण कथा भी है। तेज गति से कुशलता पूर्ण संचालन से ददी पुदुमजी और उनकी मंडली ने एक ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो कभी मर्मस्पर्शी तो कभी कटुव्यंग्यपूर्ण था। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा प्रायोजित यह प्रदर्शन सत्य की प्रतिमाएं गांधी जी के जीवन संदेश से संबंधित परियोजना का एक हिस्सा है।"

-डायरी, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

10 अक्तूबर, 1993

अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

1. सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध

सांस्कृतिक पहचान और विकास विषय पर विशेषज्ञों की बैठक संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनाए जा रहे विश्व सांस्कृतिक दशक की परिधि में, यूनेस्को के तत्वावधान के अन्तर्गत 19 से 23 अप्रैल, 1993 तक नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में हुई। आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भारत, इंडोनेशिया, ईरान, मलेशिया, नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड तथा तुर्की के प्रतिनिधियों ने इस बैठक में भाग लिया। विश्व दशक सचिवालय (यूनेस्को-पेरिस) से एक प्रतिनिधि तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू० एन० डी० पी०) से भारत के निवासी प्रतिनिधि ने भी भाग लिया।

विशेषज्ञों ने अपने-अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए जो सांस्कृतिक पहचान और विकास विषयक सैद्धांतिक पक्षों से लेकर भिन्न-भिन्न क्षेत्रगत परिस्थितियों में क्षेत्र विशेष के अध्ययन तक व्यापक रूप से संबंध थे। विभिन्न सत्रों के मूल विचारणीय विषय थे (क) विश्वजनीनता पर पुनर्विचार, (ख) सांस्कृतिक पहचान की जांच, (ग) विकास संबंधी विचारधारा, (घ) विकास मॉडलों की पहचान। अंतिम सत्र में, विशेषज्ञों ने दो सिफारिशें की, जिनमें से पहली संस्थाओं, राष्ट्रीय सरकारों तथा संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट एजेंसियों के लिए थी, और दूसरी इसी विषय पर और विचार-विमर्श करने को समर्थन देने के लिए यूनेस्को के लिए थी।

समापन सत्र में, प्रतिनिधियों ने एक 27-सूत्रीय सिफारिश की जो (क) विद्वानों, (ख) संस्थाओं, (ग) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा (घ) यूनेस्को को संबोधित थी।

2. बृहदीश्वर : स्मारक तथा जीवन्त परम्परा

बृहदीश्वर परियोजना पर एक संगोष्ठी, जिसका शीर्षक था "बृहदीश्वर : स्मारक तथा जीवन्त परम्परा", इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के आदेश से 12 से 15 अक्तूबर, 1993 तक तंजावुर में आयोजित की गई। संगोष्ठी

का उद्देश्य परियोजना के संबंध में दक्षिण के विद्वानों की राय/प्रतिक्रियाएं जानना था और यदि आवश्यक हो तो उसमें सुधार करना था। संगोष्ठी का उद्घाटन भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन द्वारा 12 अक्तूबर, 1993 को किया गया। इसकी अध्यक्षता प्रख्यात इतिहासकार डॉ० एस० गोपाल ने की।

नीचे श्री वेंकटरामन के भाषण का कुछ अंश उद्धृत किया जा रहा है।

"इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रारम्भ की गई बृहदीश्वर परियोजना में भाग लेते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

बृहदीश्वर मंदिर के समान और कोई दूसरा ऐसा स्मारक या परियोजना नहीं है जो कला रूपों तथा अनुभवों के समेकित अध्ययन के लिए इतना उपयुक्त हो। ऐसी परियोजना प्रारम्भ करने और विद्वानों के सहयोग से विभिन्न पक्षों पर यह संगोष्ठी आयोजित करने के लिए मैं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और उसकी चुस्तदुरुस्त सचिव श्रीमती कपिला जी को बधाई देता हूं।

यहां उन अनेक समस्याओं की ओर संकेत करना समीचीन होगा जो इस तरह का कार्य करते हुए इस परियोजना के कार्यकर्ताओं के सम्मुख आए। एक बात अवश्य कहूंगा कि अब समय बदल गया है और मंदिर संबंधी कर्मकांड से संबद्ध अनुष्ठान और क्रियाकर्म भी परिवर्तित हो गए हैं। इसलिए यह कहना बड़ा कठिन है कि बृहदीश्वर मंदिर बल्कि अन्य सभी प्राचीन मंदिरों में प्रचलित वर्तमान आगम प्रणाली वही है जो राज राज प्रथम के समय में अथवा चोल राजाओं के शासन काल में प्रचलित थी।

इस बात का संकेत मैं केवल यह बताने के लिए कर रहा हूं कि परियोजना में संलग्न व्यक्तियों को अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करने से पहले अनेक बाधाओं तथा अड़चनों को दूर करना होगा। उस समय की प्रामाणिक सामग्री का अभाव भी एक बड़ी बाधा है।

यह स्पष्ट है कि विषय बहु-पक्षीय तथा समृद्ध है। और इसके विभिन्न पक्षों का विस्तृत अध्ययन भी किया जा सकता है, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि सहानुभूति एवं सूझबूझ के साथ गहराई से अध्ययन किया जाए। मुझे विश्वास है कि यह संगोष्ठी इस चुनौती का सामना कर सकेगी और इस पर विजय प्राप्त कर सकेगी।

मुझे प्रसन्नता है कि कपिला जी ने यह संगोष्ठी इतनी तत्परता से आयोजित कर ली है। इसकी परिकल्पना एक सर्वथा ऐसी परियोजना के रूप में की गई है जो अनुसंधान तथा अध्ययन के भिन्न-भिन्न सूत्रों को समेकित करेगी और फिर उस अनुभूति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करेगी जो इन सभी सूत्रों से परे है।

मुझे इस प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए बड़ी खुशी हो रही है।

मैं इसकी सम्पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।"

विभिन्न विषयों के विद्वानों, इतिहासकारों, पुरातत्वज्ञों, पुरालेख शास्त्रियों, संगीतज्ञों तथा नृत्य विशेषज्ञों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के सत्र निम्नलिखित विषयों के अनुसार विभाजित थे :-

i) *स्मारकों का प्रलेखन* : मंदिर के स्थापत्य, पुरातात्विक तथा प्रतिमा वैज्ञानिक पक्षों पर विचार-विमर्श के अतिरिक्त, पुरालेखात्मक तथ्यों की दृष्टि से भी मंदिर के विवरण पर चर्चा की गई।

ii) *प्रत्यक्ष ज्ञान* : इस सत्र में पुरालेखात्मक तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए, तब चोलकाल में और आज भी मंदिर में अपनाए जाने वाले कर्मकांडों के बारे में आगम विशेषज्ञों तथा सम्प्रदाय कलाकारों द्वारा चर्चा की गई। इस प्रकार नित्यपूजा, तथा उत्सव, अर्चना में देवदासियों, मंदिर की शोभायात्रा के नादस्वरम् और ओदुवारों के प्रशिक्षण के विषय में विचार-विमर्श किया गया। नादस्वरम् का निष्पादन श्री० वेंकैया पन्ना द्वारा प्रस्तुत किया गया।

iii) *निर्वचन* : इस सत्र में पढ़े गए कुछ शोध पत्रों के विषय थे : चोल शिलालेख, शिलालेखों/ उत्कीर्ण लेखों का काल निर्णय, प्रतिमा विज्ञान, मंदिर की स्थापत्य तथा अर्थ, नृत्य परम्पराएं, चोल कालीन कांस्य प्रतिमाएं, मंदिर संगीत तथा कश्मीर शैव धर्म की प्रासंगिकता।

संगोष्ठी के हर दिन शाम को कार्यक्रम आयोजित किए गए। पहले दिन, बृहदीश्वर के भित्तिचित्रों पर आधारित एक "भित्ति चित्र" वार्ता हुई, जिसके वक्ता थे डॉ० आर० नागस्वामी। दूसरे दिन, सिरकाजी संबंधम का तेवरम गायन हुआ और "मंदिर महोत्सव मे कांची परमाचार्यत" विषय पर फिल्म दिखाई गई। तीसरे दिन, श्री धर्मपुरम स्वामिनाथन ने तेवरम भजन गाए और तंजवुर किट्टप्पा पिल्लै ने अपने शिष्यो के साथ मिलकर "देवनृत्त" नामक नृत्य प्रस्तुत किया।

अंतिम सत्र मे, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की आचार्या डॉ० कपिला वात्स्यायन ने संगोष्ठी के विभिन्न विषयो पर हुए विचार विमर्श को संक्षेप मे प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि बृहदीश्वर परियोजना मॉड्यूल के साथ उनका क्या संबंध है। कुछ विद्वानों को संगोष्ठी पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया। तीन विद्वानों, अर्थात् ई० एफ० ई० ओ० पांडीचेरी के श्री पी० पिशर्ड, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संयुक्त महानिदेशक डॉ० के० वी० रमेश और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ० चम्पकलक्ष्मी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वे बृहदीश्वर पर आयोजित इस बहु-आयामी संगोष्ठी में भाग लेकर और विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानो के साथ तथा आगम ग्रंथो के पारम्परिक विशेषज्ञो एव व्यावसायिक/सक्रिय कलाकारो के साथ विचार विनिमय करके बहुत लाभान्वित हुए है। संगोष्ठी मे प्राप्त अनुभव बहु-पक्षीय बृहदीश्वर मंदिर को समझने मे ही सहायक सिद्ध नहीं हुआ है अपितु उसने निर्वचन के लिए नए विचार भी दिए है।

तमिलनाडु सरकार के मुख्य सचिव श्री टी० वी० वेंकटरामन ने समापन भाषण देते हुए इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा एगमोर स्थित सरकारी संग्रहालय को बधाई दी। उन्होंने बताया कि वे बचपन से ही मंदिर से परिचित है और इस विशाल स्मारक के अध्ययन मे उन्हे तभी रुचि उत्पन्न हो गई थी। उन्होंने महसूस किया कि मंदिर के विभिन्न पक्षो को समझने मे यद्यपि अनेक समस्याएं आती है तथापि इस महत्वपूर्ण परियोजना पर शोध कार्य करना कालोचित है क्योंकि हमारे समाज मे बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे है और समय-समय पर अपनी समृद्ध धरोहर पर दृष्टिपात करने और उसे वर्तमान काल से सबद्ध करना बहुत जरूरी है। उन्होंने "अघोर शिवाचार्य पद्धति" नामक एक आगम ग्रंथ के डॉ० एस० एस० जानकी द्वारा किए गए अनुवाद का भी विमोचन किया।

3. शैलकला पर विश्वस्तरीय सम्मेलन

शैल कला पर एक विश्वस्तरीय सम्मेलन 29 नवम्बर से 7 दिसम्बर, 1993 तक यूनेस्को के तत्वाधान मे आयोजित किया गया। 15 देशों के विशेषज्ञो ने विचार-विमर्श मे भाग लिया। भाग लेने वाले देश थे : अर्जेन्टीना, आस्ट्रेलिया, बोलिविया, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इटली, कीनिया, रूस, सऊदी अरब, स्विटजरलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका। सम्मेलन नौ सत्रो मे विभाजित था जिनके विषय थे : (क) विश्वस्तर पर शैल कला को समझना, (ख) देशानुसार रिपोर्ट (ग) अन्तरसांस्कृतिक तुलना, (घ) पर्यावरण प्रबंध, संरक्षण, प्रलेखन, (ङ) वर्गीकरण, कालक्रम, मानवीकरण, (च) सदर्भ विचार (छ) रूप, विषय-वस्तु तथा निर्वचन, (ज) कृत्रिम बुद्धि तथा शैल कला अनुसंधान, और (झ) शैल कला की विश्व दीर्घा।

यह सम्मेलन मानव जाति की सांस्कृतिक धरोहर के रूप मे पुरा-काल के अन्तर्गत मूल्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने मे सहायक सिद्ध हुआ। अधिकतर भाग लेने वाले प्रतिनिधियो ने महसूस किया कि यह पहला अवसर था जब शैल कला विषयक कोई सम्मेलन विषय को विश्वव्यापी परिप्रेक्ष्य मे समझने के प्रयास के साथ प्रारंभ हुआ। चर्चाएं शैल कला स्थलो के प्रबन्ध, संरक्षण तथा कम्प्यूटरीकृत प्रलेखन की रणनीतियो को विकसित करने के विषय पर केन्द्रित रही। विचार- विमर्श मे अन्तरसांस्कृतिक तुलना तथा शैल कला शब्दावली के मानकीकरण पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया।

4. ब्रज की सतत सर्जना

ब्रज की सतत सर्जना के विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से श्री चैतन्य प्रेम संस्थान द्वारा वृन्दावन मे 4 से 7 जनवरी, 1994 तक आयोजित किया गया। इसमे देश-विदेश से 33 प्रतिनिधियो ने भाग लिया। निम्नलिखित विषयो पर चर्चाए हुई :-

(क) *मूलाधार* : इस सत्र मे दृश्य तथा स्थापत्य कलाओं मे ब्रज की पहचान और संस्कृत तथा प्राकृत साहित्य मे ब्रज विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए।

(ख) *शास्त्रीय सर्जना* : इस अधिवेशन मे ब्रज राज सृष्टि और ब्रज जैसा कि वह चैतन्य सम्प्रदाय के तीर्थ यात्रियों द्वारा आराधित है, सूरदास तथा ब्रजभाषा के कम विख्यात कवियों के काव्य मे ब्रज की सर्जना विषयो पर शोध पत्र पढे गए।

(ग) *अन्य ब्रज* : विद्वानो ने जयपुर, वैष्णव अखाडो, अयोध्या की कल्पना, अयोध्या तथा राम के ब्रज में ब्रज के अस्तित्व पर चर्चा की।

(घ) ब्रज की *सतत सर्जना* विषय के अन्तिम सत्र मे, जिन विषयों पर शोध पत्र पढे गए वे थे : ''संदर्भ मे शिकायत'' (ग्राउज इन कांटेक्स्ट) ''19वी तथा 20वी शती मे ब्रज के कृष्ण के नाना रूप चित्रण'', ''ब्रज की संगीत शैली की सृष्टि परम्परा के रूप मे'' ''छन्द परम्परा मे'', 'ब्रज के दाणिज्यिक लोक गीतों मे परम्परा तथा आधुनिकता'', ''बिहारी सतसई मे भक्ति तत्व''। चर्चा के अन्य विषय थे : ''ब्रज की सतत सर्जना मे शोध संस्थाओ की भूमिका तथा ब्रज की धरोहर सम्पूर्ण विश्व के लिए चिन्ता का विषय''।

इस सम्पूर्ण विचार-विमर्श के अलावा, शाम को ये अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए : (i) विदुर मलिक द्वारा ध्रुपद गायन, (ii) स्वामी श्रीराम कृष्णकृष्ण रासमण्डली द्वारा रास लीला की प्रस्तुति, (iii) ब्रज का दीपोत्सव प्रदर्शन, और (iv) भ्रमरघाट पर समाज। अन्तिम दिन ''ताजी'' पर फलक तथा स्लाइडे दिखाई गई। सम्मेलन के अन्त मे, निम्नलिखित संकल्प किए गए :

1. ब्रज के विभिन्न पक्षो पर नियमित रूप से सम्मेलन होने चाहिए।
2. परिस्थिति तथा स्वच्छता की दृष्टि से ब्रज के पर्यावरण को सुधारने के लिए समन्वित प्रयास किए जाने चाहिए। इस कठिन कार्य मे शामिल की गई एजेंसियो को इस प्रयत्न पर अपना ध्यान केन्द्रित करने के लिए अनुरोध या स्मरण करना चाहिए।
3. ब्रज की संस्कृति के उद्धार, संरक्षण तथा प्रसार मे लगी हुई भिन्न-भिन्न संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित किया जना चाहिए।
4. इस व्यापक सर्वेक्षण के बाद, ब्रज की संस्कृति के क्षेत्र मे कार्यरत संस्थाओं तथा व्यक्तियो की एक तालिका बनाई जानी चाहिए।
5. ब्रज की संस्कृति का एक डेटा बैंक तथा विश्वकोश तैयार किया जना चाहिए।

घटनाएं

प्रदर्शनियां

1. बृहदीश्वर पर एक प्रदर्शनी ''अदने से अनन्त तक'' सरकारी संग्रहालय, एगमोर, मद्रास के सहयोग से 12 से 20 अक्तूबर, 1993 तक लगाई गई। यह सरकारी संग्रहालय के शताब्दी प्रदर्शनी कक्ष मे आयोजित की गई और इसमे स्थापत्य वास्तुभक रेखाचित्र, फोटोग्राफ, छपे (मुद्रक), कांस्य छायाचित्र, प्रतिमाए, तांबे के सिक्के और चोल काल के शैललेख प्रदर्शित किए गए। स्थापत्य वास्तुभक रेखाचित्र बनाने का काम ई० एफ० ई० ओ० पांडीचेरी के श्री पी० पिशर्ड तथा अहमदाबाद के एक विख्यात वास्तुविद श्री अनूप दवे के सहयोग से पूरा किया गया। बृहदीश्वर परिदृश्य के ये रेखाचित्र सर्वप्रथम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माटी घर मे मई, 1992

मे आयोजित एक प्रदर्शनी "पत्थरो मे संवाद" मे प्रदर्शित किये गए थे। उन्हीं रेखाचित्रो तथा फोटोग्राफों को मद्रास मे लगाई गई प्रदर्शनी मे रखा गया। श्री अनूप दवे ने "अवनि से अनन्त तक" नामक प्रदर्शनी का विन्यास (खाका) तैयार किया था। प्रदर्शित किए गए छायाचित्रों मे चोल काल तथा नायक काल के भित्तिचित्रों की वे प्रतिकृतियां थी जो श्री विनय बहल द्वारा गर्भगृह में छायांकित की गई थी और स्थापत्यकलात्मक तथ्यो के मुद्रांक थे जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मैसूर के साथ मिलकर किए गए अध्ययन की उपज थे। चोल काल की कांस्य प्रतिमाएं, तांबे के सिक्के और शिलालेख सरकारी संग्रहालय, मद्रास से उधार लिए गए थे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन ने किया था। वेदरायण पेरिया पप्पा के नेतृत्व मे नादस्वरम् बजाने वालो ने उनका स्वागत किया वे उन्हे संग्रहालय के दरवाजे से शताब्दी प्रदर्शन कक्ष तक ले गए जहां प्रदर्शनी लगी हुई थी। निर्मित लिंग के सम्मुख नकली गर्भगृह मे, उन्होने दीप प्रज्वलित किया और प्रसिद्ध *ओदुवार* तिरुकाशी श्री शिवज्ञान संबंधम् ने एक तेवरम भजन गाया।

श्री आर० वेंकटरामन प्रदर्शनी से बहुत प्रभावित हुए और उन्होने आगंतुक पुस्तिका में ये वाक्य लिखे :

> "बृहदीश्वर प्रदर्शनी अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। यह हजार साल पहले बनाए गए एक विहंगम मंदिर की संरचनात्मक उत्कृष्टता की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। उन दिनों में प्रदर्शित यह अभियांत्रिक कौशल प्रशंसा करने को प्रेरित करता है। मुझे विश्वास है कि लोग इस अद्भुत प्रदर्शनी को देखकर बहुत लाभान्वित होंगे।"

सभी वर्गों के नर, नारी एवं बच्चे इस प्रदर्शनी को देखने के लिए बड़ी संख्या मे आए। यद्यपि अधिकांश दर्शक तमिलनाडु के ही थे फिर भी अन्य राज्यों तथा कुछ दूसरे देशों से आने वालो की भी कमी नहीं थी। आगन्तुक पुस्तिका मे दी गई टिप्पणियो मे से कुछ यहां उद्धृत की जा रही है :-

"अत्यन्त रोचक प्रदर्शनी जो भारत की समृद्ध धार्मिक परम्परा का एक सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करती है।"

— रिच निकल्स, फिनलैंड

"इस मंदिर की संरचना को समझने का एक वैज्ञानिक प्रयास किया गया है। प्रदर्शनी दिल मे प्रेरणाप्रद विचार भरती है। धन्यवाद। भविष्य मे ऐसा ही कुछ और देखने की इच्छा के साथ।"

— एम० जी० मुहम्मद नजाउल्लाह, मद्रास

"भव्यता के साथ प्रदर्शित। ऐसी प्रदर्शनियां अन्य शहरों मे भी लगाई जाएं जिससे कि लोग कला तथा संस्कृति मे तमिल धरोहर की समृद्धि से अवगत हो।"

— डॉ० श्रीमती एन० वाई०, मोहनराम, दिल्ली विश्वविद्यालय

2. मृग : प्रारंभिक चित्रण (प्रदर्शनी)

जनपद सम्पदा प्रभाग ने इटली के कोपरेटिवा अर्किमेडे लिका ले ओरमे डेल युओमो (केवर्ना) के सहयोग से दिसम्बर, 1993 मे "मृग : प्रारंभिक चित्रण, भारत तथा यूरोप" नामक प्रदर्शनी लगाई। प्रदर्शनी तीन भागों मे विभक्त थी :-

भाग-एक मे समकालीन मृग को प्राकृतिक परिवेश मे प्रस्तुत किया गया और मृग जीवन-चक्र को उसके मौसमी व्यवहार के साथ चित्रित किया गया।

भाग-दो भारतीय शैल कला के अवशेषों पर केन्द्रित था। शैल कला के लगभग 120 नमूने कला-मुद्रण से प्रदर्शित किए गए थे। उनमे से अधिकांश बड़े छायाचित्र, मूलचित्र, जलरंग की चित्रकारियां, रेखाचित्र आदि के नमूने थे। मिरजापुर, चम्बल, भीमबेटका, जारवार व बुर्जाहोम तथा केरल मे मिले अवशेष भी प्रदर्शित किए गए। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से लेकर आज तक मृग की छवियों मे जो सातत्य है उसे नवदाटोली के मिट्टी के बर्तनो, सांची के मृग फलक तथा मध्य प्रदेश की समकालीन जनजातीय कला वस्तुओं के फोटोग्राफों द्वारा स्पष्ट किया गया था।

भाग-तीन मे 346 फोटो/पाठ फलक तथा अन्य त्रि-आयामी प्रदर्शन थे । यहाँ ऊपरी पुरा-पाषाणकालीन यूरोपीय स्थलों जैसे आल्टा, लैसकौर, वाल कैमोनिका आदि मे मिली मृग आकृतियो और कालान्तर में उनमें आए रूपभेदों को कुछ चुनी हुई सामग्रियो के साथ दिखाया गया था ।

प्रवेश द्वार पर लगातार दिखाई जा रही वीडियो फिल्म के द्वारा प्रदर्शनी को और अनुकूलता प्रदान की गई । इससे यह स्पष्ट किया गया कि मृग हमेशा से ही मिथकों, पुराण कथाओं, प्राचीन अभिनय तथा प्रदर्शनीय कलाओं, जैसे मृगशृंग नृत्य, तथा अन्य प्रस्तुतियों मे बराबर केन्द्रीय आकृति रहा है । अंग्रेजी मे एक सचित्र विवरणिका प्रकाशित की गई । इस अवसर पर विशेष पोस्टर और सचित्र पोस्टकार्ड भी प्रकाशित किए गए ।

प्रदर्शनी को व्यापक प्रचार मिला ।

3. छाया पुतुल

"छाया पुतुल" नाम से छाया पुतलियों की एक प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर मे स्थित माटी घर मे 2 फरवरी से 2 मार्च, 1994 तक लगाई गई । प्रदर्शनी का उद्देश्य छाया पुतलि कला की विश्वस्तरीय परम्परा की एक झलक प्रस्तुत करना था । प्रदर्शित पुतलिया इण्डोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया, थाईलैंड, तुर्की, ग्रीस, चीन, तथा भारत से थीं । दक्षिण-पूर्व एशियाई देशो, ग्रीस, तुर्की तथा चीन की छाया पुतलिया म्यूजी बॉक, पेरिस के संग्रह मे से थी और संग्रहालय के निदेशक श्री जेकस पिम्पानो द्वारा उधार दी गई थीं । जहां तक भारतीय छाया पुतलियो का संबंध है, संगीत नाटक अकादमी ने अपना कर्नाटक का संग्रह "टोगालुगोम्बियाटा", आन्ध्र प्रदेश का "टोलुबोम्मलट्टा", केरल का "टोलपवकूतु", तथा उड़ीसा का "रावण छाया", उधार दिया । छाया पुतलियो पर एक बहुभाषी सूची वाली एक छोटी पुस्तिका वितरण के लिए तैयार की गई । प्रदर्शनी का आडियो, वीडियो तथा निश्चल फोटोग्राफी के माध्यम से पूर्व प्रलेखन किया गया था । दूरदर्शन ने इसे राष्ट्रीय नेटवर्क के समाचारो मे 8 फरवरी, 1994 को दिखाया ।

आयोजित व्याख्यान

प्रो० एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान

विश्व भारती के भूतपूर्व उप-कुलपति डॉ० सुरजीत चन्द्र सिन्हा ने 28 तथा 29 अक्तूबर, 1993 को व्याख्यान दिए । "भारतीय सभ्यता, संरचना तथा परिवर्तन" विषय पर बोलते हुए डॉ० सिन्हा ने बताया कि किस प्रकार प्रो० निर्मल कुमार बोस, जो सदा भारतीय सभ्यता की जीवंतता के स्रोत तथा स्वरूप की खोज तथा आधुनिक काल मे उसके रूपान्तरण की अवस्थाओं के अध्ययन मे लगे रहते थे, अपने विस्तृत अनुभव से व्युत्पन्न विचारो को कितनी उदारतापूर्वक अपनी रचनाओं के माध्यम से और अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से मौखिक संचार की अपनी असाधारण शक्ति के द्वारा अपने मित्रो तथा शिष्य परम्पराओं को दे दिया करते थे । आगे उन्होंने बताया कि "प्रो० बोस ने भारत मे मानव दशा की क्षेत्र आधारित खोज के साथ-साथ ऐतिहासिक संदर्भ मे उसकी गहराई से जांच करते हुए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया ।" अपना अभिभाषण समाप्त करते हुए डॉ० सिन्हा ने कहा, "मैं अब भी यह महसूस करता हूं कि आज हमारे चारों ओर जो यह दुर्व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है उसके बीच मे बहुत-सी रचनात्मक एवं सर्जनात्मक गतिविधियां चल रही है जिन पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए । मैं समझता हू कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कलाओं के प्रचार-प्रसार तथा विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव समुदाय को दृष्टि मे रखते हुए बड़ी सूझबूझ के साथ सुविचारित मंच की व्यवस्था करने मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है ।"

इन दोनों भाषणों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो० आन्द्रेबेतील तथा प्रो० टी० एन० मदान ने की थी; दोनो ही दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर है ।

प्रकाशन

1. *"भारत तथा यूरोप की शैल कला में मृग"* संपादक : गियाकोमो कमूरी, ऐंजेलो फोत्ताती, यशोधर मठपाल (गैवीला गट्टी तथा गियानेट्टा मुसीतेल्ली के योगदान सहित) प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन : इस पुस्तक का विमोचन "मृग : प्रारंभिक चित्रण" विषय पर आयोजित प्रदर्शनी के अवसर पर किया गया।

2. *"व्रजनाथद्वारा प्रकल्प"* नामक पुस्तिका इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के सहयोग से अभिनव पब्लिशर्स के साथ मिलकर प्रकाशित की गई।

अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में सहभागिता

प्रो० वी० एन० सरस्वती ने यूनेस्को के तत्वावधान में "शांति की संस्कृति में धर्मों का योगदान" विषय पर 13 से 18 अप्रैल, 1993 तक "संस्कृति-निदेशित वृक्ष के रूप में" बार्सलोना में आयोजित विशेषज्ञ समिति में भाग लिया। उन्होंने "निदेशित वृक्ष के रूप में संस्कृति" विषय पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ० कनक मीतल ने बंगलौर में 27 नवम्बर से 3 दिसम्बर 1993 तक आयोजित डेटाबेस उत्पादन तथा वितरण - संसाधन, प्रौद्योगिकी तथा प्रबंध विषयक प्रदर्शनी (इनफोटेक्स 1993) अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने "सामाजिक विज्ञानों में जीवन शैली अध्ययनों के लिए संकेतित डेटाबेस" विषय पर अपना निबन्ध पढ़ा।

कला दर्शन

कला दर्शन प्रभाग, अन्य कलों के साथ-साथ, कला तथा संस्कृति संबंधी विषयों तथा संकल्पनाओं पर बहु-विषयक संगोष्ठियों तथा प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए मंच की सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

कार्यक्रम क : संग्रह

कला दर्शन प्रभाग ने *खम्* (आकाश), *आकार* (रूप), *काल* (समय) और *प्रकृति* (पंचमहाभूत) जैसे आधारभूत महत्व के विषयों पर आयोजित मिले-जुले कार्यक्रमों से उत्पन्न बहुमूल्य सामग्रियां इकट्ठी की हैं। वर्ष 1993-94 के दौरान भारत तथा यूरोप की शैल-कला पर आयोजित प्रदर्शनी तथा अन्तर्राष्ट्रीय छाया पुत्तलिका प्रदर्शनी आदि से ऐसी और सामग्रियां प्राप्त की गईं और ये कला दर्शन प्रभाग के महत्वपूर्ण संग्रह हैं।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राजा दीनदयाल, कार्टियर ब्रेसों, मार्शा स्टोन और फ्रांसेस्को डी ओरजी फैल्वोनी के फोटोग्राफों के संग्रह प्राप्त किए हैं। इन संग्रहों से फोटोग्राफ प्रदर्शनियां लगाई जाती हैं। वर्ष 1993-94 के दौरान निम्नलिखित फोटोग्राफ प्रदर्शनियां लगाई गईं :-

1. हेनरी कार्टियर ब्रेसों द्वारा लिए गए फोटोग्राफों की प्रदर्शनी

यह प्रदर्शनी बम्बई के प्रदर्शनीय कलाओं के राष्ट्रीय केन्द्र में 6 से 31 जुलाई, 1993 तक लगाई गई। प्रदर्शनी को दर्शकों तथा स्थानीय प्रेस ने बहुत पसंद किया।

2. राजा लाला दीनदयाल की धरोहर

यह प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की प्रदर्शनी दीर्घा, 'माटी घर' में 5 अक्तूबर, से 7 नवम्बर, 1993 तक लगाई गई, माटी घर धूप में सुखाई गई कच्ची मिट्टी की बड़ी-बड़ी ईंटों से बना घर है।

यह प्रदर्शनी इस उत्कृष्ट फोटोग्राफर राजा दीनदयाल के ग्लास प्लेट निगेटिवों की सहायता से तैयार की गई थी और इसमें राजा दीनदयाल के छायाचित्र और फोटोग्राफी के उपकरण प्रदर्शित किए गए थे। प्रदर्शनी मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित थी : स्थान, लोग तथा घटना। प्रदर्शनी का मध्य भाग स्वयं फोटोग्राफर से संबंधित था। प्रदर्शनी में 148 फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गए थे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री एच० वाई० शारदा प्रसाद द्वारा किया गया। प्रदर्शनी को देखने आए कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की विचार-टिप्पणियां नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं :-

"मैं इस फोटोग्राफिक प्रदर्शनी से बहुत प्रभावित हुआ। इसे एक करिश्मा ही समझिए कि आज से सौ साल पहले जब कोई प्रौद्योगिकी उपलब्ध नहीं थी, यह फोटोग्राफर एक प्रोटोटाइप कैमरा की सहायता से इतनी बढ़िया तस्वीरें खींच सका। भूदृश्य तथा आकृति दोनों ही दृष्टियों से उनका फोटोग्राफिक कौशल अति उच्च कोटि का है।"

— आर० एल० भाटिया
(विदेश राज्य मंत्री)

"एक शानदार प्रदर्शनी। बधाइयां।"

— ई० अल्काजी

"अत्यन्त प्रभावोत्पादक 'उत्तम प्रस्तुति' विलक्षण प्रदर्शन।"

— प्रिया दीन दयाल

"मैंने इस सुन्दर प्रदर्शनी का पूरा आनन्द लिया। राजा दीनदयाल की कृतियां सचमुच प्रशंसनीय हैं।"

— नीरा सेठ
(सदस्य, योजना आयोग)

"अत्यन्त मनमोहक प्रदर्शन, जो वर्षों बाद देखने को मिला।"

— सतीश गुजराल

मध्य प्रदेश सरकार के अनुरोध पर, "राजा दीनदयाल की धरोहर" नामक यह छायाचित्र प्रदर्शनी फरवरी 1994 में भारत भवन, भोपाल में भी लगाई गई।

अन्य प्रदर्शनियां

मृत विषयक प्रागैतिहासिक शैलकला प्रदर्शनी भिन्न-भिन्न देश-काल में, रेखाओं तथा रंगों के माध्यम से प्रकृति तथा जीवन को समझने के लिए उनके विभिन्न आयामों पर ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से आयोजित तथा प्रस्तुत की गई थी और यह इटली के कोआपरेटिव आर्किऑलेजिका ले ओरमे डेल इलोमो के सहयोग से लगाई गई थी। प्रदर्शनी में जो कलाकृतियां प्रस्तुत की गई थीं वे सभी इटली की सरकार तथा संगीत नाटक अकादमी ने उधार दी थीं।

प्रख्यात चित्रकार तथा मूर्तिकार श्री बी० सी० सान्याल ने 7 सितम्बर, 1993 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। बंबई के श्री पेटरो, डॉ० वाई० मलगाल तथा मुख्य अतिथि डॉ० बी० सी० सान्याल ने प्रदर्शनी स्थल पर रखे फलकों पर "मृग" के चित्र बनाकर प्रदर्शनी की उद्घाटित घोषित किया। प्रदर्शनी में यूरोप से प्राप्त 330 चित्र फलक और भारत में प्राप्त 100 चित्रफलक रखे गए, जिनमें डॉ० मलगाल द्वारा जलरंग में तैयार की गई भीमबेटका शैलचित्रों की प्रतिकृतियां भी शामिल थीं।

प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ और तत्सम्बंधी कुछ विचार-टिप्पणियां नीचे दी जा रही हैं :-

"अत्यन्त मनमोहक और प्रभावोत्पादक प्रदर्शनी जो एकदम सही तरीके से, बड़ी सूझबूझ के साथ लगाई गई।"

— [illegible]

"बहुत [illegible] प्रदर्शनी, आयोजन कर्ताओं को बधाइयां।"

— एलवाड ब्यूअरफोल

"टिप्पणी करने के लिए शब्द अपर्याप्त होंगे।"

— बी० सी० सान्याल

"भारत तथा यूरोप की कला में मृग विषयक प्राचीन चित्रणों को प्रदर्शित करने का एक भव्य प्रयास।"

— स्वामी गोकुलानन्द

कला दर्शन प्रभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय छाया पुत्तलिकाओं की एक प्रदर्शनी मी केन्द्र के माटी घर में 2 फरवरी से 2 मार्च, 1994 तक लगाई। प्रभाग ने सम्पूर्ण प्रचार सामग्री डिजाइन और मुद्रित की और बाकायदा जनता को बांटी। प्रदर्शनी के संचालन के अलावा, सुरक्षा एवं गाइडों की व्यवस्था, अति विशिष्ट महानुभावों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रदर्शनी देखने आने की व्यवस्था का कार्य भी कला दर्शन प्रभाग द्वारा किया गया।

कुछ दर्शकों की विचार-टिप्पणियां नीचे उद्धृत की जा रही हैं :-

"चित्ताकर्षक। स्वच्छ प्रदर्शन"

— शखो चौधुरी

"अतिउत्तम।"

— अरुण कौल

"प्रदर्शनी को देखकर वास्तव में बड़ी प्रसन्नता हुई। इस कला का बहुत-कुछ अंश तो भारत से बाहर जा चुका है, हमारी रुचि के अभाव के कारण। अब हमें विदेशों से बहुत-कुछ सीखना है। मैंने कोई तीस वर्ष पहले सबनों से ठीक ही कहा था कि इन्डोनेशिया ने उस कला रूप तथा कला में भारत को शिक्षित किया है जो कभी मूलतः भारत से ही बाहर भेजी गई थी। यहां के कार्यकर्ताओं ने मुझे प्रदर्शनी में घुमाकर सब कुछ दिखाया बताया उनके लिए मैं उनका आभारी हूं।"

— जे० एन० खोसला

"एक से एक मनमोहक नमूने।"

— मैरी जुरबुचन

कार्यक्रम ग : स्मारक व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने उन लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के सम्मान में एक स्मारक व्याख्यान माला प्रारम्भ की है जिन्होंने अध्ययन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आलोच्य वर्ष के दौरान, केन्द्र ने तीन स्मारक व्याख्यान आयोजित किए—एक हिन्दी में और दो अंग्रेजी में. कला दर्शन प्रभाग ने वर्ष के दौरान प्रो० एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान तथा डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी स्मारक व्याख्यान आयोजित करने में क्रमशः जनपद सम्पदा प्रभाग तथा कला कोश प्रभाग को महत्वपूर्ण सहायता दी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान

कला दर्शन प्रभाग ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से 19 अगस्त, 1993 को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान आयोजित किया। विख्यात भारतविद् प्रो० क्रिस्टोफर बायरकी ने जो संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हैं और इस समय भारत में पोलैंड के राजदूत हैं, "एक घटा तीन और भारतीय संस्कृति" विषय पर भाषण दिया। अपने भाषण में प्रो० बायरकी ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों जैसे मिथक, परम्पराओं और कुछ संस्थाओं तथा गणितीय गणनाओं के विषय में प्रतीकात्मकता आदि पर विस्तार से चर्चा की। यूनाइटेड किंगडम में भारत के उच्चायुक्त डॉ० एल० एम० सिंघवी ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम घ : वार्ताएं तथा व्याख्यान

वार्ताओं के स्थानीय कार्यक्रमों की श्रेणी में जो जनजातीय विषयों, पुत्तलिका प्रदर्शन, फिल्म प्रदर्शनी, पुत्तलिकाओं पर वीडियो फिल्मों आदि पर आधारित थे, ऐसे विभिन्न विषयों और सामूहिक चर्चाओं को लेकर अप्रैल, 1993 से मार्च, 1994 तक कुल मिलाकर 53 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनका ब्यौरा अनुबंध-9 पर दिया गया है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अभिलेखागार से एक तीन दिवसीय फिल्म प्रदर्शन का कार्यक्रम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के सभागार में 7 से 9 जुलाई, 1993 तक आयोजित किया गया। प्रदर्शित फिल्में थीं :-

7 जुलाई, 1993 :	"रामायण" नृत्यनाटिका (बैले) भोपाल के लिटल बैले ट्रूप द्वारा
8 जुलाई, 1993 :	"चम्बल के शैल चित्र"
	"दुनहुआग गुफाएं"
9 जुलाई, 1993 :	"दरवेश नृत्य" (एक्स्टेटिक सर्किल)
	"शिव का ब्रह्माण्ड नृत्य"

सूत्रधार

सूत्रधार प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के समस्त कार्यकलापों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति निर्धारण के लिए प्रमुख विभाग के रूप में कार्य करता रहा। इस प्रभाग का एक एकक समस्त केन्द्र के लिए आपूर्ति तथा सेवाओं की व्यवस्था करता है और एक दूसरे एकक का दायित्व केन्द्र का हिसाब-किताब रखना और वित्त प्रबन्ध करना है।

क. कार्मिक

वर्ष 1993-94 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। केन्द्र के महत्वपूर्ण अधिकारियों की सूची अनुबंध-3 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति तथा सेवाएं

आपूर्ति तथा सेवा एकक ने केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सभागतीय तथा संबंधित सहायता प्रदान की। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी संबद्ध मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से कुशलतापूर्वक चलता रहे।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी : वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, एक अवैतनिक समन्वयकर्ता की देखरेख में काम करता रहा। यह कार्यालय इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कला कोश प्रभाग के अन्तर्गत कार्य कर रहा है और इस कार्यालय के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सेवाएं अब नियमित कर दी गई हैं।

इम्फाल : इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह भी एक अवैतनिक समन्वयकर्ता के अधीन कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के सभी कर्मचारी तदर्थ आधार पर ही कार्यरत हैं।

घ. वित्त एवं लेखे

31 मार्च, 1993 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान करते हुए अधिसूचनाएं जारी की है -

(i) न्यास की आय को कर-निर्धारण वर्ष 1997-1998 तक आयकर से मुक्त कर दिया गया है। आयकर अधिनियम की धारा 10(23-ग) (iv) के अन्तर्गत आवश्यक कर-मुक्ति दे दी गई है। देखिए : 10 मई, 1994 की अधिसूचना संख्या 9541 एफ०स० 197/183/93-आई० टी० ए०-I।

(ii) न्यास को धारा-35(i) (iii) के अन्तर्गत जारी की गई अधिसूचना संख्या-1075 (एफ० स० डी० जी० आई० टी० (ई०) एन० डी०-22/35 (i) (iii) 89 आई० टी० (ई०), दिनांक 29 मार्च, 1994 के द्वारा 1.4.1994 से 31.3.1995 तक की अवधि के लिए एक संस्था घोषित कर दिया गया है जिससे सामाजिक विज्ञान मे अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35(i) (iii) के अन्तर्गत दाता की आय मे से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अन्तर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप मे, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संगठन (केन्द्र) को आयकर नियम, 1962 के नियम-6 के अन्तर्गत एक वैज्ञानिक तथा अनुसंधान संस्था के रूप मे अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया मे भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(iii) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, चित्रकारी, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा-47 (ix) के अन्तर्गत निर्धारण वर्ष 1998-99 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए है ; देखिए : भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 24.11.1993 की अधिसूचना संख्या (207/5/93 आई० टी० ए०-II।

(iv) व्यक्तियो द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक छूट (रिबेट) का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31.3.1999 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक (छूट) का दिनांक 18 नवम्बर, 1994 का पत्र संख्या- डी० आई० टी० (छूट)/93-94/379/87/531।

भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को 10.00 करोड़ रुपए की अतिरिक्त मूल निधि प्रदान की है जिसे केन्द्र की निवेश समिति के अनुमोदन से सरकारी क्षेत्र के उपक्रमो के/स्थायी खाते मे लगा दिया गया है।

ङ. आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपथ स्थित सेंट्रल विस्टा मेस के भवनो और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगला संख्या 3 मे स्थानित रहा। सेंट्रल विस्टा मेस भवन के चारो दिशाओ मे बढ़ाया गया है जिससे अब 10,000 वर्ग फुट जगह केन्द्र को और मिल गई है। इसके फलस्वरूप, केन्द्र के उन प्रभागो तथा एककों को जो पहले डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगला न० 5 तथा एरियाज ग्राम मे स्थित एक फ्लैट मे चल रहे थे, सेंट्रल विस्टा मेस भवन के बढ़े हुए हिस्से मे ही स्थान दे दिया गया है।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद रोड के बंगला न० 5 की इमारत अब तोड़ दी गई है और सदर्भ पुस्तकालय तथा सूत्रधार प्रभाग को स्थान देने के उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के नए भवन के निर्माण के लिए संरचनात्मक गतिविधि प्रारम्भ की जा चुकी है।

च. शोधवृत्ति योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1993-94 के दौरान शोध अध्येताओ की संख्या इस प्रकार रही -

मुख्यालय कार्यालय	12
वाराणसी कार्यालय	3
मद्रास माइक्रोफिल्म एकक	3
शिमला	1

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए।

कला निधि

केन्द्र का कला निधि पुस्तकालय भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय उधार और कम्प्यूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग ले रहा है। कला निधि पुस्तकालय का देश के अन्य पुस्तकालयों/संस्थाओं के साथ, नियमित रूप से आदान-प्रदान चलता रहता है। उनमें से कुछ है :- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पुस्तकालय; राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय तथा भारतीय पुस्तकालय संघ, दिल्ली; भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संघ, कलकत्ता; राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर, मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय इत्यादि-इत्यादि। केन्द्र को अपने माइक्रोफिल्म बनाने के कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, अध्येताओं/विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित करना पड़ा है -

भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;
मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी एवं फारसी अनुसंधान संस्थान, टोंक, राजस्थान;
गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास,
गवर्नमेंट ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना,
खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना;
ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम,
रामपुर रजा लाइब्रेरी;
सरस्वती भवन लाइब्रेरी, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
श्री रणवीर संस्कृत शोध संस्थान, जम्मू,
रघुनाथ पुस्तकालय, जम्मू,
हजरत पीरमोहम्मदशाह दरगाह शरीफ लाइब्रेरी, अहमदाबाद;
भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी;
राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली।

कला कोश

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कला कोश प्रभाग देशभर के अनुसंधान संगठनों एवं भारतीय संस्थाओं में उपलब्ध विशेषज्ञता का उपयोग करता रहा है। भारत के विभिन्न भागों के विद्वान कला कोश संबंधी कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। वे अपने-अपने विषय/क्षेत्र की राष्ट्रीय संस्थाओं से संबद्ध हैं। इन विद्वानों के माध्यम से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इन संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों के विभागों के साथ संपर्क रख रहा है। इनमें से कुछ है.

रवीन्द्र भारती, यादवपुर विश्वविद्यालय, श्रीरान वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुनीपुरा, केरल, एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; उच्चतर तिब्बती अध्ययन का केन्द्रीय संस्थान; काशी विद्यापीठ, सम्पूर्णानन्द झा केन्द्रीय संस्कृत संस्थान, इलाहाबाद; भारत विद्या संस्थान, अहमदाबाद; भोगीलाल प्राकृत अध्ययन संस्थान, हरियाणा, मैसूर विश्वविद्यालय का तुलनात्मक साहित्य विभाग और लोक साहित्य विभाग, सम्प्रदाय इंस्टिट्यूट ऑफ म्यूजिकोलॉजी (संगीत शास्त्र का सम्प्रदाय संस्थान), मद्रास; केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद, भारतीय अध्ययन का अमेरिकी संस्थान, नई दिल्ली; श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली; डेकन कॉलेज तथा भंडारकर प्राच्य संस्थान, पुणे; खुदाबख्श लाइब्रेरी,

पटना, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी; पूना विश्वविद्यालय, ओरिएंटल रिसर्च, प्राच्य शोध संस्थान इंस्टिट्यूट मैसूर, गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा प्रभाग ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक क्षेत्रगत अध्ययन प्रारम्भ किए हैं। ये क्षेत्रगत अध्ययन विश्वविद्यालय तथा उनसे बाहर के अनुसंधान संगठनों के माध्यम से चलते हैं। परियोजना निदेशक नियुक्त किए जा चुके हैं। ये परियोजना निदेशक अपने-अपने विश्वविद्यालय या संस्थान के अनुसंधान कार्मिकों की सेवाएं लेते हैं। जनपद सम्पदा प्रभाग का कार्य बहु-विषयक स्वरूप का है। प्रभाग ने मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थाओं के साथ संपर्क एवं संवाद स्थापित किया है। इन संस्थाओं में शामिल हैं: - खगोल-भौतिकी केन्द्र, पुणे, विज्ञान संस्थान, बंगलौर, राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास संस्थान; भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों के मानव विज्ञान विभाग भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ हैं श्रीनगर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के विभाग, मानव विज्ञान विभाग, नार्थ ईस्ट हिल विश्वविद्यालय, मेघालय, और मानव विज्ञान विभाग, मणिपुर, इनके अलावा, मानव संग्रहालय, भोपाल, मानव जाति अध्ययन संस्थान, उदीसा, मानव विज्ञान विभाग, बालवाला के सहयोग से भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं। जनजातीय अध्ययन संस्थानों जैसे, आदिम जाति सेवा संघ, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के जनजातीय संस्थानों के साथ भी परस्पर आदान-प्रदान तथा संपर्क-संबंध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने राज्यों के पुरातत्व तथा पुरालेख विभागों के साथ और कैरन्य प्रेम संस्थान, वृन्दावन, आई० सी० एच० आर० आई० सी० एस० एस० आर० तथा आई० सी० पी० आर० जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से संपर्क-संबंध बनाए रखा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग वृहदीश्वर परियोजना पर ई० एफ० इं० ओ०, पांडिचेरी से सहयोग ले रहा है। विशेष रूप से पुरातत्व कला तथा संगीत के क्षेत्र में अपने बाह्य-जगत के कार्यक्रमों के लिए जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ संपर्क एवं संयोग बनाए रखता है, जैसे संगीत नाटक अकादमी, प्रदर्शनीय कला संस्थान, संग्रहालय और गांधी स्मृति तथा गांधीदर्शन, नई दिल्ली (गांधी जी पर पुरातत्व कार्यक्रमों के लिए)।

कला दर्शन

इसी प्रकार कला दर्शन ने भी अपनी प्रदर्शनियों तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय मध्य प्रदेश सरकार, मद्रास म्यूजियम जैसी राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ परस्पर संबंध बना लिए हैं, विशेषकर अब राष्ट्रीय प्रदर्शनीय कला केन्द्र, बम्बई तथा राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद के साथ नियमित रूप से आदान-प्रदान का कार्यक्रम बन गया है।

ज. अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का मानना है कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडें आदि प्राप्त करने और शिक्षात्मक कार्यक्रम तैयार करने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

कैलेण्डर, वर्ष 1993 में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम दोस्त देशों के साथ चलता रहा। ये देश हैं तुर्की, किर्गिजस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, बल्गेरिया, चिलीडेड, फ्रांस, वियतनाम, ईरान, चीन, स्पेन, मालदीव, मिस्र का अरब गणराज्य, उजबेकिस्तान, बेलोरूस, इटली, रूस, जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य, फिलीपीन और हंगरी।

आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान का भारत के साथ सीधे कोई सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम नहीं है। ये अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्य क्रमशः भारत-आस्ट्रेलिया परिषद्, भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका उप-आयोजना और भारत-जापान सांस्कृतिक मिशन आदान जैसे अन्य संस्थाओं के माध्यम से चलाते हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इन सब में भाग लेता है। अन्य तरह देशों के साथ, यद्यपि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से संबंधित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम की मान्य अवधि समाप्त हो चुकी है। पारस्परिक आदान-प्रदान तथा सहयोग बराबर चल रहा है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को गत वर्ष स्वीकृत किए गए 5,00,000 अमेरिकी डालर के अनुदान में से, फोर्ड फाउंडेशन ने केन्द्र में तकनीकी तथा अनुसंधान सुविधाओं के विकास के लिए 1,25,000 अमेरिकी डालर की राशि प्रदान की है। इस धनराशि का उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय भण्डारों से प्रलेख तथा संग्रह प्राप्त करने, फोटोग्राफिक उपस्कर खरीदने तथा माइक्रोफिल्म बनाने के कैमरा, दृश्य श्रव्य सम्पादन की मशीनों आदि की पूर्ति के लिए किया जा सकता है। इसलिए इस अनुदान से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक सम्पादन एकक की स्थापना करने का प्रस्ताव है।

केन्द्र ने नई दिल्ली में विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम के अन्तर्गत एक विदेशी मुद्रा खाता चलाने की अनुमति गृह मंत्रालय से मांगी थी, जो उन्होंने दे दी है। यह खाता उस खाते से अतिरिक्त होगा जो केन्द्र ने लन्दन के केनरा बैंक में खोल रखा है।

भारत सरकार और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू० एन० डी० पी०) के बीच 22 फरवरी, 1994 को एक करार पर हस्ताक्षर हुए, जिसका उद्देश्य इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में सांस्कृतिक संसाधनों के परस्परसंक्रिय बहुमाध्यमिक प्रलेखन की राष्ट्रीय सुविधा को सुदृढ़ बनाना है।

यह एक पंचवर्षीय परियोजना है। करार के अनुसार, यू० एन० डी० पी० राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं, प्रशिक्षण के लिए अध्येतावृत्तियों तथा उपस्कर के रूप में, कुल पांच वर्ष की अवधि में 2.723 लाख अमेरिकी डालर की सहायता देगा। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भी परियोजना के कर्मचारियों, उपस्कर तथा प्रशिक्षण की लागत को पूरा करने के लिए परियोजना की अवधि में अपनी ओर से कुल 7.95,50,000 रुपए की राशि उपलब्ध कराएगा। यह परियोजना विभिन्न माध्यमों में दिखलाई सांस्कृतिक संसाधनों के पुनर्संगठन के लिए भारत में अपनी तरह की पहली कोशिश होगी और इसके अन्तर्गत बहुमाध्यमिक प्रौद्योगिकी की सहायता से हमारी सांस्कृतिक धरोहर के विस्मृत पक्षों का पुनरुद्धार करने का प्रयास किया जाएगा।

यह परियोजना इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा कार्यान्वित की जाएगी जो अपने यहां, उदाहरणार्थ, *नीलगोविन्द, कृष्णविष्णु* मंदिर तथा *अनिरुद्धसारथि साकारी* जैसे विषयों पर अन्तःसम्बन्धित तथा मूलभूत एकत्रीकरण अनुसंधान के लिए कार्यप्रणाली विकसित करेगा। भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को कलाओं के राष्ट्रीय डेटा बैंक की स्थापना के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में मनोनीत किया है। इस परियोजना के द्वारा कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर सम्बंधी डेटा के संग्रहण, पुनरुद्धार और प्रसार के लिए केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों की सभी एजेंसियों के लिए एकीकृत संसाधन निर्मित करने में सहायता मिलेगी।

छात्रों तथा शिक्षकों के लिए संग्रहित शिक्षण के उपकरण विकसित किए जाएंगे, इससे सांस्कृतिक संसाधनों के सुव्यवस्थित एवं समन्वित प्रलेखन तथा प्रसार की गति में व्यापक वृद्धि होगी। इसमें योजना निर्माता, नीति निर्धारक, वैज्ञानिक, वैकल्पिक औषधि कार्मिक, शिक्षक, छात्र, कला अध्येता तथा इतिहास लेखक आदि सभी लाभान्वित होंगे।

डॉ० वाग चौधरी, उप्रार शिक्षा विशेषज्ञ (आईसीए), यूनेस्को, बंगलौर यूनेस्को परियोजना विशेषज्ञ स्थापित करने की कार्यप्रणाली पर विचार करने तथा उसे क्रियान्वित करने के लिए 20-21 फरवरी, 1994 को केन्द्र में पधारे।

इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक सरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की परियोजना का प्रस्ताव सांस्कृतिक विभाग द्वारा आर्थिक कार्य विभाग के पास भिजवाया गया था। इस परियोजना पर कुल मिलाकर 43.59 लाख रुपए खर्च होने का अनुमान है।

जापान फाउंडेशन ने केन्द्र को धन तथा सांस्कृतिक विषय पर 2,46,202 येन मूल्य के 29 खण्ड उपहारस्वरूप प्रदान किए हैं।

"भारत का भविष्य : भविष्य का भारत" विषय पर 23 से 26 अगस्त 1993 तक एक परिचर्चा आयोजित की गई। यह परिचर्चा भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच एक द्विपक्षीय कार्यक्रम के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् तथा शिक्षा तथा संस्कृति के भारत-अमेरिकी उप-आयोग के संयुक्त तत्वावधान में "सूचना 2000 : परियोजना के अन्तर्गत आयोजित की गई थी। इसमें विज्ञान, खगोल भौतिकी, कृत्रिम ज्ञान, नवोन्मेषन, ऊर्जा आदि के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित सांस्कृतिक विषयों में सांस्कृतिक मन तथा संचेतना के अन्तर्संबंधों, स्मृति की समस्या, मस्तिष्क तथा कृत्रिम ज्ञान और अध्यात्मविज्ञान के पक्ष आदि पर चर्चा की गई।

इण्डोनेशिया सरकार के संस्कृति महानिदेशालय की महानिदेशक डॉ० एडि सेडायती ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अतिथि के रूप में 5 से 11 अक्तूबर, 1993 तक भारत भ्रमण किया। उन्होंने 6 अक्तूबर, 1993 को इंडिया इंटरनेशनल सैंटर में "इंडोनेशियाई संस्कृति में भारतीय प्रभाव" विषय पर भाषण दिया। उन्होंने अजमेर, जयपुर तथा नई दिल्ली में ऐतिहासिक, पुरातत्वीय तथा सांस्कृतिक महत्व के स्थानों का दौरा किया।

संस्कृति के प्रथम उप-मंत्री, महामहिम श्री ए० टी० सुगैव के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय शिष्टमंडल 5 नवम्बर, 1993 को केन्द्र में आया। उन्होंने आचार्या से मुलाकात की। इतिहास पुरातत्व और मानव जाति वर्णन संस्थान, आलम अता के साथ प्रकाशनों तथा पारस्परिक रुचि की सामग्री के आदान-प्रदान तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वाद्ययंत्र दीर्घा के लिए कजाकिस्तान के पारम्परिक वाद्ययंत्रों के रूप में कजाकिस्तानी सहायता के बारे में चर्चा हुई।

डॉ० रणजीत मुकुन्दी और डॉ० पेर क्रिस्टियन हाल्वोरसेन जनवरी, 1994 में केन्द्र में आए और उन्होंने 'गीत गोविन्द' परियोजना पर केन्द्र के साथ सहयोग करने के प्रस्ताव पर चर्चा की। विचार-विमर्श के दौरान मोटी-मोटी बातों पर सहमति हो गई।

फोर्ड फाउंडेशन की उपाध्यक्षता कु० सुसन बेरसफोर्ड 11 फरवरी, 1994 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पधारीं। उन्होंने केन्द्र के विभिन्न कार्यक्रमों पर तथा फोर्ड फाउंडेशन द्वारा स्वीकृत अनुदान के उपयोग के विषय में केन्द्र की आचार्या के साथ बातचीत की। उन्होंने केन्द्र के गोदी घर में लगाई गई इण्डोनेशियाई पुत्तलिका प्रदर्शनी में गहरी दिलचस्पी दिखलाई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की आचार्या डॉ० कपिला वात्स्यायन ने 26 से 30 अप्रैल, 1993 तक हनोई का दौरा किया। और वहां पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में सांस्कृतिक विकास के लिए विश्व दशक के कार्यक्रम के अन्तर्गत, यूनेस्को के वियतनाम, राष्ट्रीय आयोग, हनोई में विकास परियोजनाओं एवं नियोजन में सांस्कृतिक घटक सम्मिलित करने की विधियों पर आयोजित उप-क्षेत्रीय बैठक में भाग लिया। डॉ० वात्स्यायन ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और यूनेस्को के पास सिफारिशों के रूप में भेजी जाने वाली अंतिम रिपोर्ट तैयार करने के लिए अलग-अलग मतों को संकलित किया।

आचार्या डॉ० कपिला वात्स्यायन, ने कार्टाजेना (कोलंबिया) के कन्वेंशन सेंटर में 25 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 1993 तक हुई यूनेस्को के तदर्थ चिन्तन मंच की दूसरी बैठक में भाग लिया।

आचार्या डॉ० कपिला वात्स्यायन ने 16 से 25 सितम्बर, 1993 तक लंदन का दौरा किया और वहां जवाहरलाल नेहरू स्मारक न्यास, बर्कले (यू० के०) के न्यासियों के निमंत्रण पर "भारतीय कला : एक तथा अनेक" विषय पर 17वां नेहरू स्मारक व्याख्यान दिया। डॉ० वात्स्यायन ने अपने भाषण में भारतीय कला की विविधता तथा बहुलता अर्थात् उसके मौखिक, दृश्य, गतिशील, जड़ व तरल, प्राचीन व मध्यकालीन, शास्त्रीय व लोक, नागरीय, ग्रामीण व जनजातीय, बौद्ध, जैन, हिन्दू तथा इस्लामिक, यहां तक कि ईसाई आदि सभी पक्षों के मूल स्वरूप पर प्रकाश डाला और स्पष्ट किया कि यह सब विभिन्न स्तरों पर एकत्व तथा अनेकत्व के सिद्धान्त को आंशिक अथवा पूर्णरूप में व्यक्त करने के प्रयास हैं।

डॉ० वात्स्यायन के विचार में भारतीय कला का अध्ययन यदि रेखीय अथवा कालानुक्रमिक पद्धति से किया जाए तो विषय इसकी समग्रता से कटकर अलग-अलग हो जाएगा और उस स्थिति में उसका केवल एक आंशिक चित्र ही देखने को मिलेगा।

संलग्न अनुबन्ध-1 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची, अनुबन्ध-2 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची; अनुबन्ध-3 केन्द्र के अधिकारियों की सूची, अनुबन्ध-4 में अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची, अनुबन्ध 5 पर वर्ष 1993 94 के दौरान हुई संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची, अनुबन्ध-6 पर वर्ष 1993-94 के दौरान हुई प्रकाशनों की सूची, अनुबन्ध-7 पर 31 मार्च, 1994 तक केन्द्र के प्रकाशनों की सूची, अनुबन्ध-8 पर केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियो प्रलेखनों की सूची, अनुबन्ध-9 पर अप्रैल, 1993 से 31 मार्च, 1994 तक हुई घटनाओं की तालिका, अनुबन्ध-10 पर विभिन्न सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गए अधिकारियों का ब्यौरा, और अनुबन्ध-11 पर आचार्या द्वारा भारत में तथा विदेशों में आयोजित संगोष्ठियों/बैठकों में भाग लिए जाने का ब्यौरा दिया गया है।

भवन परियोजना

नई दिल्ली बसाने के लिए सर एडवर्ड लुटियन ने जो मास्टर प्लान बनाई थी उसमे यह परिकल्पना की गई थी कि क्वीन्सवे और किंग्सवे (जनपथ तथा राजपथ) के चौराहे पर पूर्वोत्तर चौक मे राष्ट्रीय अभिलेखागार के सामने, इसी चौराहे के दक्षिण-पूर्व चौक में स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय के बगल पर, एक सांस्कृतिक भवन संयुक्त होगा जिसमे एक राष्ट्रीय रंगशाला होगी। इसी योजना के अनुसार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए इसी स्थल पर स्थान की व्यवस्था की गई है और नई दिल्ली के केंद्रस्थ विस्तृत क्षेत्र मे इस केन्द्र को 24.706 एकड़ का एक भू-खण्ड दिया गया है। यह भू-खण्ड चारो ओर से जनपथ, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, मानसिंह मार्ग और राजपथ की हरित पट्टी से घिरा हुआ है।

अन्तर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता के विजेता वास्तुविद प्रो० राल्फ लनंर जो संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रिन्सटन विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक है, के साथ जनवरी, 1988 मे स्थानीय सेवा करार पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, निर्माण-पूर्व की बहुत सी गतिविधियां सम्पन्न की गई और 1992 के प्रारम्भ मे परियोजना के लिए स्थानीय प्राधिकारियो का अनुमोदन प्राप्त कर लिया गया। तत्पश्चात् जब ब्यौरेवार डिजाइन तथा नक्शे तैयार करने का समय आया तो यह देखा गया कि परियोजना की प्रगति की रफ्तार तेज हो सकती है यदि ब्यौरेवार डिजाइने तैयार करने और स्थापत्य पर्यवेक्षण का काम किसी भारतीय वास्तुविद को अन्तरित कर दिया जाए।

उक्त परिस्थितियो मे, जुलाई 1992 मे, वास्तुविद प्रो० लनंर को ब्यौरेवार चर्चा करने के लिए बुलाया गया और इसके फलस्वरूप परस्पर सहमति से यह तय किया गया कि कार्य निष्पादन की गति को अधिक तेज करने के उद्देश्य से 30 जनवरी, 1988 के करार मे की गई व्यवस्थाओ को पारस्परिक सहमति से संशोधित किया जाना चाहिए, जैसा कि स्वय करार मे प्रावधान है। इसके फलस्वरूप, एक नया सहमति ज्ञापन तैयार किया गया, जिसमे यह तय हुआ कि परियोजना के शेष कार्य के लिए राल्फ लनंर वास्तुविद की फर्म (क) परिशुद्ध संकल्पना नक्शे तैयार करने तथा (ख) कुछ विशिष्ट बिन्दुओं पर स्थापत्य परामर्श देने के लिए उत्तरदायी होगी, और अन्य कार्य जैसे ब्यौरेवार डिजाइन तथा नक्शे तैयार करना, स्थानीय प्राधिकारियो को योजनाएं प्रस्तुत करना तथा कार्य निष्पादन के स्थापत्य पर्यवेक्षण का काम नई दिल्ली के मेसर्स साहनी कन्सल्टेंट्स प्रा० लिमि० द्वारा किया जाएगा, जिन्हे भवन परियोजना समिति के अनुमोदन से, पहले ही स्थ वास्तुविद नियुक्त किया जा चुका है। संशोधित व्यवस्थाओं मे, यह संयुक्त रूप से सहमति हुई कि राल्फ लनंर वास्तुविद की फर्म को परामर्शदाता वास्तुविद और मेसर्स साहनी कन्सल्टेंट्स प्रा० लिमि० को वास्तुविद कहा जाएगा।

संशोधित व्यवस्थाओं के फलस्वरूप कार्य की गति मे पर्याप्त तेजी आई। सभी तकनीकी तथा प्रबन्ध प्रणालियो को सुचारु बनाया गया, जिससे कि कार्य का शीघ्रता तथा निर्बाध गति से निष्पादन सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिए इंजीनियरी के मामलों मे भिन्न-भिन्न विशेषज्ञो के बीच समन्वय स्थापित करना पड़ा, कार्य-निष्पादन के लिए कुशल प्रणालियां स्थापित करनी पड़ी, और परियोजना के निष्पादन मे संलग्न भिन्न-भिन्न इकाइयो के बीच प्रभावोत्पादक संपर्क बनाए रखने के लिए आवश्यक उपाय करने पड़े। सभी औपचारिकताएं पूरी करने और ठेका दे देने के बाद पहली इमारत यानी सदर्भ पुस्तकालय भवन के निर्माण का कार्य 10 जून, 1993 को प्रारम्भ हुआ। निर्माण कार्य संतोषजनक प्रगति कर रहा है और लगभग एक लाख घन मीटर मिट्टी की खुदाई के बाद, दो-स्तरीय आधार तल (बेसमेंट) के निर्माण के लिए क्षेत्रफल के 90 प्रतिशत भाग पर बेसमेंट राफ्ट डाल दिया गया है।

सदर्भ पुस्तकालय भवन के निर्माण का कार्य तो एक ओर चल ही रहा है, इसके साथ ही अन्य भवनो के संबंध मे भी कार्यवाही प्रगति पर है। सूचनाघर, भूमिगत पार्किंग स्थल "ख", जनपद सम्पदा, प्रदर्शनी दीर्घाओं तथा आवासी खण्ड के संबंध मे निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए स्थानीय प्राधिकारियो से अनुमति लेने के लिए नई दिल्ली नगरपालिका को इन भवनो के नक्शे, मॉडल और अन्य कागज पत्र प्रस्तुत किए जा चुके है।

अनुबन्ध-1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

न्यास अध्यक्ष

1. श्रीमती सोनिया गांधी
10, जनपथ,
नई दिल्ली-110011

2. श्री आर० वेंकटरमन
भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत
ग्रीनवेज रोड, मद्रास

3. श्री पी० वी० नरसिंहराव
7, रेसकोर्स रोड,
नई दिल्ली-110011

4. डॉ० मनमोहन सिंह
माननीय वित्त मंत्री
नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली
(पदेन)

5. श्री अर्जुन सिंह
माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली
(पदेन)

6. श्रीमती शीला कौल
माननीय शहरी विकास मंत्री,
निर्माण भवन, नई दिल्ली
(पदेन)

7. श्री आबिद हुसैन
डब्लू-90 बी०, ग्रेटर कैलाश, भाग-I,
नई दिल्ली-110048

8. श्रीमती एम० एस० सुब्बुलक्ष्मी
128, वल्लुवर कोट्टम हाई रोड,
नंगवक्कम, मद्रास- 600034

9. श्री पी० एन० हक्सर
4/9 शांतिनिकेतन,
नई दिल्ली-110021

10. श्री रामनिवास मिर्धा
अध्यक्ष, ललित कला अकादमी,
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली

11. प्रो० यशपाल
अध्यक्ष, शिक्षा सचार के लिए अंतर्विश्वविद्यालय कंसोर्सियम
नाभिकीय विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर,
नई दिल्ली

12. प्रो० जी० राम रेड्डी
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
(पदेन)

13. प्रो० बशीरुद्दीन अहमद
उप-कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया,
जामिया नगर, नई दिल्ली
(पदेन)

14. श्री के० नटवर सिंह
डी-1137, वसंत विहार,
नई दिल्ली-110057

15. श्रीमती पुपुल जयकर
हिम्मत निवास, भूमि तल,
31, डूगसी रोड, मालाबार हिल्स,
बंबई-400006

16. श्री एच० वाई० शारदा प्रसाद
19, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए-3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

17. श्री सत्यम जी० पित्रोदा
प्रौद्योगिकी मिशन के संबंध मे प्रधान मंत्री के सलाहकार
दूर-सचार विभाग,
संचार भवन, नई दिल्ली-110001

18. श्री अशोक वाजपेयी
सयुक्त सचिव, सस्कृति विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001

19. श्री जे० स्वामिनाथन
सी-53, सत्तथ एक्सटेंशन भाग-1,
नई दिल्ली-110049

20. डॉ० कपिला वात्स्यायन
डी-1/23, सत्य मार्ग,
नई दिल्ली-110021

21. श्री एन० सी० जोशी
सी-II/64, शाहजहां रोड,
नई दिल्ली-110001

सदस्य-सचिव

अनुबन्ध-2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	श्री पी० वी० नरसिंहराव न्यास सदस्य	**अध्यक्ष**
2.	वित्त मंत्री, भारत सरकार न्यास सदस्य	सदस्य (पदेन)
3.	डॉ० पी० सी० एलेक्जेंडर	सदस्य
4.	श्री आबिद हुसैन, न्यास सदस्य	सदस्य
5.	श्री एच० वाई० शारदा प्रसाद न्यास सदस्य	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण	सदस्य
7.	डॉ० कपिला वात्स्यायन न्यास सदस्य	शैक्षिक निदेशक (आचार्या)
8.	श्री एम० सी० जोशी न्यास सदस्य	**सदस्य-सचिव**

अनुबंध-3

अधिकारियों की सूची

डॉ० कपिला वात्स्यायन, अकादमिक निदेशक/आचार्या
डॉ० एम० सी० जोशी, सदस्य सचिव

कला निधि प्रभाग

(क)

1.	डॉ० टी० ए० वी० मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ० सम्पत नारायण	विषय स्कॉलर
3.	श्री आत्म प्रकाश गवखड	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
4.	डॉ० अरूप बनर्जी	असोशिएट प्रोफेसर
5.	श्री ए० एन० खन्ना	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
6.	श्री बेअन्त कृष्ण रामपाल	वरिष्ठ अनुलिपिक अधिकारी
7.	श्री वी० कोटनाला	वरिष्ठ अनुलिपिक अधिकारी
8.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	प्रशासन अधिकारी

(ख)

9.	श्री ओ० पी० कालरा	प्रभारी अधिकारी, कम्प्यूटर कक्ष

(ग)

10.	श्री गोपाल सक्सेना	निदेशक, वीडिया प्रलेखन
11.	श्री जे० पी० सैनी	प्रशासन अधिकारी

कला कोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	पं० सातकडि मुखोपाध्याय	समन्वयकर्ता
2.	डॉ० नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
3.	श्री शुभदत्त डोभरा	सहायक सम्पादक
4.	डॉ० अद्वैतावादिनी कौल	सहायक सम्पादक
5.	श्री टी० रजगोपालन	प्रशासन अधिकारी

वाराणसी कार्यालय

6.	डॉ० वेहिन लॉमर	अतैतनिक समन्वयकर्ता
7.	श्री हेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती	प्रधान पण्डित

8.	डॉ० उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसंधान अधिकारी
10.	डॉ० नरसिंह चरण पाण्डा	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	प्रो० वैद्यनाथ सरस्वती	परियोजना निदेशक
2.	सुश्री कृष्णा दत्त	समन्वयकर्ता
3.	डॉ० ए० के० दास	विशेष कार्य अधिकारी
4.	डॉ० मोती कौशल	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० गौतम चटर्जी	सहायक सम्पादक

इम्फाल कार्यालय

7.	श्री अरिबम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वयकर्ता

कला दर्शन प्रभाग

1.	श्री बसन्त कुमार	संयुक्त सचिव
2.	श्री श्यामल कृष्ण सरकार	कार्यक्रम निदेशक
3.	कु० सबीहा ए० जैदी	कार्यक्रम अधिकारी

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रजन	संयुक्त सचिव
2.	श्री एस० एल० टक्कर	निदेशक (ए० एण्ड एफ०)
3.	श्री एस० पी० अग्रवाल	मुख्य लेखा अधिकारी
4.	श्री एस० सी० जैन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
5.	श्री एस० पी० शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
6.	श्री आर० के० गुप्ता	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
7.	श्री पी० एस० ब्रह्मचारी	आन्तरिक लेखा परीक्षा अधिकारी
8.	श्रीमती दामिनी सिंह	सहायक सम्पादक
9.	श्री आर० सी० सहोत्रा	निजी सचिव
10.	श्री पी० पी० माधवन	निजी सचिव
11.	श्री ओ० डी० डोगरा	निजी सचिव
12.	श्री एस० एस० दीवान	निजी सचिव
13.	श्री एम० के० वर्मा	अवर सचिव (एस० डी०)
14.	श्री भरत प्रसाद	अवर सचिव (एस० एण्ड एस०)
15.	श्री सर्वजीत सिंह	अवर सचिव (आई० डी०)

अनुबन्ध-4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/ कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची

शोध अध्येता

कला निधि

संदर्भ पुस्तकालय

1. डॉ० जयश्री — वरिष्ठ अध्येता (मद्रास)
2. श्री जे० मोहन — कनिष्ठ अध्येता (मद्रास)
3. श्री पी० पी० श्रीधर उपाध्याय — कनिष्ठ अध्येता (मद्रास)
4. कु० निशि ओहरी — कनिष्ठ अध्येता (शिमला)

सांस्कृतिक संग्रहालय

5. श्रीमती नवीना जाफा — कनिष्ठ अध्येता

चीनी-भारतीय अध्ययन कक्ष

6. श्रीमती भाग्यलक्ष्मी — कनिष्ठ अध्येता
7. कु० राधा बनर्जी — कनिष्ठ अध्येता
8. श्री बी० आर० दीपक — कनिष्ठ अध्येता

स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन कक्ष

9. श्री थॉमस जे० मैथ्यूस — कनिष्ठ अध्येता

कला कोश

1. डॉ० विजय शंकर शुक्ल — वरिष्ठ अध्येता
2. श्रीमती निहारिका लाल — कनिष्ठ अध्येता
3. श्रीमती अंजु उपाध्याय — कनिष्ठ अध्येता
4. श्री सदानन्द दास — कनिष्ठ अध्येता
5. कु० प्रगति पोपाल — कनिष्ठ अध्येता

जनपद सम्पदा

1. कु० रत्ना भट्टाचार्य — कनिष्ठ अध्येता
2. कु० ऋचा नेगी — कनिष्ठ अध्येता
3. कु० नीता मथुर — कनिष्ठ अध्येता
4. श्री रमाकर पत — कनिष्ठ अध्येता

परामर्शदाता

1. डॉ० ललित मोहन गुजराल
   परामर्शदाता, कला कोश प्रभाग
2. प्रो० माधवन के० पलत
   अवैतनिक परामर्शदाता, स्लाविक एवं मध्य एशियाई अध्ययन
3. प्रो० तान चुन
   अवैतनिक परामर्शदाता, चीनी-भारतीय कक्ष
4. डॉ० मधु खन्ना
   परामर्शदाता, कला कोश प्रभाग
5. श्री वी० रघुराम अय्यर
   जन-सम्पर्क परामर्शदाता, सूत्रधार प्रभाग

अनुबन्ध-5

वर्ष 1993-94 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्रम सं०	शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध" (नई दिल्ली मे हुई)	अप्रैल 19 से 23, 1993	कला निधि
2.	"कलाओं मे सर्वसामान्य क्या है?" (मैसूर मे हुई)	जून 3 से 5 1993	कला कोश
3.	"मन का भविष्य भविष्य का मन" (नई दिल्ली मे हुई)	अगस्त 23 से 26, 1993	कला निधि
4.	"बृहदीश्वर" (मद्रास मे हुई)	अक्तूबर 12 से 15, 1993	जनपद सम्पदा
5.	"शैल कला" पर भूमंडलीय विशेषज्ञो का सम्मेलन (नई दिल्ली मे हुआ)	नवम्बर 29, 1993 से दिसम्बर 7, 1993	जनपद सम्पदा
6.	"ब्रज की सतत सर्जना" (वृन्दावन मे हुई)	जनवरी 4 से 7, 1994	जनपद सम्पदा
7.	"पुथर दीज़ सॉन्थीमर स्मारक संगोष्ठी" (संगोष्ठी का प्रथम भाग पुणे मे हुआ)	फरवरी 21 से 23, 1994	कला कोश
8.	"पुथर दीज़ सॉन्थीमर" स्मारक संगोष्ठी (संगोष्ठी का द्वितीय भाग नई दिल्ली मे हुआ)	फरवरी 24 से 25, 1994	कला कोश

अनुबन्ध-6

वर्ष 1993-94 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्रम सं०	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"दृष्टि-बच्चों की दृष्टि में विश्व" (बाल भवन सोसाइटी के परिसर, नई दिल्ली में आयोजित)	मई 18 से 29 1993	जनपद सम्पदा
2.	"छायांकन के माध्यम से- भारत" हेनरी कार्टियर ब्रेसो द्वारा (एन० सी० पी० ए०, बम्बई में आयोजित)	जुलाई 1 से 31, 1993	कला निधि
3.	"राजा दीन दयाल की विरासत" (माटी घर, इं० गां० रा० क० के, नई दिल्ली में आयोजित)	अक्तूबर 5, 1993 से 7 नवम्बर, 1993	कला निधि
4.	"अवनी से अनन्त तक" -बृहदीश्वर विषयक प्रदर्शनी (मद्रास में आयोजित)	अक्तूबर 12 से 20, 1993	जनपद सम्पदा
5.	"मृग, आदि चित्रण छवियां भारत तथा यूरोप की कला में" (माटीघर, इं० गां० रा० क० के, नई दिल्ली में आयोजित)	7 दिसम्बर, 1993 से 8 जनवरी, 1994	जनपद सम्पदा
6.	"छाया पुतुल"-छाया पुतलिकाओं की प्रदर्शनी (माटी घर, इं० गां० रा० क० के, नई दिल्ली में आयोजित)	2 फरवरी, 1994 से, 13 मार्च, 1994	जनपद सम्पदा
7.	"राजा दीन दयाल की विरासत" (भारत भवन, भोपाल, म० प्र०, में आयोजित)	18 मार्च, 1994 से 30 अप्रैल, 1994	कला निधि

अनुबन्ध-7

मार्च, 1994 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

क. कलातत्त्वकोश ग्रंथमाला

1. कलातत्त्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश, खण्ड-1

यह एक आदर्श (मॉडल) खण्ड है जिसमे भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत संकल्पनाओं अर्थात् *ब्रह्मन्, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण* और *शिल्प* का विवेचन किया गया है। ये पारिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए है। इन शब्दो ने कलाओं के सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनों पक्षो को प्रभावित किया है। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर किए गए इन संकल्पनाओं के विवेचन ने उनके प्रयोग तथा उद्धरणो के माध्यम से उनके बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ० बेट्टिना बॉमर
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ : xxxviii + 189, मूल्य : 200 रुपये

2. कलातत्त्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश, खण्ड-2

इस खण्ड मे "दिक्" और "काल" विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दो का विवेचन शामिल है। इन पारिभाषिक शब्दो का तत्वमीमांसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रो से संबंधित प्राथमिक ग्रंथो की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दो पर लिखे गये निबंधो को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों मे इन संकल्पनाओं के बहु-स्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड मे सम्मिलित किए गए शब्द है: *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, सूत्र, ताल, मान, लय, शून्य, पूर्ण*

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ० बेट्टिना बॉमर
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : xxxii + 478, मूल्य : 450 रुपये

ख. कलामूत्रशास्त्र ग्रंथमाला

3. *मात्रालक्षणम्* (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-1)

यह खण्ड इस कृति की पूर्ण रूप मे उपलब्ध दो पाण्डुलिपियो पर आधारित है और साथ मे इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणिया भी दी गई है। यह खण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि संभवतः ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की सकल्पना पर विचार किया गया है यानी छंदो के लिखित रूप पर स्वराघात तथा बलाघात दर्शाने वाले उच्चारण चिन्ह लगाने तथा उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप मे प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञो, संगीतशास्त्रियो, सामवेद के गायको, यहा तक कि उन शोधकर्ताओ के लिए भी अनिवार्य रूप से पाठनीय है जो वैदिक संगीत के स्वरो तथा उत्तर भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव विषय पर शोधकार्य मे रुचि रखते है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ० वेन हॉवर्ड
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ xvi + 98, मूल्य 150 रुपये

4. *दत्तिलम्* (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-2)

यह "गन्धर्व" का सार-संग्रह है जो वैदिक संगीत का प्रतिरूप या प्रतिपक्ष है और अवैदिक संगीत का मूलाधार है। यह अपनी ही कोटि का एक अनुपम ग्रंथ है और इसलिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भरत के नाट्यशास्त्र मे किए गए इस विषय के प्रतिपादन का निचोड प्रस्तुत करता है और साथ ही एक तरह से उसका अनुपूरक भी है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ० मुकुंद लाठ
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1988, पृष्ठ xvii + 236, मूल्य 300 रुपये

5. *श्री हस्तमुक्तावली* (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं.03)

भारत के विभिन्न भागों में 17 वीं शताब्दी तक संगीत, नृत्य और नाट्य विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी जाती रहीं। 12 वीं से 16 वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियां उभर आईं। सभी भागों में मध्यकालीन ग्रंथ खोजे गए हैं। उनमें से एक है *श्रीहस्तमुक्तावली* जो पूर्वी परम्परा से संबद्ध है। यद्यपि उसके उद्भव के विषय में अस्पष्टता है, उसका पाठ मैथिली तथा असमिया प्रतिलिपियों में पाया गया है। लेखक ने अपने प्रयत्न को "हस्त" (हस्त संकेतों) के विस्तृत विवेचन तक ही सीमित रखा है। डॉ० महेश्वर नियोग ने बड़ी सावधानी से इसके पाठ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है और साथ ही *नाट्यशास्त्र* तथा *संगीतरत्नाकर* की परम्परा से उसकी समानताओं तथा भिन्नताओं को दर्शाया है। यह ग्रंथ उन हस्तसंकेतों की भाषा पर व्यापक प्रकाश डालता है जो सम्भवतः पूर्वी प्रदेशों में अपनाए जाते रहे होंगे।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : डॉ० महेश्वर नियोग

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,

41 यू० ए० बंगलो रोड,

जवाहर नगर, दिल्ली -110007

1992, पृष्ठ xii + 205, मूल्य : 300 रुपये

6. *कविकर्णरसाला, 4 खण्डों में* (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं० 4, 5, 6, 7)

17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बांग्ला भाषा में रचित कविकर्ण के "रसोलापाला" यानी सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 पदों का गायन समकालीन उड़ीसा में व्यापक रूप से प्रचलित है। सत्यनारायण की पूजा और व्रतकथा का वाचन तथा उसके पश्चात् "शिरनी"— खाद्य किस्म के मुस्लिम प्रसाद का वितरण जो "सत्यपीर" (जैसा कि पाला/पदों में सत्यनारायण को कहा गया है) को चढ़ाया जाता है। भारत में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समेकित प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन पालाओं सहित, सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध व्रत कथाओं का उद्गम स्कंद पुराण के रेवा खण्ड में पाया जाता है; परन्तु "सत्यपीर" शब्द किसी भी व्रत कथा में नहीं मिलता, केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। एक मुस्लिम फकीर का अपने सभी पालाओं में उल्लेख करके और "शिरनी" को "प्रसाद" के तौर पर बांट कर कविकर्ण ने धार्मिक तथा कर्मकाण्डीय धरातलों पर सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बहुमूल्य योगदान है। कविकर्ण ने अपने 16 पालाओं को जिस क्रम से रखना चाहा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : डॉ० विष्णुपद पाण्डा

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,

41 यू० ए० बंगलो रोड,

जवाहर नगर, दिल्ली-110007

1992, पृष्ठ ci + 1182, मूल्य 1200 रुपये (4 खंड)

7. बृहद्देशी खण्ड - I (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-8)

संगीत के क्षेत्र मे *बृहद्देशी* पहला उपलब्ध ग्रंथ है जिसमे राग का वर्णन किया गया है, *सारिगम* के विषय मे बताया गया है, *श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना* आदि के बारे मे नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है और *देशी* तथा उसके प्रतिरूप *मार्ग* की सकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है.

यद्यपि पाण्डुलिपि की खोज के अभाव मे, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह सस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से व्यापक है, अध्ययन एव शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। सम्पूर्ण कृति तीन खण्डो मे प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ० प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1992, पृष्ठ : xvii + 194, मूल्य 275 रुपये

8. कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः *(क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-9)*

कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः कालिकापुराण मे से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का सग्रह है, जिसमे अनेक देवीदेवताओं तथा अवतारो का शारीरिक वर्णन किया गया है। उनमे कुछ तो केवल सकल्पनात्मक है, किन्तु कुछ अन्य पत्थर तथा धातु प्रतिमाओं के रूप मे प्रस्तुत किए जाते है।

कालिकापुराण ईसा की नौवीं शताब्दी के अंतिम दशको या दसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल का एक महत्वपूर्ण उप-पुराण है। इसकी रचना प्राचीन असम (कामरूप) मे महादेवी कामाख्या के पुनरुद्धार और उसकी आराधना की कर्मकाण्डीय विधि बताने के लिए की गई थी। *कालिकापुराण* के विभिन्न अध्यायो मे विभिन्न देवीदेवताओं के विषय मे बिखरे हुए श्लोको को प्रत्येक देवता का सपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए देवतानुसार सकलित किया गया है। संस्कृत मूलपाठ के साथ-साथ प्रत्येक श्लोक का अंग्रेजी मे यथार्थ अनुवाद भी दिया गया है।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विश्वनारायण शास्त्री
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
41 यू० ए० बगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
1994, पृष्ठ : xxxiv + 159, मूल्य 250 रुपये

9. बृहद्देशी खण्ड - 2 (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-10)

इस खण्ड मे *बृहद्देशी* के प्रबन्धाध्याय तक का सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ प्रस्तुत किया गया है। यह *जाति* के विवेचन से प्रारम्भ होकर ग्रामराग तथा याष्टिक एव शार्दूल के अनुसार उनकी परिभाषाए देते हुए देशी रागो का अंशिक वर्णन करके प्रबन्धाध्याय के साथ समाप्त हो जाता है। इस खण्ड के मूलपाठ का कलेवर प्रथम खण्ड मे प्रस्तुत पाठ से लगभग दोगुना है। मूलपाठ मे दिए गए इन विषयो के विवेचन की प्रमुख विशेषताए "विमर्श" मे यत्र-तत्र इंगित की गई है। किन्तु ये केवल बिन्दुओं के अनुसार ही स्पष्टीकरण है। तृतीय खण्ड मे जो समालोचना दी जाएगी वही सम्पूर्ण मूल ग्रंथ की विषयवस्तु की समीक्षा प्रस्तुत करेगी। उसमे पूर्ववर्ती तथा परवर्ती ग्रंथो के माध्यम से दृष्टिपात किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : प्रेमलता शर्मा

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोती लाल बनारसीदास पब्लिशर्स, प्रा० लि०,

41 यू० ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

1994, पृष्ठ : xviii + 320, मूल्य : 300 रुपये

10. नर्तननिर्णय खण्ड - *1* (क० मू० शा० ग्रंथमाला सं०-17)

यह भारतीय संगीत एव नृत्य पर, *संगीत रत्नाकर* के बाद रचे जाने वाले ग्रंथो मे से एक है। यह अपने काल (ईसा की 16वीं शताब्दी) की इन कलाओं के सिद्धान्त और व्यवहार दोनो पक्षो की जानकारी के लिए एक प्रामाणिक स्रोत है। यद्यपि यह एक सीधी-सादी और सुस्पष्ट साहित्यिक शैली मे लिखा गया है तथापि यह अपने चित्रोपम वर्णनो के माध्यम से विशद कल्पनाशीलता प्रस्तुत करता है।

एक अद्वितीय क्रमबद्ध योजना के अन्तर्गत, *नर्तननिर्णय* मे उसके प्रथम तीन अध्यायो मे नृत्य के प्रति क्रमश करताल वादक, मृदंगवादक और गायक के योगदान का वर्णन करने के बाद उसके अंतिम तथा सबसे लम्बे चतुर्थ अध्याय मे नर्तक की कला का विवेचन किया गया है। इस अध्याय मे कला से संबंधित वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण तथा मुहावरे के विषय मे ही नहीं, अपितु उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की कुछ नृत्य शैलियो समेत (कुछ को तो वस्तुत निरूपित किया गया है), प्रस्तुति संबंधी परम्पराओं तथा रंगमंच मे भी नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमे बंध नृत्य तथा अनिबंध नृत्य का जो विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है वह परम्परावादी तथा नवाचारवादी दोनो प्रकार के नर्तको के लिए गंभीरतापूर्वक ध्यातव्य है।

इस ग्रंथ का सम्पूर्ण मूल पाठ एक विस्तृत एव विद्वतापूर्ण टीका के साथ 3 खंडो मे प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : आर० सत्यनारायण

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोती लाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,

41 यू० ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

1994, पृष्ठ : xiii + 357, मूल्य : 450 रुपये

ग. कलासमालोचन ग्रंथमाला

11. *राम लेजेंड एण्ड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया*

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 मे लिखित *राम लेजेंड एण्ड राम रिलीफ्स* पुस्तक अपनी पुरातात्वीय सटीकता के कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धान्तो को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात करने के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति मानी गई है। इसमे इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का विवेचन किया गया है।

लेखक विलियम स्टटरहाइम
आमुख : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1989, पृष्ठ xxx + 287 + 230 प्लेटे, मूल्य : 600 रुपये

12. *द थाउजेंड आर्म्स अवलोकितेश्वर*

कला मर्मज्ञो एव इतिहासज्ञो ने अवलोकितेश्वर की सकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल सस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपो मे उपलब्ध है।

प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन
मूलपाठ : डॉ० लोकेश चन्द्र
सह-प्रकाशक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा अभिनव पब्लिकेशन,
ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1988, पृष्ठ viii + 303 प्लेटे, मूल्य 500 रुपये

13. *सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनन्द के० कुमारस्वामी*

डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी की ग्रथमाला के सग्रह ग्रथ लेखक के सशोधनो तथा परिवर्तनो के साथ, विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप मे प्रकाशित किए जाएंगे। इस ग्रथमाला मे उनके द्वारा श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के शिल्प, कलाओ, खनिजो तथा भू-विज्ञान पर लिखी गई सम्पूर्ण सामग्री सम्मिलित की गई है। *सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनन्द कुमारस्वामी* इस ग्रथमाला का पहला पुष्प है। इस खण्ड मे सम्मिलित किए गए पत्र जो पहली बार प्रकाशित हो रहे है, उनसे इस विलक्षण मनीषी के अनमनीय व्यक्तित्व का पता चलता है जो किसी प्रकार के

सिद्धान्तों, विचारधाराओं अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों या वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू-वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न विधाओं का अवगाहन किया है।

सम्पादक : एलडिन मूर जूनियर और राम पी० कुमारस्वामी

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई. एम० सी० ए०,

लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001

1988, पृष्ठ : xxxiii + 479 , मूल्य : 250 रुपये

14. सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ रोमांरोलां

ये पत्र रोमांरोलां की गंभीर कला मर्मज्ञता और अत्यन्त हृदयस्पर्शी अन्तर्वैयक्तिक संवेदनशीलता की सुकोमलता के द्योतक हैं। ये उनकी इस प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हैं कि समग्र विश्व आध्यात्मिक दृष्टि से एक है, मानवता देश व काल की सीमाओं में नहीं बंधी है।

सम्पादक : क्लॉरिस डेर एवं मेरी लौरे प्रेवोस्ट

प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई० एम० सी० ए० लाइब्रेरी बिल्डिंग,

जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001

1990, पृष्ठ : xvii + 139, मूल्य : 125 रुपये

15. वॉट इज सिविलाइजेशन ?

इस खण्ड में प्रकाशित बीस निबंधों में ऐसे आधारभूत प्रश्न पूछे गए हैं जो कुमारस्वामी की अद्वितीय शैली में मर्मवेधी होने के साथ-साथ तीक्ष्ण भी हैं। प्रथम निबन्ध में 'सभ्यता' शब्द के मूल, उसके अर्थ तथा सदर्भ की यूनानी तथा संस्कृत भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है। और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आद्योपान्त विवेचन किया गया है।

लेखक : आनन्द के कुमारस्वामी

प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई० एम० सी० ए० लाइब्रेरी बिल्डिंग,

जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001

1989, पृष्ठ : xi + 193, मूल्य : 250 रुपये

16. इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें रूपंकर कलाएं ही नहीं, साहित्य एवं संगीत भी शामिल है, के आध्यात्मिक महत्व का विवेचन किया गया है। इसमें इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विवेचन करने या उनका विवरण देने के बजाए, विद्वान लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषय-वस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाई, एम० सी० ए०,
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : x + 213 , मूल्य : 300 रुपये

17. टाइम एण्ड ईटर्निटी

ऐस्कोना, स्विटजरलैंड में 1947 में मुद्रित इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अंतिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमाओं में रहते हैं पर हमारी मुक्ति अनन्तता में ही निहित है। सभी धर्म यह अन्तर स्पष्ट करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल शाश्वत या चिरस्थायी क्या है और अनादि अनन्त, क्या है।

लेखक : आनन्द के० कुमारस्वामी
प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा सिलेक्ट बुक्स,
35/3 ब्रिगेड रोड क्रॉस, बंगलौर 560001
1990, पृष्ठ : viii + 107 , मूल्य 110 रुपये

18. टाइम एण्ड ईटर्नल स्पेस

मिथक और पुरातत्वीय खगोल विज्ञान के अध्येता तथा खगोल-भौतिकी में पारंगत होने के नाते, जॉन मैककिम मेलविले काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक रूपकों के माध्यम से पाठक का मार्गदर्शन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप के विषय में प्राचीन ऋषियों को जो अन्तर्दर्शित हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक भौतिकी तथा खगोल विज्ञान ने अपनाया है।

लेखक : जॉन मैककिम मेलविले
प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०, एल-10,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1990, पृष्ठ : x + 112, मूल्य : 150 रुपये

19. प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्वमध्यकालीन मूर्तिकला का विवेचन है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और सौन्दर्यशास्त्रीय पक्षों को न छूते हुए, इसमें अनन्य रूप से संरचना के प्रश्न पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : एलिस बोनर

प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,

41 यू० ए० बंगलो रोड,

जवाहर नगर, दिल्ली-110007

1990, पृष्ठ : xvii + 274 + चित्र, मूल्य : 450 रुपये

20. इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स फॉर द पपेट थिएटर

पुत्तलि रंगमंच के एक सर्वाधिक सृजनशील समकालीन कलामर्मज्ञ द्वारा रचित यह पुस्तक पुत्तलिकला जगत के सौन्दर्यशास्त्र से सम्बंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुत्तलिकला में दिक् और काल का विवेचन एक ही मंच पर कैसे किया जा सकता है जैसा कि ब्रह्माण्ड आकाश और विभिन्न कालक्रमों का विवेचन किया जाता है।

लेखक : माइकेल नेश्के, मार्गरेटा सौरेनसन के सहयोग से

प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०, एल-10,

ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016

1992, पृष्ठ : 176, मूल्य : 300 रुपये

21. एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड स्टाइल

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वविख्यात शैलकृत गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का निश्चयात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रीतिनीति निर्धारित करने और कला के सामान्य इतिहास के प्रति इसके महान योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

लेखक : कारनेल सर्कसन

प्राक्कथन : मुल्कराज आनन्द

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास,

नई दिल्ली-110016

1992, पृष्ठ : 392, + चित्र 270, मूल्य : 750 रुपये

22. अंडरस्टैंडिंग कुचिपुडी

इस शताब्दी मे पुनरुज्जीवित की गई भारतीय नृत्य की विभिन्न शैलियों/विधाओं मे से कुचिपुडी नृत्य शैली का इतिहास सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनो स्तरो पर बहुत ही रोचक है। इसके अतिरिक्त, इस शैली के विकास का इतिहास अभी बन रहा है और इसका समकालीन पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता मंचनीय कलाओं के गतिविज्ञान पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। कुचिपुडी का इतिहास न केवल मंदिर तथा प्रांगण के अन्योन्याश्रय संबंध को दर्शाता है अपितु नगरीय एवं ग्रामीण, नारी एवं पुरुष तथा तमिलनाडु एव आन्ध्र प्रदेश के पारस्परिक संवाद को भी प्रकट करता है।

लेखक गुरु सी०आर० आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
दर्पण एकेडमी ऑफ परफोर्मिंगआर्ट्स, अहमदाबाद
1992, पृष्ठ : 212, मूल्य : 200 रुपये

23. ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुमारस्वामी का योगदान सीमित होते हुए भी गुरु गंभीर था। विशेष रूप से, आदि भारत के असाधारण काष्ठ स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से उनके द्वारा किया गया ग्रंथो एवं स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन अत्यन्त विद्वतपूर्ण था और एक ऐसा मूलाधार था जिसके ऊपर भारत की उत्कृष्ट स्थापत्य परम्परा के सभी परवर्ती इतिहासो का निर्माण किया गया है।

लेखक : आनन्द के० कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू० माइस्तार
प्राक्कथन डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई० एम० सी० ए०
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001
1992, पृष्ठ : xxviii + 151, मूल्य : 400 रुपये

24. रिलीजन एण्ड द एनवाइरनमेंटल क्राइसिस

कुछ वर्ष पहले दिए गए एक स्मरणीय व्याख्यान मे, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के उस संकट के कारण का गंभीर विवेचन किया था जिसने आज विकसित तथा विकासशील दोनो वर्गों के विश्व को अपने चगुल मे फसा लिया है।

लेखक सैयद हुसैन नस्र
प्राक्कथन डॉ० कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास,
नई दिल्ली-110016
1993, पृष्ठ 32, मूल्य : शून्य

25. स्पिरिचुअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट

कुमारस्वामी ने मूलपाठ्य स्रोतों के आधार पर भारतीय शासन सिद्धान्त की व्याख्या की है। समुदाय का कल्याण, आज्ञापालन तथा निष्ठा की लम्बी श्रृंखला पर निर्भर करता है, जैसे प्रजा की राजा तथा पुरोहित दोनों के प्रति भक्ति एवं निष्ठा, राजा की पुरोहित के प्रति निष्ठा और राजराजेश्वर के रूप में धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के प्रति सभी की निष्ठा।

लेखक : आनन्द के० कुमारस्वामी

सम्पादकगण : केशवरत्न एन० अय्यंगार तथा राम पी० कुमारस्वामी

प्राक्कथन : डॉ० कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाई० एम० सी० ए०

लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001

1993, पृष्ठ : x + 127, मूल्य : 200 रुपये

26. यक्षज : एसेज इन दि वाटर कॉस्मोलजी

कुमारस्वामी ने वैदिक, ब्राह्मण तथा उपनिषद् साहित्य के संदर्भ में यक्षों की उत्पत्ति की जांच की और आर्येतर तथा आर्य-पूर्व संस्कृति के अधिक महत्वपूर्ण काल में यक्षों तथा यक्षिणियों की संकल्पना के विषय में स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने के लिए सामग्री एकत्र की। कलात्मक मूलभाव को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने जलीय ब्रह्माण्ड विज्ञान के अनछुए क्षेत्रों का गहराई से अवगाहन किया।

लेखक : आनन्द के० कुमारस्वामी

सम्पादक : पॉल श्रोडर

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बाई० एम० सी० ए०

लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110001

1993, पृष्ठ xvii + 339, मूल्य : 500 रुपये

27. हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र खण्ड-1 (हिन्दी में)

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गुरु, मार्गदर्शक तथा उनसे भी अधिक उनके मित्र थे, आचार्य द्विवेदी अपने सुख-दुःख की बात चतुर्वेदी जी से कहा करते थे। इस पृष्ठभूमि के साथ, ये पत्र द्विवेदी जी के व्यक्तिगत जीवन की कई घटनाओं का चित्रण करते हैं। इनके अतिरिक्त ये पत्र उनकी अभिरुचियों/अरुचियों पर प्रकाश डालते हैं और विभिन्न सांस्कृतिक समस्याओं के विषय में उनके विचारों से अवगत होने का अवसर देते हैं, जो सम्भवतः अन्यत्रों से नहीं मिल सकता।

ये पत्र ऐसे जीवन्त प्रलेख है जो एक साहित्य पण्डित तथा शोधकर्ता दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है। वे आचार्य द्विवेदी के जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

सम्पादक : मुकुन्द द्विवेदी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, 1-बी,
नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली-110002
1994, पृष्ठ 205, मूल्य : 125 रुपये

28. एक्सप्लोरिंग इण्डियाज सैक्रेड आर्ट

यह खण्ड स्टेला क्रैमरिश की चुनी हुई रचनाओं का संग्रह है। स्टेला भारतीय कला तथा उनके धार्मिक सदर्भ की अग्रणी व्याख्याकार थी। यह ग्रंथ स्टेला के समग्र व्यक्तित्व व कृतित्व का नहीं, बल्कि उनके भावबोध तथा सूक्ष्मदृष्टि का रस लेने का एक साधन है।

इस खण्ड मे सगृहीत शोधपत्र क्रैमरिश द्वारा लगभग पचास वर्षों मे लिखे गए थे जो भारतीय कला के सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक मूल्यो पर बल देते है। प्रथम भाग मे कलाओं के सामाजिक तथा धार्मिक सदर्भों की चर्चा की गई है। उसके बाद के लेख मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला तथा चित्रकला के औपचारिक तथा तकनीकी पक्षो का उनके प्रतीकात्मक अर्थ के सदर्भ मे विवेचन करते है। ग्रंथ 150 से भी अधिक चित्रों से सुसज्जित है जो स्टेला की रचनाओं को महत्वपूर्ण दृश्य आयाम प्रदान करते है। इसमें बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा लिखा गया एक जीवनी लेख भी है.

लेखक : स्टेला क्रैमरिश
सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा० लि०,
नई दिल्ली-110001
1994, पृष्ठ : xii + 356, मूल्य : 600 रुपये

29. विद्यापति पदावली

मैथिली भाषा के अत्यन्त लोकप्रिय कवि विद्यापति ठाकुर ने पदों की एक माला की रचना की, जिसमें राधा एवं कृष्ण के नाम से परमात्मा तथा जीवात्मा की प्रणय लीला उन्होंने ग्रामीण भारत की लोकनारी की साधारण गतिविधियों को आध्यात्मिक महत्व प्रदान किया। उनकी राधा एक गाय की गोरी है जो अपने परमप्रभु के प्यार की दीवानी है और उसी से प्रेमपीड़ित करती है। इसी प्रकार कृष्ण भी कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि परमब्रह्म परमात्मा के अवतार है। इस प्रकार एकात्मता तथा समग्रता के सिद्धान्त को औपनिषदिक शैली से प्रतिपादित किया गया है।

कुमारस्वामी ने राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं को अत्यन्त साधारण रीति से व्यक्त करने वाले इन पदों के बहु-स्तरीय प्रतीकवाद को अंग्रेजी भाषा में व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस की और उसके फलस्वरूप इस पुस्तक का निर्माण हुआ।

अपने वर्तमान रूप में इस पुस्तक में पदावली का बंगला तथा देवनागरी लिपियों में मूलपाठ दिया गया है और साथ ही उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : विद्यापति ठाकुर

अनुवादक : आनन्द के० कुमारस्वामी तथा अरुण सेन

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

फ्लैमिंगो बुक्स, 18-19, जी० टी० रोड,

दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110095

1994, पृष्ठ : 360, मूल्य : 550 रुपये

30. थर्टी सॉन्ग्स फ्रॉम पंजाब एण्ड काश्मीर

श्रीमती एलिस कुमारस्वामी ने अपने लेखिका के रूप में भारतीय नाम रतन देवी का प्रयोग करते हुए, ये गीत रिकार्ड किए थे जो आनन्द कुमारस्वामी की प्रस्तावना तथा अनुवाद के साथ इस पुस्तक में छपे हैं। एलिस ने कपूरथला के उस्ताद अब्दुल रहीम से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा था, और आगे चलकर उन्होंने अपने सीखे हुए गीतों में से कुछ को संगीत तथा शब्दों में लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा स्वरबद्ध किए गए तीस गीत ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि शैलियों तथा राग-रागिनियों में रचे गए हैं।

प्रस्तुत खण्ड में उपर्युक्त संकलन को भाग-एक के रूप में शामिल किया गया है और भाग-दो में इन गीतों में *सारेगम* स्वरांकन के साथ देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है और साथ ही राग, ताल तथा मूलपाठ पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में टिप्पणियाँ दी गई हैं। कुशल संगीतज्ञा प्रो० प्रेमलता शर्मा ने बड़ी मेहनत करके भाग-दो का पाठ तैयार किया है।

अनुवादक : रतन देवी तथा आनन्द के० कुमारस्वामी

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०, एल-10,

ग्रीन पार्क एक्सटेंशन,

नई दिल्ली - 110016

1994, पृष्ठ : xv + 177, मूल्य : 500 रुपये

घ. कला दर्शन

31. कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेस्पॉन्सेज: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पीय डिजाइन प्रतियोगिता

इस अद्वितीय स्थापत्य दायित्व अर्थात् एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र मे बनाया जाएगा, इसका डिजाइन तैयार करने के आह्वान के उत्तर मे देश-विदेश से प्राप्त हुए अनेकों प्रारूपों एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक मे प्रस्तुत किया गया है। इस प्रारूप प्रतियोगिता मे 37 देशों से 194 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इस पुस्तक मे कोई 50 प्रस्तावों को चुनकर प्रस्तुत किया गया है, जिनमें पुरस्कार जीतने वाली वे पांच प्रविष्टियां भी है जो विख्यात वास्तुविद् अच्युत पी० कनविंदे द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। यह पुस्तक सभी तरह के छात्रो एवं वास्तुविदों के लिए उपयोगी सूचना का बहुमूल्य स्रोत है।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

मैपिन पब्लिकेशन प्रा० लि०, चिदम्बरम,

अहमदाबाद-380013

1992, पृष्ठ : 184, मूल्य : 1200 रुपये

ङ. छायांकन माध्यम ग्रंथमाला

32. सवारी-ए पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ

फ्लावोनी की यह कृति *सवारी-ए पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ* मानव जाति वर्णन की सामग्री के अनावश्यक बोझ से नही दबी है। यह जनसामान्य मे प्रचलित परम्पराओं के विषय मे जिन्हे, हम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भाषा मे 'लोक परम्परा' कहते है, एक बहुमूल्य परिचायक पुस्तक का काम देती है। एक चित्रात्मक पुस्तक के रूप मे यह एक उच्चकोटि की कला-कृति है और एक वर्णनात्मक सामग्री के रूप मे जीवन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमे लेखक ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि के बल पर विषय की पूरी जानकारी दी है, इसे पढने मे आनन्द आता है।

मूलपाठ एव छाया-चित्र : फ्रांसिस्को डि ओराजी फ्लावोनी

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

बजबाली प्रिंटर्स प्रा० लि०, ई-46/11,

ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II,

नई दिल्ली-110020

1990 पृष्ठ 31 + 100 प्लेटे + ग्रंथ सूची, मूल्य : 575 रुपये

च. आकाश/अंतरिक्ष की संकल्पना

33. कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस : एनशंट एण्ड मॉडर्न

इस ग्रंथ में अन्तर्विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारियां दी गई है जिससे यह उन लोगों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया है जो चिन्तन-मनन का आन्तरिक जीवन और गतिशीलता तथा सक्रियता का बाह्य जीवन जीते हैं। इस द्विविध जीवन का अन्योन्य संबंध और संपूर्णता का मूल विषय ही इस खण्ड में सम्मिलित किए गए बहु-विषयोन्मुख निबंधों की मूलभूत एकता का आधार है।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन

सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

1991, पृष्ठ : XXIV + 665 + प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपये

छ. शैलकला ग्रंथमाला

34. रॉक आर्ट इन द ओल्ड वर्ल्ड

इस पुस्तक में कुछ ऐसे चुने हुए शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं जो 1988 में डारविन (आस्ट्रेलिया) में आयोजित विश्व-शैल-कला महासम्मेलन (कांग्रेस) में प्रस्तुत किए गए थे। पहली बार, अफ्रीका, एशिया, तथा यूरोप के महाद्वीपों के इतने व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों की शैल-कला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन में समाहित शोधपत्र इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन केवल पुरातत्व की दृष्टि से ही नहीं अपितु मानव जाति विज्ञान तथा जीवन शैली अध्ययन के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका व्यापक परिदृश्य यह दर्शाता है कि वैसे तो शैल कला अनुसंधान का भी एक इतिहास है पर एक नई ज्ञान विधा के रूप में यह विकास की विभिन्न सरणियों की खोज में संलग्न है। बहुत से शोध पत्रों से भारत में हुए व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह अद्वितीय खण्ड इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैल कला अध्ययन संबंधी श्रृंखला की पहली कड़ी है। यह मानव इतिहास तथा कला में रुचि रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लिए भी उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : माइकेल लोरब्लान्शे

प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वितरक : यू० बी० एस० पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स लि०, नई दिल्ली

1992, पृष्ठ : XXXII + 540, मूल्य 750 रुपये, 50 डालर (विदेश में)

35. डीयर इन रॉक आर्ट आफ इंडिया एण्ड यूरोप

इस पुस्तक मे भारत तथा यूरोप की शैल-कला मे मृग के स्थान का उल्लेख करते हुए आगे चलकर ऐतिहासिक काल में उसके चित्रण से अवगत कराया गया है।

पुस्तक के भारत संबंधी भाग मे अनेक स्थलो से प्राप्त बहुमूल्य साक्ष्य को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के जीवन मे तथा उन्मुक्त प्रकृति में मृग के गंभीर एव संवेदनशील पक्ष का जो मार्मिक चित्रण भारतीय साहित्य परम्परा मे उपलब्ध है उसकी एक झलक दिखाई गई है। यूरोप संबंधी भाग मे मृग के विषय में घड़ी गई जन्तुकथाओं, मिथको तथा दन्तकथाओं के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि यूरोप के किन-किन भागों मे मृगों की कौन-कौन सी प्रजातियां पाई जाती है।

सम्पादक : गियाकामो कैमुरी, ऐजलो फोसाती तथा यशोधर मठपाल
(प्रैब्रिएला गद्दी तथा गियानेट्टा मुसितेली के योगदान के साथ)
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
वितरक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा० लि०,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेशन,
नई दिल्ली-110016
1993, पृष्ठ : xvi + 170 प्लेटे, मूल्य : 450 रुपये

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सचित्र पोस्ट कार्डों की सूची (1994 तक)

1. इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1988, मूल्य : 10 रुपये प्रति सेट
2. हिमालय पर्वत मालाओं की दृश्यावली, 1988, मूल्य : 10 रुपये प्रति सेट
3. भीमबेटका के शैल चित्र, 1988, मूल्य : 10 रुपये प्रति सेट
4. बूनर की चित्रकारियां, 1988, मूल्य : 10 रुपये प्रति सेट
5. दि इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1990, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
6. दि बर्ड्स ऑफ पैराडाइज, 1990, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
7. दि कैलिको पेंटिंग एण्ड प्रिंटिंग, 1990, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
8. भारत मे प्राचीन स्थापत्य कला, 1990, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
9. दि आर्ट ऑफ दुनहुआंग ग्रोटोज, 1992, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
10. राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्र, 1993, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
11. भीमबेटका की शैल-कला, 1993, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट
12. चीन के मार्ग से भारत की सुरम्य यात्रा, 1993, मूल्य : 25 रुपये प्रति सेट

विवरणिकाएं, रिपोर्टें, कैटलॉग, फोल्डर एवं पुस्तिकाएं

विवरणिकाएं

1. इन्दिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दि आर्ट्स (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र)
2. कला निधि
3. कला कोश
4. जनपद सम्पदा

रिपोर्टें

1. वार्षिक रिपोर्ट 1987-88
2. वार्षिक लेखे 1987-88
3. वार्षिक रिपोर्ट 1988-89
4. वार्षिक लेखे 1988-89
5. वार्षिक रिपोर्ट 1989-90
6. वार्षिक लेखे 1989-90
7. वार्षिक रिपोर्ट 1990-91
8. वार्षिक लेखे 1990-91
9. वार्षिक रिपोर्ट 1991-92
10. वार्षिक लेखे 1991-92

कैटलॉग

1. खम्: स्पेस एण्ड दि एक्ट ऑफ स्पेस, 1986
2. काल : ए मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन ऑन टाइम, 1990-91
3. मोगाओ ग्रोट्टोज दुनहुआंग : बुद्धिस्त केव पेंटिंग्स फ्रॉम वाइना, 1991
4. प्रकृति : मैन इन हारमनी विद एलीमेंट्स, 1993

फोल्डर

1. आई० जी० एन० सी० ए० फोल्डर्स
2. आई० जी० एन० सी० ए० दि कॉन्सेप्ट एण्ड दि पब्लिकेशन्स

पुस्तिकाएं

1. गाइड एण्ड ऑर्गेनाइजेशन ऑफ फंक्शन्स
2. स्कीम फॉर ग्रांट ऑफ रिसर्च फेलोशिप्स

अनुबन्ध-8

फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची

नृत्य/अभिनय

शास्त्रीय परम्पराएं

1. **भरतनाट्यम**

गीत गोविन्द	:	नृत्यनाटिका, रुक्मिणी देवी अरुण्डेल द्वारा यथा प्रकल्पित एवं निरूपित, और कला क्षेत्र मद्रास के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत। निर्देशक : एस० जयन्ती
2. **मोहिनीअट्टम**	:	कलामण्डलम् कल्याणिकुट्टी अम्मा द्वारा। निर्देशक : सरस्वती स्वामिनाथन् (निर्माणोत्तर : विजयलक्ष्मी)
3. **कूडियअट्टम**	:	गुरु अम्मनूर माधव चकियार द्वारा (प्रलेखन में तीन "वेशम्" भी सम्मिलित है)। निर्देशक : सरस्वती स्वामिनाथन्
4. **अभिनय**	:	*अध्यात्मरामायण* के श्लोकों से संबंधित, माणिक्यम्मा शारिदे द्वारा। निर्देशक : डॉ० प्रेमलता शर्मा
5. **अभिनयदर्पण**	:	नन्दिकेश्वर का *अभिनय दर्पण* जो एक बीजग्रंथ है, उसके मूलपाठ का आचार्य पार्वती कुमार द्वारा प्रतिपादन। निर्देशक : सरस्वती स्वामिनाथन्

6. **मणिपुरी** :

(i) लाई हरौबा	:	फिल्म निर्देशक : अरिबाम श्याम शर्मा
(ii) गीतगोविन्द	:	गुरु अगुयी सिंह द्वारा निरूपित निर्देशक : अरिबाम श्याम शर्मा
(iii) देवी धुम्मल	:	पुग पर एक सामूहिक प्रस्तुति निर्देशक : अरिबाम श्याम शर्मा

गुरु-शिष्य परम्परा (प्रशिक्षण विधि)

7. **कथकलि**	:	कथकलि नृत्य के कुछ विख्यात गुरुओं की प्रशिक्षण तथा शिक्षण विधियों का गहराई से प्रलेखन निर्देशक : एन० राधाकृष्णन
8. **भरतनाट्यम्**	:	गुरु सुब्बराय पिल्लै पण्डनल्लूर की भरतनाट्यम नृत्य शैली निर्देशक : सरस्वती स्वामिनाथन्
9. **महान् गुरुजन** **संगीत कलानिधि टी० वृन्दा**		धनमाल परिवार की यह प्रतिमा अब 80 वर्ष से भी अधिक आयु की हो गई है। (इनका संगीत वीडियो तथा ऑडियो दोनों रूपों में रेकार्ड किया गया) निर्देशक : रंगनायकी अय्यगार
10. **मणिपुर के नट संकीर्तन के गुरुजन**		निर्देशक : अरियाम श्याम शर्मा

जीवन शैली कर्मकाण्ड प्रस्तुति

11. **वाङ्गला**	:	गारो उत्सव पर एक फिल्म (16 मि० मी०) निर्देशक : बप्पा राय
12. **लामा लोगों के छम नृत्य**	:	इनमें लामा समुदाय के धार्मिक पूजापाठ और कलात्मक अभिव्यक्तियों का सामंजस्य प्रस्तुत किया गया है, इसमें भाग लेने वाले कलाकार अरुणाचल प्रदेश के तुशीलुम्पो मठ से संबंधित थे।

गौरव ग्रंथ/पुरातन महाकाव्य

13. *रामायण,* (स्व०) शांतिवर्द्धन द्वारा निरूपित और भोपाल के लिटल बैले ट्रुप के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत।

14. *वाल्मीकि रामायण,* के० एस० श्रीनिवासन द्वारा

15. *रामायण भारत में तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में,* के० एस० श्रीनिवासन द्वारा
(इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा दोनों फिल्में प्राप्त कर ली गईं)

अन्य

16. *अष्टपदी*, टी० एन० जानार्दनन द्वारा

17. सुप्रसिद्ध कवियित्री डॉ० कैथलीन रैने के साथ डॉ० कपिला वात्स्यायन की भेट वार्त्ता (डॉ० रैने ने एक अलग कार्यक्रम मे अपनी काव्य रचनाएं भी पढ़ीं)।

प्राप्तियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निम्नलिखित फिल्मे प्राप्त की गई :

1. *किंग खण्डोबा - एक भारतीय लोक देवता के जीवन के दृश्य*, गुंथर सॅन्थीमर एव गुंतर अनबिशीड द्वारा निर्मित

2. *दि जर्नी ऑफ दि एटकर धागर्ल*, हेनेग स्टेगमूलर एवं मैरी जोस द्वारा निर्मित

3. *वारि - एन इंडियन पिलग्रिमेज*, हेनिग स्टेगमूलर एव गुथर सॉन्थीमर द्वारा निर्मित

4. *किंग खण्डोबाज लॉटिंग एक्सपिडीशन* - गुथर सॉन्थीमर एवं हेनिंग स्टेगमूलर द्वारा निर्मित

5. *दि रिक्लूज* - डागर बंधुओ पर एक फिल्म, अरविन्द सिन्हा द्वारा निर्मित

6. *कॉस्मिक डान्स ऑफ शिव*- देबेन भट्टाचार्य द्वारा निर्मित

7. *दुनहुआंग केव्ज* - लोकेश चन्द्र से प्राप्त

8. *ईकोज फ्रॉम टिबेट* - देबेन भट्टाचार्य द्वारा निर्मित

9. *टुवार्ड्स ऑफ एन्ड फ्रीडम* - हैमन्ती बनर्जी द्वारा निर्मित

10. *जीसस एण्ड दि फिशरमैन* - देबेन भट्टाचार्य द्वारा निर्मित

अनुबन्ध-9

अप्रैल, 1993 से 31 मार्च, 1994 तक हुई घटनाओं की तालिका

क्रम सं०	आयोजित वार्ताएं/समारोह	वक्ता का नाम	दिनांक
1.	"विश्व में अपने स्थान की तलाश में मानव : कुमाऊं से दो महापाषाण"	डॉ० एम० वत्सुची	12.4.1993
2.	"भारतीय फारसी साहित्य के विकास में भारत का योगदान"	प्रो० ए० डब्लू० अजहर	16.4.1993
3.	"सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध" विषय पर विषेषज्ञों की बैठक का उद्घाटन पत्र	—	19.4.1993
4.	"दारुमा-जापानी संस्कृति के एक भारतीय बौद्ध भिक्षुक की कहानी"	प्रो० एस० बी० वर्मा	26.4.1993
5.	"धर्म एक विचार प्रणाली के रूप में : सभ्यता के निर्माण में उसकी भूमिका"	डॉ० डब्ल्यू नेरवू	11.5.1993
6.	"आस्ट्रेलिया में शैल कला के विश्लेषण की संरचनात्मक पद्धतियां"	डॉ० एम० जे० मोरवुड	21.5.1993
7.	"पंजाबी सूफी कविगण"	श्री राकेश पुरि	24.5.1993
8.	"विशिष्टाद्वैत में दर्शन" कला कोश स्थापना दिवस (गुरु पूर्णिमा) समारोह पर	डा० ए० सम्पतनारायण	2.7.1993

9.	"मध्यकाल में भारत तथा मध्य एशिया की वास्तुकला में परस्पर प्रभाव प्रक्रिया"	डॉ० डब्लू० एच० सिद्दीकी	5.7.1993
10.	"पूर्वी भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया की नवप्रस्तर कालीन संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन"	डॉ० डी० पी० शर्मा	13.7.1993
11.	"लोक कढ़ाई कला में वर्णन : एक स्थिति अध्ययन"	श्रीमती सी० एस० गुप्त	19.7.1993
12.	"भरतमुनि के निबंध ग्रंथ बृहद्देशी का प्राचीन भारतीय संगीत विचारधारा में योगदान"	डॉ० प्रेमलता शर्मा	23.7.1993
13.	"ईस्ट इंडिया कंपनी और तमिलनाडु के चित्रकार 1600-1800 ईस्वी"	डॉ० आई० जॉब थॉमस	26.7.1993
14.	"भारतीय नृत्य की पाठ्य परम्परा"	डॉ० आर० सत्यनारायण	27.7.1993
15.	"एक बटा तीन और भारतीय संस्कृति" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक व्याख्यान	महामहिम प्रो० मारिया विस्टोकर वायस्की	19.8.1993
16.	"तृतीय दीन कला महोत्सव, 1992"	कु० कोमला वरदन	27.8.1993
17.	"भारतवंशी दक्षिण अफ्रीका वासियों का वर्तमान प्रतिष्ठा-स्तर और भावी संभावनाएं"	श्री जे० आर० त्रिवेदी	16.9.1993
18.	"भारतीय कला तथा संस्कृति में अध्यात्म एवं अभिव्यक्ति"	डॉ० ज्योतीन्द्र जैन	29.9.1993
19.	"कालरिपायट्टु में देह, अभ्यास, शक्ति तथा आत्मा का प्रशिक्षण"	प्रो० जे० पेरेल्लि	23.9.1993
20.	"सत्य की प्रतीति"	इग्नू ओपन थियेटर, नई दिल्ली	2.10.1993

21.	''सत्य की प्रतिमाएं''	इशारा पपेट थियेटर, नई दिल्ली	5.10.1993
22.	''इंडोनेशियाई संस्कृति में भारतीय प्रभाव''	डॉ० एडि सेद्यावती	6.10.1993
23.	''संगीत रंगमंच से परे''	प्रो० डेनिस कॉन्स्टैंट	7.10.1993
24.	''बर्मा के बड़े पैगोडाओं के भीतर और आसपास''	प्रो० रजीत राय चौधरी	18.10.1993
25.	''उड़ीसा की नियामगिरी पहाड़ियों के डूंगरिया कोंध लोगों की संस्कृति एवं विकास''	डॉ० (कु०) उषालि अपराजिता	19.10.1993
26.	''भारतीय सभ्यता : संरचना एवं परिवर्तन'' विषय पर प्रो० एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान	डॉ० सुरजीत चन्द्र सिन्हा	28.10.1993
27.	''भारतीय सभ्यता : संरचना एवं परिवर्तन'' पर प्रो० एन० के० बोस स्मारक व्याख्यान	डॉ० सुरजीत चन्द्र सिन्हा	29.10.1993
28.	''कोटा (राजस्थान) में वल्लभ सम्प्रदाय की परम्पराओं में दृश्य संस्कृति तथा अनुष्ठान पद्धति''	डॉ० बुलमैन टेलर	5.11.1993
29.	''दक्षिण भारत में शैवागम''	डॉ० पी० एस० फिलियोजा	8.12.1993
30.	''रामायण का थाई साहित्य एवं थाई कला पर प्रभाव''	प्रो० श्रीसुरंग चूलथुर्पया	10.12.1993
31.	''बालि की मुखौटा नाट्य कला : मुखौटे'' पाठ और विश्वव्यवस्था पर निरूपणात्मक व्याख्यान	श्री जॉन एमिग	14.12.1993

32.	"राजा रवि वर्मा पर पुनर्विचार"	कु० गीता कपूर	17.12.1993
33.	"भारत में स्त्री रचित साहित्य"	डॉ० के० सच्चिदानंदन	20.12.1993
34.	"प्रतिमा विज्ञान के संदर्भ में बौद्ध भक्ति स्तोत्र"	कु० रत्नावतु	24.12.1993
35.	"विलियम ब्लेक : इंग्लैंड की भविष्य सूचक वाणी"	डॉ० कैथलीन रैने	7.1.1994
36.	"एक समय की बात है"— भारतीय कला में दृश्य व्याख्यान की एक संरचना पर	प्रो० विद्या देहेजिया	10.1.1994
37.	"प्रह्लाद नाटक की ओडीसी रंगमंचीय परम्परा"	प्रो० जॉन एलिंग	12.1.1994
38.	"मानव तथा प्रकृति के बीच संबंध जैसा कि उसके द्वारा निर्मित पर्यावरण में अभिव्यक्त है।"	कु० मीना मदान	18.1.1994
39.	"इंडोनेशिया में छाया रंगमंच की परम्पराएं"	श्री हल्लन सुधीरोहुसोडो	2.2.1994
40.	"कोरियाई संस्कृति पर भारतीय प्रभाव एक बौद्ध परिप्रेक्ष्य"	प्रो० ब्योग होन चोइं	4.2.1994
41.	"भारत में छाया रंगमंच की परम्पराएं"	श्री जीवन पानी	7.2.1994
42.	"अश्ममुद्रण और भारतीय पुस्तक रूपांकन पर उसका प्रभाव"	श्री जी० डब्लू० शॉ	10.2.1994
43.	"भारत में अनित्यता का भाव और बौद्ध कला के कुछ पक्ष"	प्रो० दीपा नाग	14.2.1994

44.	"मध्य जावा के चण्डी प्रम्बानन मे रामायण का चित्रण"	कु० मालिनी शुक्ला	17.2.1994
45.	"तांत्रिक परम्पराएं-वैदिक कुल की वैध सन्तान"	प्रो० नृपेन्द्र सराफ	1.3.1994
46.	"प्राचीन तिब्बती आध्यात्मिक परम्परा में आद्य/बीजभूत योग द्वारा प्रकृति से सामञ्जस्य"	प्रो० नम्मखाई नो रिनपोचे	4.3.1994
47.	"डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी का भाषाविज्ञान के विषय मे मत" डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी स्मृति भाषण	प्रो० शिवेन्द्र किशोर वर्मा	8.3.1993
48.	"भारत मे बहु-भाषावाद के विषय मे एक समाजवैज्ञानिक की दृष्टि" डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी स्मृति भाषण	प्रो० शिवेन्द्र किशोर वर्मा	9.3.1994
49.	"विक्टोरिया मेमोरियल मे पुनरुद्धार कार्य" पर वार्ता	श्री रूपर्ट फेदरस्टोन	11.3.1994
50.	"पालि की प्राचीनतम पाण्डुलिपि"	प्रो० गुस्ताव रॉथ	17.3.1994
51.	"मानव स्वास्थ्य के लिए जड़ी बूटियां"	प्रो० रंजीत राय चौधरी	21-22.3.1994
52.	"भ्रमरगीत" संगीत : कथक :	प्रो० प्रेमलता शर्मा डॉ० रजना श्रीवास्तव	23.3.1994
53.	"वैकुण्ठ एवं विष्टलप"	प्रो० टी० एस० गैवरवेल	30.3.1994

अनुबन्ध-10

विभिन्न सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गए अधिकारियों का ब्यौरा

भाग लेने वाले का नाम	प्रयोजन एवं स्थान का नाम	अवधि
श्री एम० सी० जोशी, सदस्य सचिव	हांगकांग में हांगकांग विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 34 वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस (एशियाई एवं उत्तर अफ्रीका अध्ययन) में भाग लिया।	अगस्त, 21 से 28, 1993
	"ब्रज की सतत सर्जना" विषय पर वृन्दावन में श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृन्दावन तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।	जनवरी 3 से 4, 1994
	"कौशाम्बी की कला" विषय पर इलाहाबाद में इलाहाबाद म्यूजियम सोसाइटी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।	फरवरी 18 से 22, 1994
	माया देवी मंदिर जीर्णोद्धार परियोजना के संबंध में लुम्बिनी (नेपाल) में आयोजित विशेषज्ञों की बैठक में भाग लिया।	फरवरी 24 से 28, 1994
प्रो० वी० एन० सरस्वती, परियोजना निदेशक	यूनेस्को के तत्वावधान में "शांति की संस्कृति में धर्मों का योगदान" विषय पर बार्सिलोना में आयोजित विशेषज्ञ समिति में भाग लिया।	अप्रैल 13 से 18, 1993
डॉ० कनक मीतल अनुसंधान अधिकारी	बंगलौर में आयोजित डेटाबेस उत्पादन तथा वितरण-संसाधन, प्रौद्योगिकी तथा प्रबंध विषयक प्रदर्शनी (इन्फोटेक्स' 93) तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।	नवम्बर 27 से दिसम्बर 23, 1993
श्री आत्म प्रकाश गक्खड़, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष	59 वीं "इफ्ला" परिषद तथा साधारण सम्मेलन, बार्सिलोना।	अगस्त 22 से 28, 1994
श्री बचन कुमार, कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी	डोगसन संस्कृति के अध्ययन के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए सी० आई० पी० कार्यक्रम के अंतर्गत विस्कान्सन और इलीनोइ, अमेरिका का दौरा।	अगस्त 9 से सितम्बर 3,1994

अनुबन्ध-11

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की आचार्या डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा वर्ष 1993-94 के दौरान भाग लिए गए सम्मेलनों/संगोष्ठियों की सूची

अप्रैल 19-23, 1993	"सांस्कृतिक पहचान और विकास का पारस्परिक संबंध" विषय पर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली मे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विशेषज्ञ समिति मे भाग लिया।
अप्रैल 26-30, 1993	पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया मे सांस्कृतिक विकास के लिए विश्व दशक के कार्यक्रम के अंतर्गत, यूनेस्को के विएतनाम राष्ट्रीय आयोग, हनोई मे, विकास परियोजनाओं एवं नियोजन मे सांस्कृतिक घटक सम्मिलित करने की विधियो पर आयोजित उप-क्षेत्रीय बैठक मे भाग लिया।
जून 2-6, 1993	"कलाओ में सर्वसामान्य क्या है"— विषय पर ध्वन्यालोक, मैसूर मे आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।
सितम्बर 25 से अक्तूबर 2, 1993	कार्टाजेना (कोलम्बिया) के कन्वेशन सेंटर मे हुई सदर्थ चिन्तन मंच की दूसरी बैठक मे भाग लिया।
अक्तूबर 11-15, 1993	मद्रास मे "बृहदीश्वर स्मारक" विषय पर आयोजित संगोष्ठी मे भाग लिया।
नवम्बर 16-25, 1993	लन्दन मे 17 वा नेहरू स्मारक व्याख्यान दिया।
दिसम्बर 7-9, 1993	मद्रास मे "कलानुभवमञ्जरी" संगोष्ठी मे भाग लिया।
जनवरी 4-7, 1994	"ब्रज की सतत सर्जना" विषय पर वृन्दावन, मथुरा मे आयोजित गोष्ठी मे भाग लिया।
फरवरी 25-26, 1994	"मानवता चौराहे पर : सज्ञान/चेतना का विकास" विषय पर औरोविले, तमिलनाडु मे आयोजित संगोष्ठी मे भाग लिया।
मार्च 16-19, 1994	केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम, केरल मे प्रो० एन० कृष्ण पिल्लै स्मारक व्याख्यान दिया।